बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जादू की हकीकत

कुरआन व सुन्नत की रोशनी में

और इसका इलाज

तालीफ

वहीद बिन अब्दुल सलाम बाली

हिन्दी तर्जुमा

ऐजाज खान

जादू की हकीकत

कुरआन व सुन्नत की रोशनी में

और

इसका इलाज

तालीफ :

वहीद बिन अब्दुल सलाम बाली (मिस्र)

हिन्दी तर्जुमा :

ऐजाज खान, सीकर

नाम किताब

जादू की हकीकत कुरआन व सुन्नत की रोशनी में और इसका इलाज

☆

हिन्दी तर्जुमाः

ऐजाज खान

☆

प्रिन्टर्स

जे. एन. कम्प्यूटराईज्ड प्रिन्टर्स, 2 नम्बर डिस्पेन्सरी, देवीपुरा रोड (सीकर)

☆

कम्पोजिंग

सैयद मुश्ताक अली

☆

तादाद

1000

☆

फहरिस्त

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ، مَنْ يَهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللّٰهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا﴾ - ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

तर्जुमा : बिलाशुबा सब तारीफें अल्लाह के लिए है, हम उसकी तारीफ करते है, उससे मदद मांगते है जिसे अल्लाह राह दिखाये, उसे कोई गुमराह नही कर सकता और जिसे अपने दर से धुतकार दे, उसके लिए कोई रहबर नही हो सकता और मै गवाही देता हूँ कि मअबूदे बरहक सिर्फ अल्लाह तआला है, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नही और मै गवाही देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल है। हम्दो सलात के बाद यकीनन तमाम बातों से बहतर बात अल्लाह तआला की किताब है और तमाम तरीकों से बेहतर तरीका मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है और तमाम कामों से बत्तरीन काम वोह है जो (अल्लाह के दीन में)

अपनी तरफ से निकाले जायें। और हर बिदअत गुमराही है।"

(मुस्लिम, हदीस नं. 867)

"ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो। जैसा के उससे डरने का हक है और तुम्हें मौत न आये मगर, इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।"

"ऐ लोगों! अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और (फिर) उस जान से उसकी बीवी को बनाया और (फिर) उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें पैदा की और उन्हें (जमीन पर) फैलाया। अल्लाह से डरते रहो जिसके जरीए (जिसके नाम पर) तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और रिश्तों (को कता करने) से डरों (बचो)। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।"

(सूरा निसाअ पारा 4 आयत नं. 1)

"ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और ऐसी बात कहो जो मोहकम (सीधी और सच्ची) हो। अल्लाह तुम्हारे अमाल की इस्लाह और तुम्हारे गुनाहों को मआफ फरमायेगा और जिस शख्स ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल की।"

(सूरा अहजाब पारा 22, आयत नं. 70, 71)

☆☆☆☆

☆☆☆

☆☆

☆

मुकदमा - पैश लफ्ज

बेशक तमाम खुबियाँ अल्लाह तआला ही के लिए हैं, उसी की हम तारीफ करते हैं और उसी से हिदायत मांगते हैं। और अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, अपने नफसों के शर से और अपने अअमाल के बूरे नतीजों से। जिनको अल्लाह हिदायत दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और वोह जिसे गुमराह कर दे उसको कोई हिदायत नहीं दे सकता। और इस बात की गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवाय कोई भी नहीं, वोह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं इसी बात की गवाही देता हूँ के बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बन्दे और रसूल हैं।

कायनात में सबसे सच्ची चीज अल्लाह तआला की किताब और सब से बेहतरीन तरीका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीका है। और बदतरीन काम दीन के अन्दर नये नये तरीके दाखिल करना है। और हर ऐसा काम बिदअत और हर बिदअत गुमराही है और गुमराही जहन्नम में ले जाती है।

चूंकि जादू एक अहम मौजूअ है जिससे मुताल्लिक औलमा पर यह जिम्मेदारी होती है के वोह इसमें तहकीक करें और अपने नोक–कलम को हरकत दें, इसलिए के यह उन कामों में से एक है जो अमूमन तमाम समाज पर आन पड़ती हैं। इसलिए के पैशावर जादूगर हजरात दिन रात फसाद और तबाही के लिये लगातार काम करते रहते हैं, और वोह भी सिर्फ चन्द सिक्कों की खातिर जो उन्हें कुछ बदनियत किस्म के लोगों से हासिल होती हैं। और यह वोह बुरे लोग हैं जो अपने मुसलमान भाईयों से हसद (जलन) रखते हैं और अपने दिल को इस बात से सकुन पहुँचाते हैं के उनके मुस्लिम भाई जादू के असर से किसी ना किसी अजाब में गिरफ्तार रहें और परेशान होते रहें।

तमाम मुस्लिम अहले इल्म पर यह जरूरी है के वोह ना सिर्फ लोगों

को जादू के खतरात से और उसके नुकसान से आगाह करे बल्कि उन्हें इस के दूर करने के लिए इस्लामी नुस्खों से भी आगाह करें ताके लोग मजबूरन जादू के काट के लिए जादूगरों की तरफ न जायें और ना ही उन से किसी मर्ज (बीमारी) का इलाज करवायें।

लीजिये मेरी यह किताब "शमशीर बराँ बरगर्दन जादूगरां" हाजिर खिदमत है।

इससे मेरा मकसद सिर्फ ये हे के मुसलमान भाई जादू के इलाज के लिए इस्लामी तरीका मालूम हो सके और इसके अलावा हसद (जलन) बुरी नजर का इलाज भी उन्हें मालूम हो जाये ताके लोग जादूगरों और दज्जालों के जाल में ना फसें और ये वोह जाल है जिन्होंने लोगों के अकाइद और उनकी इबादत की बर्बादी का वादा कर रखा है।

इस किताब को मैंने आठ अलग अलग हिस्सो में बांटा है।

पहला बाब:

जादू की तारीफ–

1. अरबी में जादू किसे कहते हैं?
2. इस्लामी जबान में जादू के मायने।
3. जादू के कुछ काम शैतान के करीब कर देते हैं।

दूसरा बाब :

कुरआन व सुन्नत में जादू की हकीकत (इस बाब में कुछ मौजूआत पर बहस की गई है।

1. जिन्नों के मौजूद होने पर कुरआन व हदीस के दलाईल।
2. जादू के वजूद पर कुरआन और हदीस के दलाईल।
3. जादू के बारे में आलिमों की राय।

तीसरा बाब :

जादू की किस्में :इस बाब में कुछ मौजूआत पर बहस की गई है।

1. इमाम राजी के नजदीक जादू की किस्में

2. इमाम रागिब असफहानी के नजदीक जादू की किस्में।

3. जादू के अकसाम की वजाहत

चौथा बाब:

जादू के जरीये जिन्न को किस तरह बुलाया जाता है? इसमें आठ तरीकों को खोल कर बताया गया है। जिन्हें जादूगर मरदूद जिन्नों को बुलाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। निज उन तरीकों को पूरी तौर पर बयान नहीं किया गया ताके पढ़ने वाले तजुरबे की गलती ना कर बैठे।

पांचवा बाब:

इस्लामी कानून में अहकामात जादू (इसमें मैंने कुछ मौजूआत पर बातें की है।)

1. इस्लाम में जादू का सीखना कैसा है?

2. इस्लाम में जादू की सजा क्या है?

3. अहले किताब (यहुद व ईसाई) के यहां जादू की सजा।

4. क्या जादू को जादू के जरीये काटा जा सकता है?

5. जादू मोअज्जजे (नबी के पास होने वाली निशानियाँ) और करामात में फर्क।

छटा बाब:

जादू का तोड़! इसमें मैंने कुछ बातें जिक्र की हैं।

1. आपस में जुदाई का जादू! इस का तरीका कार, इसको तोड़ने का तरीका और इसके इलाज के अमली नमूनें।
2. ख्यालात का जादू! इसका तरीके कार, इसको तोड़ने का तरीका और इसके इलाज के नमूने।
3. जादू के जरीये पागल करना! इसका तरीका और इलाज के अमली नमूने।

4. मुहब्बत का जादू! इसके तरीके, इसके इलाज और अमली नमूने।
5. किसी को गायब करने का जादू! इसके तरीके और इलाज।
6. सिर्फ आवाज आने का जादू। इसके तरीके और इलाज।
7. बीमारी में डालने का जादू। इसके तरीके और इलाज की अमली नमूने।
8. नकसीर का जादू! अमली नमूने और इलाज।
9. शादी को तोड़ने का जादू! इसके इलाज का तरीका और इसके अमली नमूने।

सातवां बाबः

1. रब्त की किस्में
2. रब्त का इलाज कुरआन व सुन्न्त की रोशनी में और अजकार मसनूना।
3. रब्त और जिन्सी कमजोरी में फर्क।
4. बांझपन की कुछ किस्मों का इलाज
5. दुल्हा और दुल्हन को जादू से कैसे बचाया जाये।
6. इलाज रब्त के अमली नमूने।

आठवां बाब

1. बुरी नजर के बारे में किताब व सुन्नत के दलाईल।
2. बुरी नजर की हकीकत।
3. बुरी नजर का इलाज।
4. बुरी नजर के अमली नमूने।

अल्लाह तआला से मैं दुआ करता हूँ के इस किताब के लिखने वाले, इसके पढ़ने वाले और इसको फैलाने वालों, सब को सवाब अता फरमाये।

बेशक अल्लाह तआला ही के हाथ में सब कुछ है। और मैं हर उस

भाई और बहनों से गुजारिश करता हूँ जो इस किताब से फायदा हासिल करे, वोह मेरे लिए और मेरे माँ–बाप के लिए और तमाम मौमिन मर्द और मौमिन औरतों के लिए गायबाना दुआ करें।

किताब से फायदा हासिल करने वालों से गुजारिश है के मेरी इस किताब में जो भी बात कुरआन व सुन्नत के खिलाफ हो तो उसको जुते की नोक पर रखे और सिर्फ कुरआन व हदीस ही की बात मानें। अल्लाह तआला हर उस आदमी पर रहमों–करम करे। जो मेरी इस किताब में कोई गलती देखे तो मुझे बताये बशर्ते के मैं जिन्दा रहूँ और अगर मेरा शुमार मुर्दा में हो चुका हो तो मेरी इस गलती को सुधार दें और मैं हर इस चीज से अलग होने का इजहार करता हूँ जो कुरआन व सुन्नत के खिलाफ हो।

मेरा मकसद सिर्फ ये है के मैं अपनी ताकत के मुताबिक मुसलमान भाईयों की इसलाह (सुधार) करूं। तौफिक सिर्फ और सिर्फ अल्लाह ही के हाथ में है, उसी पर भरोसा है और उसी की तरफ में पलटता हूँ।

वहीद बिन अब्दुल सलाम बाली
रोजा शरीफा मिन मस्जिद नब्बवी
14011 हि. रमजान मुबारक

पहला बाब:

जादू किसे कहते है?

जादू की लफ्जी मायने

अजहरी कहते हैं के जादू (सहर) एक ऐसा काम है जिससे शैतान की नजदीकी हासिल होती है और उसकी मदद से होता है। और अहजरी फरमाते हैं के जादू की असलियत ये हैं के किसी चीज की हकीकत को बदलकर उसके खिलाफ दिखाया जाये जैसे (जैसे कबूतर की जगह मुर्गा वगैरह)। गोया के जादूगर झूट को सच की सूरत में दिखाता है और चीजों को उनकी हकीकत के खिलाफ ख्याल कराता है तो गोया उसने किसी चीज को उसके असल चहरे से फेर दिया, इसलिए कहा जाता है के "कद सहर अलशअई अन वजहई सदफा (लिसान अरब 348/4 सादर बेरूत)

इब्ने अबी आईशा ने शमर से रिवायत किया है के अरबों ने जादू का नाम सहर इसलिए रखा के वोह सहत व तन्दुरूस्ती को बीमारी में बदल देता है। (सान अरब 4/348 बेरूत)

इब्ने फारस में कहा के जादू झूट को सच की शक्ल में पैश करने का ही नाम है (मसहाब 267, बेरूत)

जादू के शरअई माअनी

इमाम फखरूद्दीन राजी रह. फरमाते हैं के जादू की शरअई तारीफ हर उस काम पर साबित होती है जिसका सबब छुपा हो और जिसकी हकीकत के खिलाफ उसका ख्याल हो या यों कहें के वोह दूध का दही और धोकेबाजी का दूसरा नाम है।

अल्लामा इब्ने कदामा फरमाते हैं के जादू और झाड़फूंक अलफाज से इबारत है। अब यह अलफाज चाहे लिखे हो या तकरीरी जिनके जरीये से कोई ऐसा काम किया जाये जो जादू जदा इन्सान के जिस्म या उसके

दिल व दिमाग पर बिला वास्ता असर अन्दाज हो जाये वाकई मौजूद है। और जादू की एक ऐसी किस्म है जिससे इन्सानों को कत्ल भी किया जाता है और एक वोह जादू है जिसके जरीये इन्सान को बीमार कर दिया जाता है और एक किस्म वोह है जिसके जरीये इन्सान को नामर्द बना दिया जाता है। जिसका नतीजा ये होता है के वोह अपनी बीवी से हमबिस्तरी के काबिल नहीं रहता और एक वोह जादू है जिसके जरीये मियां–बीवी में जुदाई पैदा कर दी जाती है और एक वोह जादू है जिसके जरीये से एक दूसरे को आपस में दुश्मन बना दिया जाता है या एक दूसरे के बीच मुहब्बत पैदा कर दी जाती है। (अल मगनी 10/104)

जादू की असल

शैतान और जादूगर के बीच यह वादा होता है के जादूगर कुछ गुनाह और शिर्क करेगा जिसके बदले में शैतान उसकी मदद करेगा।

जादूगरों के कुछ काम इन्हें शैतान के करीब कर देते हैं।

कुछ वोह जादूगर हैं जो कुरआन को पांव से लपेट कर कुरआन समेत हम्माम (गटर) में जाते हैं और कुछ जादूगर ऐसे हैं जो कुरआनी आयात गन्दगी से लिखते हैं और कुछ ऐसे जादूगर हैं जो कुरआनी आयात को हेज के खून (महावारी) से लिखते हैं और कुछ जादूगर ऐसे हैं के वोह अपने पावों के तलवों पर कुरआनी आयात लिखते हैं। और कुछ ऐसे हैं के सूरा फातेहा को उल्टा लिखते हैं। और कुछ ऐसे हैं जो नमाज को बगैर वजु के पढ़ते हैं। और कुछ हर वक्त गन्दगी की हालत में रहते हैं। और कुछ वोह जादूगर हैं जो शैतान के नाम पर जानवर जिब्ह करते हैं यानी अल्लाह के नाम के बदले शैतान का नाम लेकर जिब्ह करते हैं। और फिर जिब्ह (काटना) शुदा जानवर को किसी ऐसी जगह फैंक देते हैं जिसकी निशानधही (जगह) शैतान बताता है। उनमें कुछ ऐसे भी जादूगर हैं जो सितारों को पुकारते हैं और उन्हें सिज्दाह करते हैं। और कुछ जादूगर ऐसे

भी हैं जो अपनी माँ और बेटी से बदकारी करते हैं और कुछ ऐसे भी हैं के वोह तिलस्मी गैर मफहूम जबान (जिस जबान को आम आदमी नहीं जानते हों) में लिखते हैं जो के कुफ्रिया कलिमात होता है।

यहाँ यह बात साबित होती है के "जिन्न" बिना किसी वजह जादूगर की मदद नहीं करता बल्कि उसका चाहे जो मुआवजा वसूल करता है। और जादूगर जिस कदर कुफ्र में आगे बढ़ता जायेगा शैतान उतना ही फरमां बरदार होता चला जायेगा। और उस जादूगर के इशारों पर नाचेगा। और जब जादूगर शैतान के काम कर लाने में कमी करता है तो शैतान जादूगर की खिदमत से दूर हटता जाता है और नाफरमान बन जाता है। जादूगर और शैतान दो ऐसे दोस्त हैं जो अल्लाह तआला की नाफरमानी पर पक्के हो चुके हैं। और जब आप जादूगर के चहरे पर नजर डालेंगे तो आप खुद इस बात की पहचान करेंगे जो हमनें किताब में बयान किया है। आप को महसूस होगा के उसके चहरे पर कुफ्र की नहुसत बरस रही है जैसे के वोह एक खौफनाक काला बादल है।

जब जादूगर कों आप करीब से जानने की कोशिश करेंगे तो आप देखेगें के अपनी बीवी बच्चों के साथ उसकी जिन्दगी निहायत ही तकलीफ देह और तंग है और वोह अपनी जात में इन्तहाई बेचैनी का शिकार होता है ना वोह कभी चैन से सो सकता है और ना कभी उसको इत्मिनान दिल नसीब होता है। बल्कि वोह नींद में बार बार घबराहट का शिकार होता है। शैतान उसके बीवी बच्चों को बहुत तकलीफ देता है। ओर उनके दरमियान नफरत की एक दीवार पैदा कर देता है।

सच फरमाया अल्लाह तआला ने फरमाने इलाही : "जो भी मेरे जिक्र से मुंह मोड़ेगा तो यकीनन उसकी जिन्दगी उसके लिए इन्तहाई तंग हो जायेगी। "

(सूरा ताहा पारा 16 आयत नं. 124)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दूसरा बाब :

कुरआन और सुन्नत की रोशनी में जादू की हकीकत

1. इस बात के दलाईल के शैतान और जिन्न मौजूद हैं

जिन्नों और जादू का दामन चोली का साथ है। बल्कि यों समझा जाये के जिन्न और शैतान ही जादू के बुनियादी किरदार हैं। कुछ लोगों ने जिन्नों के मौजूद होने का इन्कार किया तो साथ ही वोह जादू के वजूद के भी मुनकर्र हुये। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि जिन्न और शैतान के वजूद पर मुख्तसर (थोड़ा) तौर पर दलाईल बयान कर दिये जायें।

कुरआन हकीम से दलाईल

(1) और जब हमने जिन्नों की एक जमाअत को आपकी तरफ मुतवज्जों किया जो कुरआन सुन रहे थे। (सूरा अहकाफ, आयत नं. 29)

(2) ऐ जिन्नों और इन्सानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास मैंने अपने रसूल नहीं भेजे जो तुम्हारे सामने मेरी आयतें पढ़ते हैं और तुम्हें उस (कयामत के) दिन की खौफनाकियों से डराते हैं। (सूरा ए अनआम, आयत नं. 130)

(3) ऐ जिन्नों और इन्सानों की जमाअत अगर आसमान और जमीन के किनारों से भाग सकते हो तो निकल कर भागो, तुम नहीं भाग सकते, मगर अल्लाह तआला चाहे। (सूरा ए रहमान, आयत नं. 33)

(4) कह दीजिये ऐ (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वही की गयी मेरी तरफ के इस (कुरआन को जिन्नों की एक जमाअत ने) सूना तो वोह पुकार उठे के हमने एक अजीब किस्म का कुरआन सुना। (सूरा ए जिन्न, पारा 29 आयत नं. 1)

(5) और बात यह है कि इन्सानों में कुछ लोग जिन्नों से पनाह मांगते हैं तो इस चीज ने उन्हें (जिन्नों को) और ज्यादा घमण्डी बना दिया। (सूरा ए जिन्न, पारा 29 आयत नं. 6)

(6) अल्लाह तआला फरमाता हैं के, "शैतान चाहता है के शराब और जुऐ के जरीये तुम्हारे बीच दुश्मनी और नफरत पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह तआला के जिक्र (कुरआन) और नमाज से रोक दे, बस क्या तुम लोग इससे बाज ना आओगे? (सूरा ए माईदा, आयत नं. 91)

(7) ऐ ईमान लाने वालों तुम शैतान के नक्शे कदम पर मत चलो और जो शैतान के नक्शे कदम पर चलता है तो बेशक वोह उसे बूरी बातों और नापसन्दीदा कामों का हुक्म देता है। (सूरा ए नूर, आयत नं. 21)

जहाँ तक कुरआनी आयत से इस मौजूअ का ताल्लुक है वोह बहुत ज्यादा और मशहूर और मअरूफ हैं। बल्कि इस मौजूअ में इतना ही जान लेना काफी है के कुरआन करीम में पूरी एक सूरा "जिन्न" के नाम से है और लफ्ज "जिन्न" कुरआन में 22 बार आया है। और लफ्ज "जान" 7 बार आया है। और शैतान का लफ्ज 67 बार आया है। और शयातीन लफ्ज 17 बार आया है। मआलूम यह हुआ के जिन्नों और शैतान पर कुरआन करीम की बहुत सी आयत शाहिद हैं।

अहादीस से दलाईल

(1) हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. कहते हैं के हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफर में थे कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गायब पाया तो हमने उनको तलाश करना शुरू किया। तमाम वादी (जंगल) छान मारे (ढूंढ लिये) मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ना मिले तो लोगों ने समझा कि आप नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गायब कर दिये गये हैं या कत्ल कर दिये गये हैं। हम उस रात से ज्यादा परेशानी वाली रात हम पर नहीं गुजरी। जब सुबह हुई तो क्या देखते हैं के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गारे हिरा की तरफ से आ रहे हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखते ही हम लोगों ने कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप हम में से गायब हो गये और हम ने आपको बहुत तलाश किया, मगर हमने आपको कहीं नहीं पाया और सारी रात परेशानी में गुजारी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरे पास जिन्नों का एक कासिद (एक

जिन्न) आया था और मैं उसके साथ चला गया और उनके सामने कुरआन करीम की तिलावत की। इब्ने मसऊद रजि. फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन्नों के आसार और अलामात (निशान) दिखाये और उनकी आग जलाने की जगह भी दिखाई। इब्ने मसऊद रजि. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि जिन्नों की गिजा (खाना) क्या है तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हर वोह हड्डी जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाये तो वोह गोश्त से भर जाती है और तुम्हारे जानवरों का गोबर। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को हुक्म दिया के हम हड्डियों और गोबर से इस्तंजा (पेशाब) ना करें क्योंकि वोह तुम्हारे भाईयों का खाना है। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया)

(2) हजरत अबु सईद खुदरी रजि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे फरमाया, "लगता है कि तुम्हें बकरियों और सहरा (जंगल) से ज्यादा प्यार है। पस जब भी तुम अपनी बकरियों के साथ सहरा में हो तुम नमाज के लिए बुलन्द आवाज से अजान दिया करो। इसलिए के मुअज्जीन की आवाज जो भी जिन्न और इन्सान सुनता है तो वोह कयामत के दिन इसकी गवाही देगा।" (इसे बुखारी, निसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया।)

(3) हजरत इब्ने अब्बास रजि. से एक रिवायत है जिसका खुलासा यह है के मक्का मुकर्रमा में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चन्द सहाबा के साथ "अकाज" के बाजार की तरफ जा रहे थे तो उसी दौरान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान और जिन्न आसमान से खबरें चोरी करने पर मामूर (फिक्स) थे तो उन्हें अपने मिशन में बड़ी नाकामी का सामना हुआ, इसलिए के उन पर शहाब साकिब के आतिशी शौले बरसने लगे तो वोह अपनी कौम में नाकाम वापिस आये और किस्सा जों का त्यों बयान किया और इस बात की तलाश में निकले के नाकामी की वजह क्या

है, तो वोह पूरी दुनिया में घूमने लगे तो उनमें से एक जमाअत वादी "नखला" में पहुँची जहाँ पर नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम फज्र की नमाज पढ़ा रहे थे तो यह (जिन्न) कुरआन सुनने लगे। उन्होंने कुरआन सुनकर कहा के रब्बुल आलमीन की कसम यही चीज है जिसने हम को नाकाम वापिस कर दिया। इसके बाद वोह अपनी कौम में वापिस आये और उन्होंने कहा कि ऐ हमारी कौम! हमने एक अजीब कुरआन सुना है जो भलाई की रहनुमाई करता है तो हम उस पर ईमान ले आये हैं और आईन्दा हरगिज हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहरायेंगे। उस वक्त अल्लाह तआला ने "सूरा ए जिन्न" नाजिल (उतारा) फरमाई। (इसे बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया)

(4) हजरत आईशा रजि. फरमाती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, "फरिश्ते नूर से पैदा हुये और जिन्न आग से पैदा किये गये और आदम अलैहिस्सलाम उस चीज से पैदा किये गये जिस से तुम वाकिफ (जानते) हो (यानी मिट्टी)। (इसे मुस्लिम और इमाम अहमद ने रिवायत किया)

(5) उम्मुल मोमिनीन सफिय्या रजि. रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया कि शैतान इन्सान के जिस्म में खून की तरह गर्दिश (बहता) है। (इसे बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया।)

(6) हजरत इब्ने उमर रजि. से रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया जब तुम में से कोई खाना खाये तो सीधे हाथ से खाये, इसलिए के शैतान उल्टे हाथ से खाता है। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया)

(7) अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. फरमाते हैं के रसूल सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के सामने एक शख्स का जिक्र किया गया जो रातभर सुबह तक सोया रहा तो नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया कि यह वोह शख्स है जिसके दोनों कानों में शैतान ने पैशाब किया है। (इसे बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।)

(8) हजरत अबु कतादा रजि. फरमाते हैं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैही व सल्लम ने फरमाया, अच्छे ख्वाब (सपने) अल्लाह की तरफ से होते हैं और बुरे ख्वाब शैतान की तरफ से होते हैं और जब किसी को कोई बुरा ख्वाब दिखाई दे तो अपनी बायीं तरफ "आऊजु बिल्लाहि मिनशशयतानिर्रजीम" तीन बार पढ़ें और फूंके जिसमें थोड़ा सा थूक भी शामिल हो तो उसको फिर कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा। (इसे इमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)

इस मौजूअ पर बेशुमार अहादीस मौजूद हैं मगर हक चाहने वाले के लिए जितना हम ने लिख दिया काफी है।

जिन्न और शैतान एक ऐसी हकीक़त हैं जिस में कोई शक और शुबा की गुंजाईश ही नहीं।

जादू के मौजूद होने पर दलाईल

पहला–कुरआनी दलाईल

1. फरमाने इलाही है:–

तर्जुमा : और उन लोगों ने इस चीज की पैरवी की जिसे शयातीन सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की दौर·हुकुमत में तिलावत (पढ़ा) किया करते थे हालांकि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कभी कुफ्र नहीं किया। बल्के शैतानों ने कुफ्र किया जो उनको जादू सीखाते थे और मकाम बाबिल में हारूत और मारूत दोनों फरिश्तों पर जो कुछ नाजिल किया गया उसको सीखते थे और वोह दोनों फरिश्तें किसी को कुछ भी ताअलीम ना देते थे बल्के वोह लोगों को खबरदार करते थे के हम तुम्हारे लिए आजमाईश हैं लिहाजा तुम कुफ्र मत करो। पस वोह उनसे ऐसी चीजें सीखते थे जिनसे औरत और मर्द के दरमियान जुदाई डाली जाती थी। और वोह लोग (यानी जादू सीखने वाले) अल्लाह तआला के हुक्म के बगैर किसी को कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते और वोह लोग सीखते थे जो उनको नुकसान पहुँचाता, फायदा नहीं। और उन्होंने यह बात जान रखी थी जो भी इसे खरीदेगा, आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं और उन्होंने जो कुछ किया अच्छा नहीं किया, अगर वोह सब कुछ जानते हैं। (सूरा ए बकरा, आयत नं. 101 से 102)

फरमाने इलाही : तर्जुमा : मुसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया, जब भी हक तुम्हारे पास आता है तो तुम पूछते हो के क्या यह जादू है? हालांकि जादूगर कभी कामयाब नहीं हो सकते। (सूरा ए युनूस, आयत नं. 77)

फरमाने इलाही : तर्जुमा : जब उन्होंने (जादूगरों ने) अपने फन का मुजाहेरा किया (दिखाया) तो मुसा अलैहिस्सलाम ने फरमाया यह तो खुला जादू है। यकीनन अल्लाह तआला इसको नाकाम कर देगा, बेशक अल्लाह तआला फसाद पैदा करने वाले लोगों के कामों की इसलाह (सुधार) नहीं करता। और अल्लाह तआला हक को कामयाब कर दिखायेगा। अगरचे मुजरिमों को नागवार (नापसन्द) ही गुजरे। (सूरा ए यूनुस, आयत नं. 81 व 82)

फरमाने इलाही : तर्जुमा : मुसा (अलैहिस्सलाम) ने दिल में डर महसूस किया तो हमने कहा मत डरिये। आप ही कामयाब व फतहयाब हैं। और जो चीज आप के बायें हाथ में हैं (लाठी) उसको आप जमीन पर डाल दें तो जादूगरों का तमाम किया कराया जादू निकल जायेगा। उन्होंने जादू से सिर्फ एक मकर (चाल) को दिखाया है और जादूगर कभी भी कामयाब नहीं हो सकता। (सूरा ए ताहा, आयत नं. 67 से 69)

फरमाने इलाही : तर्जुमा : और हमने मुसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के आप अपनी लाठी को जमीन पर डाल दें। तो क्या देखते हैं के वोह लाठी जादूगरों के जादू को निगल रही है पस हक जो है वोह फतहयाब (कामयाब) हुआ और जादूगर जो कुछ कर रहे थे वोह नाकाम हुआ। उस मौके पर वोह लोग (यानी जादूगर) शिकस्त (मात) खाकर इन्तहाई (बहुत ही ज्यादा) जिल्लत (बेइज्जती) के साथ मैदान छोड़ कर भाग गये और तमाम के तमाम जादूगर सिज्दे में गिर पड़े और पुकार उठे के हम दोनों जहाँ के परवर दीगार पर ईमान लायें जो मूसा और हारून का रब है। (सूरा ए आराफ, आयत नं. 117 से 122)

फरमाने इलाही : तर्जुमा : कहो मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज की बुराई से जो उसने पैदा की है और अन्धेरी रात की बुराई से जब उसका अन्धेरा फैल जाये और गिरह लगाकर उस में फूँकने

वालियों के शर से हसद करने वाले के शर से जब वोह हसद करने लगे। (सूरा फलक पारा 30)

इमाम कुरतबी फरमाते हैं "व मिन शररिन नफ्फासाति फिल ऊकद" यानी उन जादूगरों के शर से जो धागे पर गिरह लगाकर उन गिरहों पर फूँकते हैं जब उनके जरीये झाड़–फूँक करते है। (तफसीर कुरतबी, 257 / 20)

जादूगर और जादूगरों के मुताल्लिक कुरआन करीम में बेशुमार आयत नाजिल हुई हैं और दीन ए इस्लाम से मामूली सी जानकारी रखने वाला इन्सान भी इस बात को समझता है।

अहादीस से दलाईल :

1. हजरत आईशा रजि. फरमाती हैं के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बनी जरीक के एक शख्स ने जादू किया। जिन्हें "लबीद बिन असम" (जो कि यहुदियों का सबसे बड़ा जादूगर था) कहा जाता है। यहाँ तक के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत ऐसी हो गई थी के उनको ख्याल आता था कि वोह फलाँ काम कर चुके हैं या कर रहे हैं हालांकि वोह ना किया होता। इसी तरह वक्त गुजरता गया। किसी दिन या किसी रात का वाक्या (किस्सा) है उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे ही पास थे और बार बार दुआ कर रहे थे, फिर फरमाया, ऐ आईशा मुझे अहसास हो रहा है के अल्लाह तआला ने मुझे वोह कुव्वत (ताकत) दे दी है जो मैंने उससे तलब (मांगी) की थी। मेरे पास दो फरिश्ते इनसानी शक्ल में आये। उनमें से एक मेरे सर की तरफ बैठ गया और दूसरा मेरे पांव के पास। उन में एक ने अपने साथी से कहा, इस शख्स (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क्या तकलीफ है। दूसरे ने जवाब दिया के "लबीद बिन असम" ने। पहला कहने लगा के जादू और किस तरह और किस चीज में किया। दूसरे ने जवाब देते हुए कहा, कंघी और बालों में और गीली खजूर के गुद्दे में। पहले ने कहा किस जगह है। दूसरे ने फरमाया, जवरान के कुंए में। वहाँ पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ सहाबा के साथ पहुँचे। आपने फरमाया, ऐ

आईशा कुंए का पानी महन्दी के रंग का था। जैसे उस कुएं में महन्दी मिला दी गयी हो और वहाँ कुएं के आसपास खजूर के जो पेड़ थे उनके सर शैतानों के सर की तरह थे। मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या आप ने इस जादू को निकाला नहीं। आपने फरमाया, अल्लाह तआला ने मुझको सेहत (तन्दरूस्ती) दे दी तो मैंने नापसन्द किया कि लोगों में किसी ऐसी चीज की खोज करूं जिस चीज में शर है। पस उस जादू को दफन कर दिया गया। (इसे बुखारी ने रिवायत किया, (फतह 222/10) और मुस्लिम ने रिवायत किया, किताबुलसलाम बाब सहर)

शरह हदीस

यहुदियों (इसाईयों) पर अल्लाह की लानत हो, उन्होंने लबीद बिन असम (जो कि यहुदियों का सबसे बड़ा जादूगर था) से मिल बैठकर यह तय किया के वोह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू करेगा और इसका मुआवजा दीनार लेगा। फि अल वाक्या इस बदबख्त ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बालों पर जादू किया। कहा जाता है के उसने वोह बाल एक छोटी बच्ची से लिये थे जिसका नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरों में आना जाना था और उसने उस पर जादू किया। फिर उसको जवरान के कुएं में रख दिया। हदीस के सिलसिले मे मआलूम हुआ था के यह जादू की वोह किस्म थी जिसके जरीये से मर्द को अपनी बीवी के साथ वाजिबात की अदायगी में रूकावट होती है। चूंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख्याल होता था के वोह अपनी किसी बीवी से मुबाशरत कर सकते हैं लेकिन जब आप उनके करीब जाते थे तो वोह ऐसा नहीं कर सकते थे। इसके अलावा उस जादू से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी काम में कोई रूकावट नहीं हुई। उस जादू की मुद्दत के बारे में इख्तेलाफ है, आया वोह कितने दिन था? यह भी कहा जाता है के चालीस दिन था। वल्लाह आलम। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह से बार बार दुआ की और अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को कबूल फरमाया और अल्लाह तआला ने फरिश्ते भेजकर जादू के बारे में जानकारी दी। ऐसे ही हुआ जैसे ऊपर हदीस मजकूरा है। अहादीस से यह बात साबित होती है के यहुदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम पर शदीद तरीन (खतरनाक) किस्म का जादू किया था। और उनका जो मकसद था वोह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कत्ल करने का था, क्योंकि जादू की ऐसी किस्में भी हैं जिन से आदमी को कत्ल किया जाता है। लेकिन अल्लाह तआला ने उनको यहुदियों के मकर (धोका) से महफूज रखा और जादू की मआमूली किस्म से बदल दिया।

एक शक का खुलासा

इमाम माजरी रह. फरमाते हैं के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू से मुताल्लिक हदीस का कुछ अहले बिदअत इनकार करते है। कहते हैं के यह (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू का असर) मनसब नबुव्वत के मुनाफी है और यह वाक्या इन्सान को शक व शुबे में डाल देता है। और अगर इसको सही मान भी लिया जाये तो शरअत पर से भरोसा जाता रहता है और वोह कहते हैं के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हजरत जिब्राईल आते हैं जबकि वोह नहीं आते थे और ऐसा आपको महसूस होता था के आप अलैहिस्सलाम पर वही नाजिल नहीं हुई। माजरी रह. फरमाते है के यों कहना झूठ है और इसका कोई सबूत नही। इसलिये के रिसालत की दलील मोअजज्जा (निशानियां) है जो किसी नबी की सच्चाई और उसके मअसूम होने पर दलालत करता है। और ऐसी चीज का ख्याल करना जिसकी कोई दलील ही ना हो वोह झूठ है।

युसूफी रह. फरमाते हैं के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जादू में शामिल होना यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे मनसब नबुव्वत मुतासिर हो सके। इसलिए के ऐसे अमराज जिसका दुनिया में कोई नुक्स नहीं है, अम्बिया किराम को भी पैश आते हैं। जिसकी वजह से आखिरत में उनके दरजात बुलन्द होते हैं। लिहाजा जब आपको यह अहसास होता था के जादू के असर से आप दुनिया का फलां काम कर चुके हैं हालांकि आपने उस काम को नहीं किया होता। और फिर यह तमाम जादू के असरात जाईल (खत्म) हो गये। क्योंकि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादू से आगाह कर दिया और फिर इस जादू को निकाल कर दफन कर दिया गया।

लिहाजा यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसकी वजह से नबुव्वत मुतास्सीर हो इसलिये के यह भी आम बीमारियों की तरह एक बीमारी थी जिस का आपकी अक्ल पर कोई असर नहीं था। बल्कि यह जिस्म के जाहिरी हिस्से पर मुख्तसर था। आपको यों महसूस होता था के आप अपनी किसी बीवी से मिले हैं जब के आप ना मिले होते। बहालत बीमारी यह कोई नुकसान देह चीज नहीं है। आप फरमाते हैं के सब से ज्यादा ताअज्जुब की बात यह है के उस चीज को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत के खिलाफ समझ बैठे जब के कुरआन पाक में सराहन यह जिक्र है के :–

फरमाने इलाही : तर्जुमा : हम ने कहा आप (मुसा) ना डरें इसलिए के आखिरकार आप ही फतहयाब (कामयाब) होंगे। ऐ मूसा! जो लाठी तुम्हारे हाथ में है उसको जमीन पर डाल दो ताकि वोह जादूगरों के जादू को निगल जाये क्योंकि उनका काम और उनका मकर एक जादूगर के मकर के अलावा कुछ नहीं और जादूगर किसी तरह भी कामयाब नहीं हो सकता। तो (नतीजा यह हुआ के) तमाम जादूगर सिज्दा रेज हो गये और सब एक जबान होकर पुकार उठे के हम हारून और मुसा के रब पर ईमान लाये। (सूरा ता हा, आयत नं. 68–70)

और किसी भी आलिम और अकलमन्द आदमी ने यह नहीं कहा के मूसा की नबुव्वत इस वाकेअ से मुतासिर हुई बल्कि ऐसे वाकेआत अम्बिया के ईमान को मजबूत करते हैं। इसलिए के अल्लाह तआला उन्हें दुश्मनों पर बदतरी और कामयाबी अता फरमाता है। जहां उनको मोअज्जजा के इजहार का मौका मिलता है वहां पर काफिरों को रूसवाई (जलालत) के अलावा कुछ भी हाथ नहीं आता। अंजामकार मैदान हमेशा अल्लाह से डरने वालों के हाथ में आता है।

इन आयात का इशाराह इस वाकये की तरफ हे जो हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों के दरमियान पैश आया। जब हजरत मूसा को इन जादूगरों के जादू से ऐसा मालूम हो रहा था के इन जादूगरों की लाठियाँ और रस्सियाँ दौड़ रही हैं।

2. हजरत अबु हुरैरा रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फरमाया तबाहकुन (बर्बाद करने वाली) चीजों से बचो। तो लोगों ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह वो क्या हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः–

(1) अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करना।
(2) ज़ादू करना और कराना।
(3) किसी को बिना वजह कत्ल करना।
(4) ब्याज खाना।
(5) यतीम के माल को हड़प करना।
(6) मैदाने–जंग छोड़ कर भागना।
(7) पाक दामन मौमिन औरत पर इल्जाम लगाना।

(इसे बुखारी ने रिवायत किया 393/5)

फाइदा : इस हदीस से यह साबित होता है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें जादू से परहेज (बचने) करने का हुक्म दिया है और यह बात वाजेह फरमायी के जादू का ताअल्लुक सबसे बड़े गुनाह से है। तो इस से यह बात साबित हो गयी के जादू एक हकीकत है ना के कोई वहमी (ख्याली) चीज।

3. हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिसने थोड़ा सा भी इल्म नुजूम हासिल किया उसने जादू का एक हिस्सा हासिल किया। अब उसकी मर्जी है, जितना चाहे बढ़ा लें। (इसे अबु दाउद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अलबानी ने सही करार दिया)

फाइदा : इस हदीस से यह बात साबित होती है के जादू एक हकीकत चीज है जिसको सीखा जा सकता है। लिहाजा जादू के करीब ले जाने वाले रास्ते या हर चीज से खबरदार कर दिया है।

4. हजरत इमरान बिन हुसैन से रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया के जो शख्स बदशगून या कहानत पर यकीन रखता है या जादू करता है या जादू कराता है या वोह जो किसी काहिन (ज्योतिषी) के पास जाकर इसकी बातों की सच्चाई जानता है तो उसने

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का इनकार किया। (यानी आपको रसूल नहीं माना।)

फाइदा – नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जादू से और हत्ता के जादूगर के पास जाने से मना किया है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी चीज से मना करते हैं जिस चीज का वजूद हो और वोह कोई हकीकत हो।

5. हजरत अबु मुसा अशअरी रजि. ने फरमाया के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया के शराबी और जादू का परस्तार और रिश्तों को तोड़ने वाला कभी जन्नत में दाखिल नहीं हो सकता।

फाइदा – मौमिन को उसी चीज से मना किया गया है के वोह इस बात पर भरोसा रखे के जादू खुद–ब–खुद कोई असर करता है। बल्कि मौमिन का यह अकीदाह होना चाहिये के अल्लाह के इरादे के सिवा कोई भी इस को ना तो नफा पहुँचा सकता है और ना ही नुकसान।

फरमाने इलाही है :– तर्जुमा :– और वोह (जादूगर) किसी को भी अल्लाह तआला के हुक्म के सिवा नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

तीसरा : अहले इल्म की राय

1. इमाम खत्ताबी फरमाते हैं के कुछ मनचलों ने जादू का इन्कार किय है। और इसकी हकीकत को झूठा करार दिया है।

इसका जवाब यह है के जादू का वजूद साबित है और इसकी हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता। जमीन पर रहने वाली अकसर कौमें उनका ताअल्लुक जमीन से हो या आसमान से हो, या बररेसगीर से और कुछ अहले रूम भी जादू के वजूद पर मुतफ्फीक हैं। यही लोग अहले जमीन में अफजल तरीन हैं। और इल्म व हुकुमत के एतबार से भी दूसरे से बढ़–चढ़ कर हैं।

फरमाने इलाही है:–

वोह लोगों को जादू सीखाते हैं और अल्लाह तआला ने जादू से बचने का तरीका भी बताया है और फरमाया के

"और ऐ परवरदीगार! मैं तेरी पनाह का चाहने वाला हूँ, जादूगरों के शर से।"

इस सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहादीस साबित हैं जिनका कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। मगर वोह जिन्हें हकीकत से इन्कार की आदत पड़ चुकी है। फिकहा के दरमियान जादूगर की सजा के सिलसिले में इख्तेलाफ है। कहते हैं के जिस चीज का वजूद ही ना हो वोह इतनी मशहूर नहीं होती।

2. इमाम कुरतबी रह. फरमाते हैं के अहले सुन्नत वल जमाअत का यह अकीदाह है के जादू एक नाकाबिले इनकार हकीकत है और जमहूर औलमा शाफिआ में से अबु इसहाक कहते हैं के जादू वहम और ख्याल के सिवा कुछ नहीं। वोह कहते हैं के जादू धोकेबाजी का एक हिस्सा है।

फरमाने इलाही है:– "जादू की वजह से उन्हें ऐसा लगता है के वोह लाठियाँ दोड़ रही हैं।"

अल्लाह तआला ने यह नहीं फरमाया के फी अल वाकेआ (सचमुच) दौड़ रहे हैं, बल्कि यों फरमाया, और दूसरी जगह रब्बुल इज्जत ने फरमाया:–

तर्जुमा :– लोगों की आंखों पर जादू कर दिया।

यह कोई दलील नहीं है इसलिए हम तख्यील वगैरह जादू ही का हिस्सा समझते हैं। इसलिए के जादू की ताअलीम और इसका इल्म साबित है। लिहाजा इसे हकीकत के सिवा और कोई नाम नहीं दिया जा सकता। खुलासा यह है के कुरआन और हदीस और इजमाअ उम्मत सब इस बात पर मुतफिक्क हैं के जादू का वजूद है और वोह एक हकीकत है। इस के मुकाबिल में चन्द नाकाबिल जिक्र लोगों का इख्तेलाफ कोई मायने नहीं रखता।

तीसरा बाब

जादू की किस्में

इमाम अबु अब्दुल्लाह राजी रह. के नजदीक जादू की किस्में:-

1. कलदानीयों का जादू :– जो के सात मशहूर सितारों की पूजा करते थे, उनका अकीदाह था के सितारे ही दुनियाका निजाम चलाते हैं और वही अच्छे व बूरे के मालिक हैं और उन्होंने ही हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को नबी बना कर भेजा था।
2. वहम का जादू :– इमाम राजी रह. ने इस्तदलाल किया के वहम व ख्यालात को किसी वाक्ये में काफी दखल होता है क्योंकि हम देखते हैं के जब दरख्त (पेड़) का तना जमीन पर पड़ा हुआ हो तो कोई भी इन्सान उस पर आसानी से चल सकता है। और अगर उसी तने को किसी दरिया या नहर पर रख दिया जाये तो उस पर चलना मुश्किल हो जाता है। आप फरमाते हैं के जैसे डाक्टरों का इत्तेफाक है के नकसीर के मरीज को सुर्ख (लाल) चीजों की तरफ नहीं देखना चाहिए और मिरगी के मरीज को चमकदार और गर्दिश करने वाली चीजों को नहीं देखना चाहिए। यह महज इसलिये के इन्सानी फितरत काफी हद तक वहम की ताबेदार होती है।
3. जिन्नों से मदद मांगना :– जिन्नों की दो किस्में हैं। 1. मौमिन 2 कुफ्फार। कुफ्फार जिन्नों को ही शैतान कहते हैं।

इमाम राजी रह. फरमाते हैं के उन्हें (यानी जादूगरों को) अरहवा (शैतान) के जरीये जादू तक पहुंच होती है।

4. शोअबदा बाजी और नजरबन्दी :– यह वोह इल्म या हुनर है जिस की वजह से लोगों की नजर यानी तवज्जोह (ध्यान) हर तरफ से हटाकर किसी खास चीज पर लगाकर के उन्हें बेवकूफ बनाया जाता है।
5. हैरतअंगेज करामात : यह वोह इल्म है जिसका इजहार मुख्तलिफ (अलग–अलग) औजार की तरकीब से होता है। मिसाल के तौर पर

किसी घुड़सवार को हाथ में बूक (बांसूरी) लगती है। फरमाते हैं के यह एक हकीकत है जिसको जादू का नाम नहीं दिया जा सकता क्योंकि इसके खास पुरजे होते हैं जो भी इस का इल्म हासिल कर ले वोह ऐसा कर सकता है।

6. जादूगर इस चीज का दावा करें के वोह इस्म अजीम (अल्लाह के नाम) जानता है और यह के जिन्न उसके फरमां बरदार हैं जो हुक्म वोह जिन्नात को देता है तो उसका हुक्म मान लेते हैं, कहते हैं के कभी कभी ऐसा हो सकता है के वोह सुनने वाला कम अकल हो। पस वोह अपना अकीदाह बना लेता है और उसको हक समझने लगता है तो जादूगर आदमी का रोब देखने वाले पर बैठ जाता है। लिहाजा जब यह सूरत हो जाती है तो जादूगर को अपनी मनमानी करने में काफी आसानी हो जाती है।

इब्ने कसीर रह. फरमाते हैं के इमाम राजी ने लफ्ज जादू के लुगवी मायने को मद्दे नजर रखते हुये बहुत सी ऐसी चीजों को जादू करार दिया है जो के जादू नहीं है।

इमाम रागिब रह. के नजदीक जादू की किस्में :

इमाम रागिब रह. फरमाते हैं के जादू का इतलाक मुख्तलिफ मायनों में होता है।

नम्बर 1. हर वोह चीज जो इन्तहाई अच्छी और खुबसूरत हो, और उसी से कहा जाता है "मैंने बच्चे को धोका दिया और उसे गुमराह किया।" जो शख्स किसी का ध्यान अपनी तरफ कर ले तो जैसे के उसने उस पर जादू किया। और उसी से हदीस में आया है "कुछ तकरीरें ऐसी होती हैं जिस का असर जादू से कम नहीं होता।"

नम्बर 2. दूसरा मायना धोका और ऐसे ख्यालात हैं जिनका हकीकत से कोई वास्ता ना हो जैसे दिखावा वगैरह।

नम्बर 3: कहते हैं के शैतानों की मदद हासिल कर के उनकी नजदीकी हासिल करके जो कुछ हासिल किया जाता है उसको जादू कहा

जाता है। और उसी की तरफ रब्बुलआलमीन ने कुरआन करीम में इशारा फरमाया है:–

" बल्के शैतानों ने कुफ्र किया जो लोगों को जादू सिखाते थे"

नम्बर :4 सितारों की पूजा कर के जिसे हासिल किया जाता है।

जादू के अकसाम का खुलासा

अहल इल्म की इन बातों पर गौर करने से यह बात साफ हो जाती है के उन्होंने बहुत सी ऐसी चीजें भी जादू में दाखिल कर दी हैं जिनका जादू से दूर का भी वास्ता नहीं है और महज इस वजह से के उन्होंने जादू के लगवी मायने पर ही भरोसा किया, इसलिए उन्होंने बहुत सी इल्मी इजादात को भी जादू का नाम दे दिया है। इस किताब में ना यह बात मौजूअ बहस है और ना हमारा मकसद, बल्कि हमारा मदार सहर हकीकी है जिसमें जादूगर शैतान और जिन्न पर यकीन करता है। यहाँ पर एक और अहम (जरूरी) हकीकत है, जिसका इनकार किया नहीं जा सकता जिसे सितारों की रूहानियत का नाम दिया जाता है। हालांकि सितारे अल्लाह तआला की मख्लूकात में से एक मख्लूक है जो हर ऐतबार से अल्लाह तआला के ताबे और फरमां बरदार हैं और बजात खुद ना तो उनमें कोई रूहानियत हैं और ना ही कोई तासीर। अगर कोई ऐतराज करे के हम मुशाहिदा करते हैं के कुछ जादूगर सितारों का वजीफा पढ़ते हैं और उनकी दुहाई देते हैं जिसके बाद देखने वाले उनके जादू का मुलाहेजा करता है तो इसका जवाब यह है के अगर हम उसे सच मान भी लें तो सितारों का कमाल नहीं हैं बल्कि यह शैतान का असर होता है। जादूगर जो है वोह गुमराही में तह–ब–तह धसता ही चला जाता है जैसे रिवायत किया जाता है के कुफ्फार जब पत्थर के बूतों को पुकारते थे तो बूतों के अन्दर से शैतान जवाब देते थे जिसको कुफ्फार सुनते और उसकी वजह से कुफ्फार यह समझने लगते के यही पत्थर के बूत हमारे माअबूद हैं हालांके हकीकत से दूर का भी इस चीज से कोई वास्ता नहीं। अल्लाह तआला हमें और आपको शैतान और बूतों की बुराई से बचाये।

आमीन

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

चौथा बाबः

जादूगर के जिन्न हाजिर करने का तरीका

जादू और शैतान का मुआहेदा (समझौता) :

अमूमन जादूगर और शैतान इस बात पर यकीन कर लेते हैं के जादूगर बाज शिर्रकिया काम करेगा या बाज सरीहन (खुल्लम खुल्ला) कुफ्रिया काम अन्जाम देगा तो उसके बदले में शैतान जादूगर की खिदमत का जिम्मा उठा लेता है। इसलिए के उस मुआहदे का ताअल्लुक बराये रास्त (सीधा) जिन्न और शैतान के कबायिली (कबिला) सरदारों से होता है। लिहाजा यह लीडर जो होता है कबीले के किसी बेवकूफ तरीन आदमी को जादूगर की खिदमत और उसकी इताअत पर उकसाता है और यह के वोह जादूगर को वकूअ पजेर हुए मामलात की खबरें, या दो के दरमियान जुदाई डाल दें, या मोहब्बत बढ़ायें या किसी मर्द को उसकी बीवी के मुकाबले में नाकाम कर दें वगैरह वगैरह। लिहाजा यह (बदमाश जादूगर पहुँचे हुए बुजुर्ग की सूरत में) उस जिन्न को बुरे कामों के लिए ताबे कर लेता है। अब अगर जिन्न जुर्रत व गुस्ताखी का इरतकाब करता है तो जादूगर कुछ तावीजों को इस्तेमाल करके चापलूसी करके कबीले के सरदार से शिकायत करता है और अल्लाह तआला को छोड़कर उससे मदद मांगता है। जिस के नतीजे में यह (जिन्न) सरदार आम जिन्न को सजा देता है और उसे जादूगर की खिदमत और इताअत पर मजबूर करता है और यह के दूसरों को उस जादूगर की खिदमत पर लगा दे। यही वजह है के जिन्न और जादूगर के बीच सख्त नफरत पायी जाती है और ये जिन्न जादूगर को तकलीफ पहुँचाने में जरा भी समझ से काम नहीं लेता और अपनी इस जरा–नवाजी की उसके बाल–बच्चों और माल में खुब फय्याजी करता है बल्कि कभी कभी तो वोह जादूगर को भी सजा देता है जैसे के मुस्तिकल सर का दर्द, नींद का ना आना, रात में घबराना, वगैरह। और जादूगरों के यहाँ अमूमन औलाद भी नहीं होती, इसलिए के जिन्न बच्चे की पैदाईश होने

से पहले ही माँ के पेट में कत्ल कर देता है और यह जादूगरों के यहाँ मशहूर है। यहाँ तक के कुछ ने जादू को औलाद की उम्मीद में खैरबाद कह दिया, इस उम्मीद पर के जादू छोड़ दें तो हो सकता है के कोई बच्चा हो जाये। यहाँ मुझको यह बात याद आयी। मैं एक जादू में मुब्तला मरीज का इलाज कर रहा था जब मैं ने उस पर कुरआन पढ़ा तो जादू पर मुकर्रर जिन्न ने उस औरत की जबान से कहा के मैं इस औरत से नहीं निकलूंगा, मैंने पूछा क्यों? तो उसने जवाब दिया जादूगर मुझको कत्ल कर देगा। तो मैंने उस जिन्न से कहा के तू ऐसी जगह चला जा जिसको जादूगर जानता ही ना हो। तो उस जिन्न ने कहा के जादूगर मेरी तलाश में किसी दूसरे जिन्न को रवाना कर देगा। तो मैंने कहा के अगर तू सच्चे दिल से तौबा कर ले और इस्लाम कबूल कर ले तो इंशा अल्लाह हम तुम को कुरआन की कुछ आयात सीखा देंगे। जो तुझे काफिर जिन्नों के डर से बचायेगी और उन से हिफाजत करेगी। तो उस जिन्न ने कहा मैं मुसलमान हरगिज नहीं हो सकता बल्कि मैं हमेशा ईसाई रहूँगा। मैंने उस से कहा दीन में कोई जबरदस्ती नहीं है लेकिन तू इस वक्त इस औरत से निकल जा। उसने कहा हरगिज नहीं, मैंने कहा, अब तो इन्शा अल्लाह मैं तुम पर कुरआन पढ़ सकता हूँ यहाँ तक के तुम जल जाओ। फिर मैंने उसको बहुत मारा जिसके नतीजे में वह रोने लगा और कहने लगा के जा रहा हूँ, अभी गया, अभी गया। तो अलहम्दु लिल्लाह वोह जिन्न उस औरत से निकल गया। हर किस्म की बदतरी का हकदार सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला ही है और यह हकीकत है के जादूगर जितना बड़ा काफिर और जिस कदर खबीस होगा तो जिन्न उसकी उतनी ज्यादा और जल्द कहना मानेगा। उसके बरखिलाफ अगर जादूगर कुफ्र और ख्बासत में माहिर नहीं तो शैतान और जिन्न उसकी ज्यादा इताअत भी नहीं करते।

जादूगर जिन्न को कैसे हाजिर करता है?

जिन्नात को हाजिर करने के मुख्तलिफ (अलग–अलग) और कई तरीके हैं और सब के सब शरीहन (खुल्लम खुल्ला) कुफ्र व शिर्क से इबारत (लिखे हुए) हैं। उनमें से मैं सिर्फ आठ का मुख्तसर जिक्र करूंगा और हर

तरीके में इस्तेमाल किये जाने वाले शिर्क की भी वजाहत की जायेगी इसलिए के बेचारे आम मुसलमान कुरआनी इलाज और जादू में फर्क नहीं कर सकते। जब के पहले का ताअल्लुक ईमान और दूसरे का ताअल्लुक शैतान से है और यह मामलाऔर भी ज्यादा कठिन हो जाता है जब चालाक किस्म के जादूगर अपने कुफ्रिया तरीके को आहिस्ता पढ़ते हैं और इसके दरमियान में जो कुरआनी आयात होती हैं वोह बाआवाज बुलन्द (जोर से) मरीज को सुनाकर पढ़ते हैं और मरीज बेचारा यह समझता है के उसका इलाज कुरआन से किया जा रहा है, हालांकि हकीकत में ऐसा नहीं होता लिहाजा नतीजन मरीज जादूगर की हर बात मानने लगता है, मेरा यहाँ इन तरीकों को बयान करने का मकसद सिर्फ यही है के मुसलमान गुमराहों से आगाह हों और मुजरिमों की कारस्तानियों से जानकारी हासिल करे। मुसलमान इन जादूगरों से दूर रहे।

जिन्न को हाजिर करने का पहला तरीका

1. तरीका ए किस्मः इस तरीके में जादूगर अंधेरे कमरे में दाखिल होता है फिर आग जलाकर कोई खास किस्म की धूनी देता है जैसा के उसको चाहिए। अगर उसका मकसद एक दूसरे से अलग करना या दुश्मनी पैदा करना वगैरह होता है तो वोह आग पर बदबुदार चीजें जलाता है। और जब एक दूसरे के दरमियान मुहब्बत पैदा करने का जादू या मर्द को उसकी बीवी के करीब करने का जादू या किसी जादू का तोड़ करना मकसूद हो तो खुशबुदार चीजों की धूनी देता है और फिर वोह अपने शिर्किया कलिमात पढ़ने लगता है जिसमें वोह जिन्नों के सरदार की कसम खाता है और उनसे उनके नाम सवाल करता है। इसी तरह शिर्क के दूसरे भी कई तरीके इस्तेमाल किये जाते हैं जैसा के बड़े जिन्नों की ताअजीम (इज्जत) और उनसे फरयाद करता है। बशर्ते के जादूगर मलऊन नापाक हो, या जुनबी (बीवी से हमबिस्तरी करके न नहाया हुवा) हो या नापाक कपड़े पहने हुए हो और जब वोह अपने कुफ्रिया कलिमात अदा करके फारिग हो जाता है तो उसके सामने कुत्ते की शक्ल या सांप की शक्ल में सामने होता है तो उसके सामने जादूगर अपना मकसद बयान करता है।

और कभी कभी यो भी होता है के जादूगर के सामने कोई चीज जाहिर नहीं होती बल्कि सिर्फ एक आवाज सुनाई देती है और जादूगर उससे मकसद बयान करता है। और कभी तो आवाज भी नहीं सुनता बल्कि जिस शख्स पर जादू करना होता है उसकी किसी चीज पर गिरहे (गांठ) लगाई जाती हैं जैसे उसके बाल या उसके कपड़े का कोई टुकड़ा जिस में उसका पसीना लगा हुआ हो। फिर जिन्न से जादूगर अपना मकसद बयान करता है।

इस तरीके की वजाहत (खुलासा)

इस तरीके पर गौर किया जाये तो यह चीजें सामने आती हैं।

1. जिन्न अंधेरे कमरों को पसन्द करते हैं।
2. जिन्न ऐसी धूनी की बदबू को अपनी गिजा (अपना खाना) बनाते हैं जिस पर अल्लाह का नाम ना लिया गया हो।
3. जिन्नों की कसम खाना और उनसे फरयादा करना खूला शिर्क है
4. जिन्नात गन्दगी को पसन्द करते हैं और शैतान गन्दी चीजों के पास होते हैं।

2. जिब्ह करने का तरीका : इस तरीके में जादूगर अपने जिन्न की मंशा (जिसको पसन्द करता है) किसी मखसूस और ओसाफ वाले परिन्दे जानवर और मुरगी को तलब करता है और ज्यादातर यह चीजें काले रंग की होती हैं, इसलिए के जिन्न काले रंग ही को पसन्द करते हैं और फिर जादूगर उसको बिस्मिल्लाह पढ़े बगैर ही जिब्ह करता है और कभी कभी मरीज को उसके खून से रंग दिया जाता है और कभी ऐसा नहीं भी किया जाता और फिर जानवर को खण्डरात या किसी विरान जगह या किसी विरान कुऐं में जो के ज्यादातर जिन्नों की रहने की जगह होती है फैंक दिया जाता है और ऐसा करते वक्त अल्लाह तआला का नाम नहीं लिया जाता। इसके बाद जादूगर अपने घर वापिस आकर शिर्किया कलिमात की रट लगाता है और जिन्नों को अपने अहकामात बताता है इस तरीके में आदमी दो मकाम पर शिर्क का शिकार होता है। पहला

मकाम जिन्नों के लिए जिब्ह करना, हालांकि यह तमाम औलमा के नजदीक बिला इत्तेफाक हराम है, इसलिए के यह शिर्क अकबर में से है। (क्योंकि) यह गैर अल्लाह के लिए जिब्ह करना है) किसी मुसलमान के लिए इसका खाना जाइज नहीं है। चे जाये के वोह ऐसा करे। ऐसे जाहिलों की बहुत बड़ी तादाद मुसलमानों में हर जगह मौजूद है जो इस गन्दे काम को करते हैं। याहया फरमाते हैं के मुझ से वहब ने रिवायत किया के किसी बादशाह ने एक चश्मा निकलवाया और उसका इफ्तेताह (शुरूआत) करना चाहा तो उस मौके पर जिन्नों के लिए जिब्हा पैश किया ताके वोह इस कुऐं के पास के पानी को जमीन में ना धंसा दें फिर उस जिब्हे का गोश्त कुछ लोगों को खिलाया। इसकी इताअत उस जमाने के मशहूर इमाम इब्ने शहाब जहरी को पहुँची तो आपने फरमाया, पहले तो उन्होंने ऐसा काम किया जो के जाइज नहीं था और फिर ऐसे लोगों को खिलाया जो उनके लिए हलाल नहीं था।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया के जिन्नों के नाम का जिब्हा खाना हराम है। सही मुस्लिम में हदीस है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है के उस शख्स पर अल्लाह तआला की लानत हो जो गैर अल्लाह के नाम पर जिब्ह करता है। शिर्किया वजाइफ और यह वोह अलफाज और मन्तर होते हैं जो जिन्नों को बुलाने के लिए पढ़े जाते हैं। बावजूद इसके के वोह शिर्क सरीह से इबारत होते हैं। जैसा के शैखुलइस्लाम इब्ने तेमिया रह. ने अपनी किताबों मे वाजेह किया है।

3. तरीका ए सफ्ली :– जादूगरों के यहाँ यह तरीका सफ्ली के नाम से मशहूर है और जादूगर के ताबे काफी शयातीन होते हैं जो जादूगर का कहना मानते हैं ओर उसके हुक्म को मानते हैं, इसके लिए यह जादूगर कुफ्र में सबसे ज्यादा आगे निकल जाता है और अलहाद में भी बेमिसाल होता है। अल्लाह तआला की इस पर लानत हो। इस तरीके का खुलासा यह है:–

जादूगर मलऊन कुरआन करीम को जूते के तौर पर (नऊजुबिल्लाह) अपने पावों में इस्तेमाल करता है फिर इस समेत लैटरिंन में दाखिल होता है। लैटरिंन में दाखिल होकर अपने कुफ्रिया कलिमात को पढ़ता है। फिर

गटर से वापिस निकलकर अपने हुजरे (कमरे) में आता है और जिन्नों को अपने मकसद से आगाह करता है। जिन्न उसकी फरमां बरदारी के लिए बहुत खुश हो जाते हैं यह इसलिए के जादूगर कुफ्र के बाद शैतान का भाई बन जाता है।

जादू की इस मंजिल तक पहुँचने के लिए जरूरी है के जादूगर ने कई बड़े गुनाह किये हों। मसलन अपनी माँ–बहन–खाला से जिना करना, लिवातत करना, गैर औरत से जिना करना, या दीन को बुरा भला कहना वगैरह। इन सब कामों का मकसद सिर्फ और सिर्फ शैतान को खुश करना होता है।

4. तरीका ए निजासत (गन्दगी) :– इस तरीके में जादूगर कुरआन की किसी आयत को हेज के खून (औरत की महावारी का खून) से लिखता है या उसके अलावा किसी और गन्दगी या नापाक चीज से लिखता है। फिर वोह अपने कुफ्रिया वजाइफ पढ़ता है और जिन्न को पुकारता है। फिर जिन्न से अपना मतलब बयान करता है।

यह बात छुपी हुई नहीं है के यह तरीका किस कद्र खुला कुफ्र है और कितनी ज्यादा कुरआनी आयत की तौहिन की जाती है। हालांकि कुरआन करीम का मजाक उड़ाना कुफ्र, बल्कि कुफ्रे अजीम है उसके बारे में क्या कहा जाये जो कुरआनी आयात को गन्दगी से लिखता है।

अल्लाह तआला हमारी हिफाजत फरमाये। हम अल्लाह तबारक व तआला से माफी मांगते हैं के वोह हमारे दिलों में ईमान को मजबूत कर दे और हमारा खात्मा इस्लाम पर करे और आखरत में हमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ नसीब करे। आमीन सुम्मा आमीन!

5. तरीका ए तनकीस (उल्टा तरीका) : इस तरीके में जादूगर मलअून कुरआन मजीद की किसी भी सूरत को अलग अलग हरूफ (अल्फाज) में उल्टा लिखता है यानी आखिर से अव्वल तक फिर वोह शिर्किया कलिमात पढ़ता है और जिन्न को हाजिर करके अपना मकसद बयान करता है। यह तरीका भी शिर्क व कुफ्र में शामिल होने की बिना पर हराम है।

6. सितारों का तरीका : इस तरीके को इन्तजार का नाम दिया जाता है। इसलिए के जादूगर किसी खास सितारे के निकलने का इन्तजार करता है। फिर वोह जादू के वजाइफ के जरीये इस सितारे को पुकारता है और मुख्तलिफ किस्म के जादूई कलाम पढ़ता है जो के सरासर शिर्क व कुफ्र पर मब्नी होते हैं। बाद में वोह कुछ ऐसी हरकत अंजाम देता है जिसके बारे में इसका ख्याल होता है के वोह इस सितारे की रूहानियत को अपने कंट्रोल में कर रहा है। हकीकतन में वोह अल्लाह वहदहु ला शरीक'' को छोड़ कर उस सितारे की पूजा करता है के अगरचे के जादूगर उस चीज को नहीं जानता, के यह गैर अल्लाह की पूजा है। इसके नतीजे में शैतान जादूगर के ताबे हो जाता है फिर जादूगर यह ख्याल करता है के सितारे ने उसकी मदद की है जब के सितारा इस बात से बिल्कुल नावाकिफ होता है। जादूगरों का ख्याल है के उस जादू को उसी वक्त काटा जा सकता है के जब यह दोबारा जाहिर हो (जादू की काट का यह तरीका जादूगरों का है वरना कुरआन के जरीये हर वक्त इस जादू को काटा जा सकता है) और कुछ सितारे ऐसे हैं जो के साल में सिर्फ एक ही बार निकलते हैं। पस जादूगर इस सितारे का इन्तजार करता है और जब वोह सितारा निकल जाता है तो उस सितारे से फरयाद करता है। यह बात वाजेह है के इस तरीके में किस कदर शिर्क व कुफ्र है। अल्लाह तआला हम सब को इस कुफ्र व शिर्क से बचाये। आमीन!

7. तरीका ए तावीज : यहाँ पर जादूगर किसी ऐसे बच्चे को लाता है जो के नाबालिग और बिना वजू हो। फिर उसके बायें हाथ की हथेली पर एक मुरब्बा शक्ल बनाता है और मुरबआ (चौखाना) शक्ल के इर्द गिर्द जादू के शिर्किया कलिमात लिखता है और यह कलिमात मुरब्बा के चारों कोनों पर लिखे जाते है और उस मुरब्बा नुमा शक्ल के अन्दर बच्चे की हथेली में तेल डालता है और नीले रंग का कोई फूल या तेल और नीले रंग की स्याही रखता है। फिर जादू के दूसरे वजाइफ एक लम्बे कागज पर अलग अलग हुरूफ में लिखता है। फिर यह कागज छाते की तरह बच्चे के चहरे पर रख देता है और उस पर एक टोपी पहनाई जाती है ताके वोह कागज रखा रहे। फिर किसी भारी भरकम कपड़े से बच्चे को पूरी तरह

से लपेट देता है। इस हाल में बच्चा सिर्फ अपनी हथेली ही देख सकता है। फिर जादूगर कुफ्रिया कलिमात की रट लगाता है तो अचानक बच्चा माहौल को रोशन महसूस करने लगता है और उसको उसकी हथेली पर एक खास शक्ल नजर आने लगती है। फिर जादूगर बच्चे से पूछता है के तुम क्या महसूस करते हो, क्या देखते हो। तो बच्चा कहता है के अपने सामने मुझे एक मर्द नजर आ रहा है। तो जादूगर कहता है के उससे कहो के तुम्हें पीर साहब यों और यों कह रहे हैं तो वोह सूरत अहकामात के तहत काम करने लगती है। अमूमन यह तरीका गुमशुदा तरीकों की तलाश करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और यह पूरे तौर पर शिर्क और कुफ्र पर मब्नी है।

8. अलामात का तरीका :– इस तरीके में जादूगर मरीज का कपड़ा या कोई भी ऐसी चीज जिसमें उसका पसीना लगा हुआ हो। फिर वोह उसमें गिरह (गांठ) लगाता है और चार अंगुलियों के बराबर उसकी पैमाईश करता है और उसको मजबूती से पकड़कर बुलन्द आवाज से सूरा ए तकासूर या कोई दूसरी छोटी सूराह पढ़ कर फिर इन्तहाई आहिस्ता आवाज में शिर्किया कलिमात पढ़ता है। इसके बाद जादूगर जिन्न को तलब करता है। मरीज की बीमारी का सबब अगर कोई जिन्न है तो उस पैमाईश की हुई चीज के लिए कहेगा के चार अंगुल से छोटा कर दो और अगर बुरी नजर है तो उसको लम्बा कर दो और अगर जिस्मानी कोई बीमारी है तो उसको उसी हालत में रहने दो। फिर दोबारा वोह उस कपड़े या चीज की पैमाईश करता है अगर वोह चार अंगुलियों से ज्यादा हो जाती है तो वोह जादूगर कहता है के तुम्हें यानी मरीज को हसद (जलन) की वजह से नजर लग गई है और अगर चार अंगुलियों से छोटा हो गया हो तो कहता है के मरीज पर जिन्न सवार है। और अगर वोह कपड़ा या चीज अपनी पहली हालत पर रहे यानी चार अंगुलियों के बराबर तो वोह कहता है के मरीज को कुछ भी नहीं है। इसे डाक्टर के पास ले जाओ और डाक्टर से इसका इलाज कराओ।

इस तरीके की वजाहत :

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

1. आवाज से कुरआन पढ़ कर मरीज को धोका देना के वोह ख्याल करे के जादूगर ने उसका इलाज कुरआन से किया है हालांकि ऐसा नहीं बल्कि उसके इलाज का असल राज उन शिर्किया वजिफों में होता है जिन्हें जादूगर धीरे धीरे पढ़ता है।
2. जिन्नों से मदद मांगना और उनकी दुहाई देना फिर अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारना यह सब बड़ा गुनाह है।
3. जिन्नों में झूट आम होता है। इसलिए मालूम नहीं के वोह जिन्न सच्चा है या झूटा। इस बात में हमने कुछ जादूगरों का इम्तेहान लिया तो कुछ वोह सच कहते और कुछ झूट कहते थे। कई बार ऐसा भी हुआ के कुछ मरीज मेरे पास आये तो उनसे मैंने सवाल किया के जादूगर ने तुम्हें क्या बताया? तो मरीज कहता है के जादूगर ने कहा है के तुम्हें बुरी नजर लगी है। और जब मैंने उस मरीज पर कुरआन पढ़ा तो उस मरीज के अन्दर से जिन्न बोलने लगा, उसको बुरी नजर वगैरह कुछ नहीं लगी थी।

नोट : इस के अलावा भी जादूगरों के तरीके होते हैं जिस के बारे में मैं नहीं जानता।

जादूगर की पहचान

हम जादूगर को कैसे पहचानें?

इन निशानियों में से कोई एक भी किसी इलाज करने वाले या हकीम के अन्दर पायी जाये तो उसके जादूगर होने में कोई शक व शुबा नहीं रहेगा।

1. मरीज से उसका नाम और उसकी माँ का नाम पूछे।
2. मरीज की कोई चीज मांगे, मसलन कपड़ा, टोपी, बनियान वगैरह।
3. कोई खास किस्म का जानवर मांगे ताकि वोह गैर अल्लाह के लिए जिब्ह करे और उसका खून मरीज के मकाम तकलीफ पर लगाये और फिर उस जानवर को किसी विराने में फिंकवा दे।
4. तिलस्म का लिखना, मसलन टेठी–मेठी लकीरें खींचना जो के किसी के समझ में ना आये।

5. ऐसे कलाम पढ़े जो के किसी की समझ में ना आये।
6. मरीज के ऊपर पर्दा डाल देना जिसमें खाने बने हुए हों और खानों में हुरूफ या नम्बर हों।
7. मरीज को जादूगर एक खास मुद्दत तक लोगों से अलग रहने का हुक्म दे, किसी ऐसे कमरे में जहां सूरज की रोशनी तक ना हो।
8. मरीज से इस बात का मुतालबा किया जाये के एक खास मुद्दत तक पानी को हाथ ना लगाये। ऐसा अमूमन चालिस दिन के लिए किया जाता है। यह तमाम अलामात इस बात पर दलालत करती है के जादूगर का जिन्न जिसकी मदद से जादूगर लोगों की मदद करता है वोह ईसाई है।
9. मरीज को कुछ चीजें जमीन में गाड़ने (दफन) के लिए दी जाये।
10. मरीज को कुछ बत्तियाँ दी जाती हैं जिनको वोह जलाकर उनकी धूनी लेता है।
11. जादूगर ऐसे अलफाज गुनगुनाये या पढ़े जिनको समझा ना जा सके।
12. कभी ऐसे भी होता है के मरीज के बताने से पहले ही जादूगर मरीज को जैसे ही देखता है, उसके मुताल्लिक बताना शुरू कर देता है, मसलन तुम कौन हो, तुम कहां से आये हो, तुम्हें कौन सी बीमारी लगी है, वगैरह, वगैरह।
13. मरीज के लिए जादूगर अलग अलग हुरूफ में तावीज लिखकर देता है या किसी चीज की तश्तरी पर लिखकर देता है ताके मरीज उसको घोलकर या धोकर पी ले या पीता रहे।

नोट : जब आप को यह तमाम बातें मालूम हो जायेगी और आपको यकीन आ जायेगा के यह जादूगर ही है तो खबरदार ऐसे लोगों से दूर हो जायें और उनके करीब भी ना जायें। वरना कहीं आप पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान सादिक ना हो जाये:-

जो किसी काहिन या जादूगर के पास गया और उसने किसी चीज की तसदीक की तो यकीनन उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबुव्वत का इनकार किया।

पांचवा बाब

इस्लाम में जादू की हैसियत

शरिअत इस्लामिया में जादूगर की सजा :

1. इमाम मालिक रह. फरमाते हैं के जो शख्स जादू करता है उस पर अल्लाह का यह फरमान सादिक आता है:–

   अलबत्ता वोह जानते हैं जिस चीज को उन्होंने खरीदा है। आखिरत में उसके लिए कोई हिस्सा नहीं।

   (सूरा ए बकरा, पारा 1 आयत नं. 102)

   मेरी राय यह है के जादूगर को कत्ल कर देना चाहिए।

2. इब्ने कदामा रह. फरमाते हैं के जादूगर की सजा कत्ल है। और यही हुक्म हजरत उमर उसमान बिन अफान इब्ने उमर, हफसा जुनदुब बिन काब और केस बिन साद रजी. अनहुम और उमर बिन अब्दुलअजीज और अबु हनीफा और इमाम मालिक रहमहमुल्लाह से मरवी है।

3. इमाम कुरतबी रह. फरमाते के फिकाह के माबेन मुसलमान जादूगर और जिम्मी जादूगर के हुक्म के सिलसिले में इख्तलाफ है। इमाम मालिक रह. फरमाते हैं के जब मुसलमान किसी पर जादू करे और जादू के कलिमात कुफ्रिया हों तो उसे कत्ल कर दिया जाये। और उसकी तौबा नहीं मानी जायेगी। और उससे तौबा का मुतालबा किया जायेगा। क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जिसके जरीये हुदुद अल्लाह को तोड़ा जाता है। इसलिए अल्लाह तबारक व तआला ने जादू को कुफ्र से तअबीर किया है।

   तर्जुमा : और वोह जिस किसी को जो कुछ भी सीखाते हैं के बेशक हम तुम्हारे लिये आजमाईश हैं तो तुम (जादू सीखकर) कुफ्र ना करो। (सुरा ए बकरा, पारा 1 आयत नं. 102)

यही इमाम अहमद बिन हम्बल, अबी सोर इसहाक इमाम शाफी और अबु हनीफा का कौल है।

4. इमाम इब्ने मजहर रह. फरमाते हैं जब कोई आदमी इस बात का ऐतराफ कर ले के उसने कुफ्रिया कलिमात से जादू किया है तो उसका कत्ल करना वाजिब है। अगर उसने तौबा ना की.हो। इसी तरह अगर कोई यह कह दे के उसने कुफ्रिया कलाम पढ़ कर जादू किया है तो उसका भी कत्ल वाजिब हो जाता है। अगर वोह कलाम कुफ्रिया ना हो तो उसका कत्ल करना जाइज नहीं। अगर जादूगर मरीज को जादू के जरीये कत्ल कर दे तो उसको कत्ल किया जाये जब के जादूगर ने जानबूझ कर कत्ल किया हो। और अगर गलती से कत्ल हो तो इसमें खून बहा देना होगा। (यानी कसास)

5. हाफिज इब्ने कसीर रह. फरमाते हैं के अहले इल्म ने अल्लाह तआला के मन्दरजा जैल हुक्म से इस्तेदलाल किया है। वोह फरमान इलाही यों है "अगर वोह अल्लाह पर ईमान लाते और उससे डरते।" लिहाजा कुछ ने जादूगर को काफिर करार दिया है। और कुछ यह कहते हैं के वोह. काफिर तो नहीं है मगर उसकी सजा गर्दन उड़ा देना है। इस बात की दलील वोह रिवायत है जिसको इमाम शाफी ने और अहमद ने उमर बिन दीनार से रिवायत किया है के उन्होंने बजला बिन अबद को कहते हुए सुना के हजरत उमर बिन खत्ताब रजि. ने फरमान जारी किया है के हर जादूगर और जादूगरनी को कत्ल कर डालो। कहते हैं के उन्होंने तीन या चार जादूगरनियाँ कत्ल की। इब्ने कसीर रह. फरमाते हैं के इसे इमाम बुखारी रह. ने रिवायत किया है।

(बुखारी जिल्द 257/6, फतह)

इब्ने कसीर रहमतुल्लाह फरमाते हैं के सही सनद के साथ रिवायत है जिसको उम्मूल मौमिनिन हजरत हफशा रजि. ने रिवायत किया है उनको उनकी एक कनिज ने जादू किया तो आपके हुक्म से उसको कत्ल कर दिया गया। इमाम अहमद से रिवायत है के नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तीन असहाब से जादूगर के कत्ल का फत्वा साबित है। (तफसीर इब्ने कसीर, 144/1)

किताबी (यहुदी व ईसाई) गैर मुस्लिम जादूगर के बारे में शरई हुक्म

इमाम अबु हनीफा रह. फरमाते हैं चूंकि अहादीस इस सिलसिले में आम हैं लिहाजा जादूगर को कत्ल कर दिया जाये। इसलिए के जादू एक ऐसा जुर्म है जिससे मुसलमान का कत्ल वाजिब होता है। ऐसे ही जिम्मी (यानी गैर मुस्लिम) को कत्ल करना भी यह जुर्म वाजिब करता है के आम कत्ल की तरह। (अलमगनी, 115/10)

इमाम मालिक रह. फरमाते हैं के अहले किताब का जादूगर कत्ल नहीं किया जायेगा मगर उस सूरत में के उसने अपने जादू के जरीये किसी का कत्ल किया हो। और निज फरमाते हैं के अगर उसके जादू की वजह से किसी मुसलमान को नुकसान पहुँचा हो, जिस पर वादा खिलाफी का यकीन ना हो तो भी उसका कत्ल करना हलाल है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लबीद बिन आसम क़ा कत्ल इसलिये नहीं किया था (यह वोह शख्स है जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू किया था) के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी जात के लिए किसी से भी बदला नहीं लिया करते थे। दूसरा आपने इसलिए भी उसका कत्ल नहीं किया था के कहीं यहुद (इसाई) और मुसलमानों के बीच फितनें की आग ना भड़क उठे। (फतह अलबारी, 236/10)

इमाम इब्ने कदामा रह. फरमाते हैं के जादूगर चाहे वोह अहले किताब का (यहुदी या ईसाई) हो सिर्फ जादूगर होने की सूरत में कत्ल नहीं किया जायेगा जब तक के वोह अपने जादू से किसी को कत्ल ना करे, क्योंकि जादू को गालिबन किसी दूसरे का कत्ल करने ही के लिए इस्तेमाल किया जाता है इसीलिए इसको बतौर कसास ही कत्ल किया जायेगा। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लबीद को कत्ल नहीं किया जब के शिर्क जादू से बड़ा गुनाह है इसलिए कत्ल नहीं किया जाता तो जादू के लिए बदर्जा अवला कत्ल नहीं किया जायेगा। (चूंकि शिर्क के बगैर जादू

सीखा नहीं जा सकता, एक तो जादूगर शिर्क का जुर्म करता है और दूसरा हुकूक अलइबाद की पामाली करता है।)

क्या जादू को जादू के जरीये काटना जाइज है?

कतादा रह. फरमाते हैं के मैंने सईद बिन मुसेब से सवाल किया के कोई आदमी बीमार हो या किसी को नामर्दी की शिकायत हो तो क्या उसको झाड़–फूँक करवाई जा सकती है? तो आपने जवाब दिया के उस सूरत में कोई हर्ज नहीं क्योंकि यहाँ पर मकसद इस्लाह है और नफा बख्श चीज की मुमानियत नहीं आई। (बुखारी–232/10, फतह)

इमाम कुरतबी रह. फरमाते हैं के अहले इल्म का इस सिलसिले में इख्तलाफ है के जादू का जादू के जरीये इलाज करवाया जा सकता है? इसको सईद इब्ने मुसेब ने जाइज करार दिया है और यही ख्याल इमाम मजनी का भी है। इमाम शाफई फरमाते हैं के अरबी में झाड़–फूंक किया जाये तो कोई हर्ज नहीं। मगर इमाम हसन बसरी ने इसको नापसन्द करार दिया है। (तफसीर कुरतबी 49/2) इस किताब के लिखने वालेफरमाते हैं के झाड़–फूंक जो है वोह एक किस्म का इलाज है इसके जरीये से जादू जदा या जिन्न जदा का इलाज किया जाता है। इनका भी यही ख्याल है के कोई हर्ज नहीं।

इब्ने कदामा रह. फरमाते हैं के जादू का इलाज करने वाले शख्स कोई कुरआनी आयात से इलाज करता हो या किसी और अजकार से या फिर ऐसे कलिमात से जो के कुफ्रिया ना हों तो कोई हर्ज नहीं। अगर वोह जादू ही के जरीये इलाज करता है तो इमाम अहमद बिन हंबल ने ऐतराज किया है। (अल मगनी, 114/10)

इमाम हाफिज इब्ने हजर रह. फरमाते हैं के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कौल, इमाम अहमद और अबु दाउद ने रिवायत किया है और इब्ने हजर ने इसे हसन करार दिया है। फतहुलबारी (233/10) यानी झाड़–फूँक शैतानी काम है। इस का मतलब बुनियादी तौर पर यों ही है मगर जिसका मकसद नेक हो तो कोई मुजायका नहीं। इब्ने हजर रह. फरमाते हैं के झाड़ फूंक की दो किस्में हैं। अव्वल जाइज झाड फूंक, यह

वोह किस्म है जिसमें कुरआन मजीद के जरीये शरई दावों और अजकार के जरीये जादू का इलाज किया जाता है।

दोम हराम झाड़ फूंक: यह वोह किस्म है जिसके जरीये जादू को जादू से काटा जाता है। यानी जादू को काटने के लिए शैतान को खुश किया जाता है और उनका तकर्रुब और रजा जोई हासिल करके मदद मांगी जाती है। गालिबन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस का इशारा भी इसी तरफ है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई अहादीस में काहिनों और जादूगरों के पास जाने से मना किया है और उसको कुफ्र करार दिया है।

इमाम कुरतबी रह. फरमाते हैं के जिस झाड़ फूंक से जादू का इलाज किया जाता है उसकी दो किस्में हैं।

1. जादू को उसी तरह के जादू से यानी शैतानी अमल से काटा जाये, इस इलाज को हसन बसरी रह. ने नाजाइज करार दिया है।
2. मुबाह दुआओं और जाइज तरीके से झाड़ फूंक किया जाये तो कोई हर्ज नहीं।

क्या जादू सीखना जाइज है?

हाफिज इब्ने हजर रह. फरमाते हैं के फरमाने इलाही है, "इन्नमा नाहनु फितनतुन फला तकफुर" यह आयत इस बात पर दलालत करती है के जादू सीखना कुफ्र है। (फतहुलबारी, 225/10)

इब्ने कदामा रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते है। के जादू का सीखना और सीखाना हराम है और तमाम अहले इल्म इस बात पर मुतफिक्क हैं के जादू का सीखना और सीखाना हराम है। हम्बल औलमा फरमाते हैं के जादूगर काफिर होता है सिर्फ जादू सीखने और सीखाने पर चाहे वोह इसकी हुरमत का अकीदाह रखे या इसके जवाज का।

इमाम अबु अब्दुल्लाह राजी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं के जादू से मुताअल्लिक मआलूमात हासिल करना ना तो बुरा है और ना ही ममनूअ। तमाम मुहक्कि इस बात पर मुतफिक्क हैं के इल्म बजात खुद अच्छा है और

निज अल्लाह तआला का कौल है:–

तर्जुमा : क्या इल्म वाले और बेइल्म बराबर हो सकते हैं?

इसलिए के अगर जादू का इल्म ना हो तो हम जादू और मोअज्जजे में फर्क कैसे कर सकते हैं? इल्म मोअज्जजे होने की बिना पर वाजिब है और जिस चीज पर वाजिब का इल्म हासिल करना जरूरी हो तो उसका तकाजा है के जादू के मुताल्लिक मालूमात हासिल करना जरूर वाजिब है और जो चीज जरूरी है वोह बुरी और हराम कैसे हो सकती है?

इब्ने कसीर रहमतुल्लाह फरमाते हैं के इमाम राजी का यह जो नजरिया है वोह कई ऐतबार से काबिले ऐतराज है। अव्वलन उनका कहना है के जादू सीखना बुरा नहीं है, यानी अगर उनका मकसद यह है के अकलन बुरा नहीं है तो उनके मुखालफिन मुअतजला इसको मना करार देते हैं और अगर उनका मकसद यह है के शरअन बुरा नहीं है तो जवाब मन्दरजा जैल नसूस से दिया जा सकता है।

फरमाने इलाही : तर्जुमा : और उन्होंने इस चीज की पैरवी की जिसको सुलेमान अलैहिस्सलाम के दौर में शैतान पढ़ा करते थे। इस आयत में जादू को सीखने से मना किया गया हैं।

सही बुखारी को झुटलाया। यह हदीस पहले भी गुजर चुकी है।

कुतुब सुनन में है, तर्जुमा : जिसने गिरह लगायें और उनमें फूंका उसने जादू का इरतकाब किया।

और अल्लामा राजी का यह फरमाना के जादू ममनूअ नहीं है। इस पर (तमाम मुहक्किन मुतफिक्क हैं के कैसे ममनूअ नहीं हैं) बावजूद यह के हम इस सिलसिले में अहादीस और आयत पेश कर चुके हैं।

इसके खिलाफ कोई भी वजनी दलील नहीं है फिर जादू दीगर उलूम में शुमार करना और अल्लाह तआला के फरमान पर दलील बनाना सही नहीं है। इसलिए इस आयत में शरई इल्म के मानने वाले औलमा की तारीफ की गई है। (ना के जादूगरों की)

यह कहना के मोअज्जजे को पहचानने के लिए जादू का इल्म हासिल करना जरूरी है, मुनासिब नहीं। इसलिए के सब से बड़ा मोअज्जजा

(निशानी) तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुरआन है और जादू और मोअज्जजे का आपस में कोई वास्ता ही नहीं है।

निज यह एक जरूरी बात है के सहाबा किराम रजियल्लाहु और ताबेईन और तमाम मुसलमान मोअज्जजे को जानते थे और मोअज्जजा और दूसरे उलूम में तमीज करना भी जानते थे बल्कि वोह जादू से कोई भी वास्ता नहीं रखते थे। (तफसीर इब्ने कसीर, 145/1)

अल्लामा अबु हयान अपनी किताब (बहर अलमुहित) में रकम तराज हैं। कहते हैं के जहां तक जादू के सीखने का ताल्लुक है तो अगर इस में गैर अल्लाह की ताअजीम होती है यानी शैतान और सितारों की पूजा होती है और अल्लाह तआला के काम को उनकी तरफ मनसूब किया जाता है तो यह बिला झिझक कुफ्र है, लिहाजा जादू का सीखना और उस पर अमल करना हराम है।

इस सारे कलाम का मुख्तसर खुलासा यह है के जादू किसी भी किस्म का हो, चाहे उसका ताल्लुक खेल और तमाशा ही क्यों ना हो हर हाल में नाजाइज है।

"करामात व मोअज्जजात और जादू में फर्क"

अल्लामा माजरी फरमाते हैं जादू मोअज्जजात और करामात में फर्क यह है के जादू में कुछ अकवाल व अफआल की एक खास मश्क के जरीये जादूगर अपना मकसद हासिल करता है जब के करामात का वाक्या गालिबन इत्तेफाकी होता है। लेकिन जहाँ तक मोअ़ज्जजे का ताल्लुक है वोह करामात पर इसलिए फोकियत रखता है के मुअज्जजे में फरीक मुखालिफ को चैलेंज किया जाता है।

हाफिज इब्ने हजर रहमतुल्लाह ने इमाम हरमेन के वास्ते से नकल किया है के तमाम अहले इल्म इस बात पर मुतफिक्क हैं के जादू सिर्फ फासिक के हाथ से ही जाहिर होता है और करामात का जहुर किसी फासिक के हाथ से नहीं होता।

निज इब्ने हजर रहमतुल्लाह फरमाते हैं के यहाँ आदमी को थोड़ा सा होशियार रहना चाहिये के आदत के खिलाफ काम का होना सच्चे मौमिन

से होता और वही करामात है वरना जादू। इसलिए के जादू शैतान से होता है।

नोट : कभी ऐसा भी हो सकता है के कोई आदमी जादू का अलिफ, बे भी नहीं जानता हो और शरअत का पाबन्द भी ना हो बल्कि उल्टा गुनाहों के काम क़रता हो या कब्र परस्त और बिदअती हो तो भी उसके हाथ पर आदत के खिलाफ चीजें जाहिर होती हैं। इसका जवाब यह है के शैतान की तरफ से मदद होती है ताके गैर शरई तरीके को लोगों के लिए पुरकशिश बनायें और लोग इस सुन्नत को छोड़कर उस तरीके की पैरवी करें। और यह बहुत मशहूर है। बिल खसूस जब ऐसा आदमी अहले बिदअत या तास्सुफ के लिए किसी तरीके का सरबराह हो।

छटा बाब

जादू का तोड़

इस बाब में इंशा अल्लाह हम जादू की तासीरात के ऐतबार से उसके अकसाम पर मुख्तसर सी रोशनी डालेंगे और हर किस्म का इलाज कुरआन व सुन्नत से तजवीज करेंगे और मैं मुनासिब समझता हूँ के आपको इस बात की जानकारी दूँ के इलाज के ऐसे तरीके हैं जो आपको कुरआन व सुन्नत में मुस्तकील तौर पर एक जगह नहीं मिलेंगे बल्कि वोह अल्लाह तबारक व तआला के इस फरमान में शामिल हैं।

तर्जुमा : और हमारी नाजिल करदा कुरआनी आयात मौमिनीन के लिए रहमत व शिफा का जरीया हैं। (इससे आम शिफा मुराद है।)

एक दूसरी दलील जो ज्यादा वाजेह है। हजरत आईशा रजि. से रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास आये, उस वक्त उनके करीब एक औरत बैठी हुई थी जो उनका इलाज कर रही थी और झाड़ फूंक कर रही थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह की किताब के जरीये इसका इलाज करो।"

अगर आप गौर करेंगे तो इस हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने आम कुरआन से इलाज करने का हुक्म दिया है और किसी सूरा या कोई खास आयत करीम नहीं कहा। तो मआलूम यह हुआ के सारा कुरआन शिफा है। इल्मी तजुर्बे भी इस बात पर शाहिद है के कुरआन सिर्फ जिन "हसद" और जादू ही का इलाज नहीं, बल्कि वोह हर चीज का इलाज है। हत्ता के आजा जिस्मानी की बीमारियों के लिए भी शिफा है।

दीन के सिलसिले में कुछ ज्यादा गैरतमन्द नौजवान चाहते हैं के हम हर आयत पर जिससे हम झाड़ फूंक करें एक मुस्तकिल दलील लायें और उनका कहना है के हम सिर्फ उसी आयत से इलाज करें जो जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इलाज किया है। इसलिए नौजवानों की जानकारी के लिए सही बुखारी की मन्दरजा जैल हदीस पैश कर रहा हूँ:—

हदीस : हजरत अबु सईद खुदरी रजि. से रिवायत है के वोह सहाबा के साथ थे और उनका गुजर अरब के एक वादी से हुआ। इस वादी वालों से उन्होंने कहा के उनकी दआवत करें तो वादी वालों ने उनकी दआवत करने से इनकार किया। इसके बाद कबिले के सरदार को किसी जहरीले जानवर ने काट लिया तो वहाँ के लोग भागते हुए सहाबा के पास आये और पूछा के तुम्हारे पास कोई ऐसा शख्स है जो झाड़ फूंक जानता हो? तो अबु सईद खुदरी रजि. ने कहा के हाँ। लेकिन मैं इस वक्त झाड़ फूंक नहीं करूंगा। जब तक तुम लोग इसका मुआवजा तय ना कर लो। मुआवजा (कीमत) तय होने के बाद आपने उस मरीज पर दम किया, मरीज शिफायाब (अच्छा) हो गया। उसके बाद वादी वालों ने सहाबी रसूल को मुआवजे के तौर पर बकरियाँ दी, जिन्हें लेकर सहाबा किराम रजियल्लाहु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ लाये और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारा वाक्या सुनाया तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबु सईद खुदरी रजि. से पूछा के तुम ने कैसे उस पर झाड़ फूंक किया तो उन्होंने बताया के सूरा फातेहा पढ़ कर। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया के तुम्हें कैसे पता के इस सूरा से इलाज भी किया जाता है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस फअल पर ऐतराज नहीं किया बल्कि उसको मुस्तहसीन (अच्छा) करार दिया।

इस हदीस से वाजेह तौर पर पता चलता है के अबु सईद खुदरी रजि. ने किसी नस सरीह के ना होते हुए भी झाड़ फूंक किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बरकरार रखा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झाड़ फूंक के कुछ आम काइदे वाजेह किये हैं। सही मुस्लिम में है के कुछ लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोग ग्वांरपन में झाड़ फूंक किया करते थे। आपने फरमाया, उन मंत्रों को मेरे सामने लाओ। झाड़ फूंक में कोई हर्ज नहीं, बशर्ते के उन मत्रों में कुफ्रिया अलफाज ना हों। इस हदीस से यह साबित होता है के झाड़ फूंक जाइज है चाहे वोह कुरआन व हदीस से हो या दुआओं से। हत्ता के जमाना गवांरपन (जाहिलियत) के तरीकों से बशर्ते के उसमें शिर्क ना हो।

पहली किस्म मियाँ-बीवी में जुदाई डालने वाला जादू

अल्लाह तआला का फरमान है:-

फरमाने इलाही : तर्जुमा : उन लोगों ने इस चीज की पैरवी की जिसे शैतान सुलेमान के दौर हुकूमत में तिलावत किया करते थे। हालांकि सुलेमान ने कभी कुफ्र नहीं किया बल्कि शैतान कुफ्र किया करते थे। जो लोगों को जादू सीखाते थे और बाबिल में हारूत और मारूत पर जो नाजिल किया गया है, उसको सीखते थे। और वोह दोनों फरिश्ते किसी को भी कुछ ताअलीम नहीं देते थे, यहाँ तक के वोह लोगों को खबरदार करते थे के हम तुम्हारे लिए आजमाईश हैं, लिहाजा तुम कुफ्र मत करो, पस वोह उन से ऐसी चीजे सीखते थे जिन से औरत और मर्द के दरमियान अलैहदगी (दूरी) डाल दी जाती है और वोह लोग (जादू सीखने वाले) बगैर हुक्म इलाही के किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते और वोह लोग सीखते थे (वोह इल्म) जो उनको नुकसान पहुँचाता, फायदा नहीं और हालांकि उन्हें यह भी मालूम होता था के जो भी उसे खरीदेगा, आखिरत में उसका कोई हक नहीं और उन्होंने जो भी किया अच्छा नहीं किया अगर वोह सब कुछ जानते हैं।

(सूरा बकरा, आयत नं. 102)

हजरत जाबिर रजि. फरमाते हैं के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फदमाया के इब्लीस अपने तख्त को पानी में रखता है फिर अपने लश्कर को रवाना करता है और सब से ज्यादा उसका लाडला वोह शैतान होता है जो सबसे ज्यादा झगड़ा करवाता है।

उनमें से कुछ शैतान अपने सरदार के पास वापिस आते हैं और कहते हैं के हमने ऐसा ऐसा किया तो सरदार कहता है के तुमने कोई भी कारगुजारी अन्जाम नहीं दी। फिर सरदार के पास एक छोटा शैतान आता है तो वोह कहता है मैंने फलां शख्स की जान उस वक्त नहीं छोड़ी, यहाँ तक के उन दोनों (मियाँ–बीवी) के दरमियान जुदाई डाल दी। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया के सरदार शैतान उस छोटे शैतान की इज्जत अफजाई करता है यानी बड़ी हौसला अफजाई करता है और कहता है के तुमने आज सबसे बड़ा काम किया है। एक रिवायत में है के बड़ा शैतान उस छोटे शैतान को अपने गले लगा लेता है। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया)

जुदाई डालने वाले जादू की तारीफ

यह जादू मियाँ–बीवी के दरमियान या दो दोस्तों के दरमियान दुश्मनी डालने के लिए किया जाता है। इसकी कुछ किस्में हैं:–

1. माँ और बेटे में दुश्मनी डालना।
2. बेटे और बाप में दुश्मनी डालना।
3. दो भाईयों के दरमियान दुश्मनी डालना।
4. दोस्तों के दरमियान दुश्मनी डालना।
5. कारोबार में दो शरीकों (हिस्सेदारों) में दुश्मनी डालना।
6. बीवी और शौहर में दुश्मनी डालना। यह किस्म सबसे खतरनाक और आम बात है।

जुदाई डालने वाले जादू की अलामतें (असर)

1. हालात का अचानक मुहब्बत से दुश्मनी में तबदील हो जाना।

2. दोनों के दरमियान शक व शुबा का पैदा हो जाना।
3. एक दूसरे में अदम ऐतमाद का पैदा हो जाना।
4. इख्तलाफी मसाईल को राई का पहाड़ बनाना।
5. बीवी की सूरत को मर्द की निगाहों में गिरा देना और मर्द की सूरत को औरत की निगाहों में गिरा देना। जिसकी वजह से बीवी चाहे लाख खुबसूरत और गुणों वाली हो मगर वोह शौहर की निगाहों में इन्तहाई बदसूरत हो जाती है और उसी तरह बीवी की निगाहों में मर्द भी।

हकीकत यह है के जिस शैतान की डयूटी इस तरह के जादू पर लगाई जाती है वोह शैतान उस औरत के चहरे पर बदसूरती का असर दिखाता है। इसके लिए औरत अपने शौहर को इन्तहाई खौफनाक मंजर (डरावनी शक्ल) में नजर आती है।

6. जादू जदा आदमी दूसरे के हर काम को नापसन्द करने लगता है।
7. जादू जदा आदमी उस मकाम से और उस जगह से नफरत करने लगता है जहाँ उसका फरीक मुखालिफ रहता है।

आप इस बात को महसूस करेंगे के खाविन्द अपने घर से बाहर इन्तहाई खुश दिली का मुजाहिरा करता है मगर जब घर में दाखिल होता है तो इन्तहाई तंगदिली महसूस करने लगता है। हाफिज इब्ने कसीर रह. फरमाते हैं के औरत, मर्द में तफरीक का सबब जादू के जरीये एक दूसरे को यह ख्याल होता है के हर एक दूसरे को बदसूरत और बदखलक समझने लगते हैं। (तफसीर इब्ने कसीर 144/1)

जादू का इलाज

दो आदमियों में जुदाई डालने के लिए जादू कैसे किया जाता है?

जब कोई शख्स जादूगर के पास जाकर कहता है के फलां शौहर और बीवी में जुदाई डाल दें तो जादूगर उस शख्स का नाम और उसकी माँ का नाम पूछता है, इसके अलावा जिस पर जादू किया जाना होता है, उस

शख्स का कोई कपड़ा, टोपी वगैरह मांगता है। अगर उस शख्स से कोई चीज हासिल करना मुश्किल हो तो फिर उसके उस रास्ते पर जादू किया हुआ पानी डाल दिया जाता है जहां से उस शख्स का आना जाना होता है और जैसे ही वोह शख्स उस जगह के ऊपर से जाता है जहां पानी गिराया हुआ होता है तो फौरन ही उस पर जादू असर करना शुरू कर देता है। या यूँ भी किया जाता है के खाने पीने की चीजों पर जादू कर के उसको खिला दी जाती है।

इलाज : इस जादू के इलाज के लिए तीन तरीकों से गुजरना पड़ता है:–

1. इलाज से पहले उस घर में ईमानी फिजां का पैदा करना या हम्वार करना जरूरी है, मसलन सबसे पहले उस घर को हर किस्म की तस्वीर (फोटो) से पाक किया जाये ताके रहमत के फरिश्ते उस घर में दाखिल हों।
2. मरीज के कपड़े यानी चादर वगैरह और तावीज वगैरह हों तो उन्हें जला दिया जाये।
3. उस घर को हर किस्म के गानों और मोसिकी (बाजों) से पाक किया जाये।
4. उस घर में अहकाम शरई की मुखालफत ना की जाये मसलन कोई भी शख्स सोना पहने हुए ना हो और ना कोई औरत बेपरदा रहे और ना ही कोई आदमी इलाज के दौरान सिगरेट, हुक्का वगैरह इस्तेमाल करे।
5. मरीज और उसके घरवालों को सही अकीदे से मालूमात कराया जाये ताके गैर अल्लाह से ताअल्लुक खत्म हो जाये।
6. मरीज की तसखीस के सिलसिले में मरीज से कुछ सवालात किये जाये मसलन क्या तुम अपनी बीवी को कभी बदसूरत या कबीह हालत में देखते हो? क्या मामूली बातों में तुम्हारे दरमियान इख्तलाफात पैदा होते हैं? क्या घर से बाहर तुम खुश रहते हो? क्या जैसे ही तुम घर में दाखिल होते हो तो तंग दिल और परेशानी महसूस करते हो?

क्या जमाअ या मुबाशरत के दौरान तुम दोनों में कोई उकताहट महसूस करता है? क्या नींद में तुम दोनों में से किसी एक को कोई डरावने ख्वाब दिखाई देते हैं या बेचैनी महसूस करते हो?

इलाज करने वाले को चाहिए के मन्दरजा बाला सवालात में दो सवालात भी सही हों तो इलाज शुरू कर देना चाहिए।

7. इलाज शुरू करने से पहले खुद भी वजु करें और दूसरों को भी वजु कराये।

8. अगर मरीज औरत हो तो फिर उसका इलाज उस वक्त तक ना करें जब तक के वोह बावकार अन्दाज में पर्दा ना कर ले। ताके इलाज के दौरान बेपर्दगी ना हो।

9. किसी ऐसी औरत का इलाज ना किया जाये जो किसी गैर शरई लिबास में हो, मसलन चहरे पर पर्दा ना हो, खुशबू लगाये हुए हो, या नाखून पर नैल पालिश लगाये हुए हो जिससे काफिर औरतों की बराबरी होती है।

10. औरत का इलाज उनके महरम (शौहर, बाप या भाई, वगैरह) की मौजूदगी में ही किया जायें।

11. औरत के महरम के अलावा कोई दूसरा शख्स मौजूद ना हो।

12. कामयाबी के लिए अपने को हर तरह से बरी किया जाये और अल्लाह तआला से मदद मांगी जाये।

इलाज का दूसरा मरहला (सेज) :

ईलाज करने वाला अपने हाथ को मरीज के सर पर रखे और यह आयतें तरतील के साथ मरीज के कान के करीब पढ़ें।

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। मिन हमजिही व नफखिही व नफसिही, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ–लमीन0 अर्रहमानिर्रहीम0 मालिकि यौमिद्दीन0 इय्या–क नअबुदु व इय्याका नस्तईन0 इहिदनस सिरातलमुस्तकीम0 सिरातल्लजी–न अनअम–त अलैहिम0 गैरिल मग्जूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन0 (सूरा ए फातेहा, पारा 1)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

1. तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूँ शैतान मरदूद के शर से, उसके वसवसे से और उसकी फूंक से। शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत महरबान और निहायत रहम वाला है। तमाम तआरीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है जो बहुत ही रहम करने वाला है और निहायत ही महरबान है। कयामत के दिन का मालिक है। हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। ऐ हमारे रब हमें सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कर, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तेरा इनआम व इकराम हुआ है। ना के उन लोगों का जिन पर तेरा गजब हुआ हो और ना गुमराहों का।

"अलिफ–लाम–मीन0 जालिकलकिताबु ला–रै–ब, फीहि हुदल्लिलमुत्तकीन0 अल्लजी–न युअमिनु–न बिलगैबि व युकीमूनस्सला–त व मिम्मा र–जकना हुम युनफिकून0 वल्लजी–न युअमिनू–न बिमा उन्जि–ल इलै–क व मा उन्जि–ल मिन कबलिक व बिल आखिराति हुम युकिनुन0 उलाइ–क अला हुदम मिर्रब्बिहिम व उलाइ–क हुमुल मुफलिहून0" (सुरा ए बकरा, पारा 1 आयत नं. 1 से 5 तक)

तर्जुमा : शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहम करने वाला और निहायत रहीम है। अलिफ लाम मिम इस किताब में कोई शक नहीं, परहेजगारों के लिए हिदायत हैं। जो लोग अनदेखी चीजों पर ईमान लाते हैं और नमाज की पाबन्दी करते हैं और हमारी (अल्लाह तआला की) अता करदा चीजों में से कुछ उसकी राह में खर्च करते हैं और वोह लोग जो ईमान लाये इस कुरआन पर जो हमने तुम पर उतारा और उन किताबों पर जो इससे पहले नाजिल की गई और आखिरत के रोज पर यकीन रखते हैं। यही वोह लोग हैं जो अपने रब की हिदायत पर हैं और यही लोग फलाह पाने वाले और कामयाब होने वाले हैं।

"वत्तबअु मा तत्लुश्शयातीनु अला मुल्कि सुलैमा–न, व मा क–फ–र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती–न क–फ–रू युअल्लिमूनन्नासस–सिहर व मा उन्जि–ल अ–लल म–ल कईनि बिबाबि–ल हारू–त व मारूत व मा युअल्लिमानि मिन अ–हदिन हत्ता यकूला इन्नमा नाहनू फित्नतुन फला तकफुर, फ–य–त अल्लमू–न मिन्हुमा मा युफर्रिकू–न बिही बइनल मर–इ

व जवजिही, व मा हुम बिजाररी–न बिही मिन अहदिन इल्ला बिइज्निल्लाहि, व य–त अल्लमू–न मा यजूररूहुम व ला यन्फअु हुम व–लकद अलिमू ल–मिनश्तराहु मा लहु फिल्आखिरति मिन खलाकिन, व ल बिअ–स मा शरव बिही अन फु–स हुम, लव कानू यअ–लमून0

(इसको ज्यादा बार बार पढ़ें, सूरा ए बकरा, आयत नं 102)

तर्जुमा : और उस चीज के पीछे लग गये जिसे शयातीन (हजरत) सुलैमान की हुकुमत में करते थे। सुलैमान ने तो कुफ्र न किया था बल्कि यह कुफ्र शैतानों का था वोह लोगो को जादू सिखाया करते थे और बाबिल में हारूत मारूत दो फरिश्तों पर जो उतारा गया था वोह दोनों भी किसी शख्स को उस वक्त तक नहीं सिखाते थे जब तक यह न कह दे के हम तो एक आदमाईश हैं तो कुफ्र न करो। फिर लोग उनसे वोह सिखते थे जिससे मियां और बीवी में जुदाई डाल दे और दरअसल वोह बगैर अल्लाह तआला की मर्जी के किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकते। ये लोग वोह सिखतेहैं जो इन्हें नुकसान पहुंचाये। और नफा न पहुंचा सके और वोह बायकीन जानते हैं कि उसके लेने वाले का आखरत में कोई हिस्सा नहीं और वोह बदतरीन चीज है जिसके बदले वोह अपने आपको बेच रहे हैं। काश कि यह जानते होते।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। इन्ना फी खल्किस्समावाति वलअरदि वखतिलाफिल्लइलि वन्नहारि वल्फुल्किल्लती तज्री फिल्बहरि बिना यन्फअुन्ना–स व मा अन जल्ललाहू मिनस्मा–इ मिम्मा–इन फ–अहया बिहिल्अर–ज बअ–द मवतिहा व बस–स फीहा मिन कुल्लि दाब्बतिव व तसरीफिररियाहि वस्सहाबिल मुसख्खरि बइनस समाई वल अरजि ल–आयातिल लिकवमिय्यअकिलून0 (सूरा ए बकरा, पारा 2 आयत नं. 164)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से और तुम सब का माबूद एक ही है, इसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं और वोह निहायत ही रहम वाला और महरबान है। यकीनन आसमानों और जमीन के पैदा करने में और दिन व रात को आगे पीछे लाने में और उन समुन्द्री जहाजों में जो लोगों के लिए समन्दर का सीना चीर कर नफा बख्श चीजे मुहैया करते हैं। और जो कुछ अल्लाह तआला ने आसमानों से

बारिशों की सूरत में नाजिल किया और उसके जरीये बंजर (सूखी) जमीन और नाकारा जमीनों को सर सब्ज और जरखेज बना दिया और उन में हर किस्म के जानवर फैलाये और हवाओं को बदलने में और आसमान व जमीन के दरमियान रवां दवां बादलों में। यकीनन अकल रखने वालों के लिए (अल्लाह तआला की बन्दगी पर) बेशुमार जिन्दा दलीलें और नाकाबिल तदरीद निशानियाँ मौजूद हैं।

" अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व, अलहय्युल कय्यूमु, ला तअखुजुहू सि–नतुव वला नौमुन, लहू मा फिस्समावाति व मा फिलअरजि, मन जल्लजी यश्फअु अिन्दहू इल्ला बि–इज्निही, यअ लमु मा बै–न ऐदीहिम व मा खलफहुम, व ला युहीतु–न बिशैइम्मिन अिल्लिही इल्ला बिमा शा–अ, वसि–अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर्ज व–ला यउदुहू हिफजुहुमा, व हुवल अलिय्युल अजीम०

(सूरा बकरा, आयत नं. 255)

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। अल्लाह तआला ही माबूद बरहक है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। जो जिन्दा और सबका थामने वाला है, जिसे न उंघ आये न नींद। उसकी मिल्कियत में जमीन व आसमान की तमाम चीजें हैं। कौन है जो उसकी इजाजत के बगैर उसके सामने सिफाअत (सिफारिश) कर सके वोह जानता है, जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है और वोह उसके इल्म में से किसी चीज का अहाता नहीं कर सकते, मगर यह के किसी चीज का इल्म खुद ही बन्दों को वोह देना चाहे। उसकी कुर्सी आसमानों और जमीन का अहाता किये हुए है। आसमानों और जमीन की हिफाजत उस पर जर्रा बराबर भी गरां (मुश्किल) नहीं है। वोह बुलन्द, बुजुर्ग और अजीमतर है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम नर्र रसूलू बिमा उनजि–ल इलैहि मिर्रब्बिही वलमुअमिनून, कुल्लुन आ–मना बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रूसूलिही ला नु–फररीकु बै–न अहदिम मिर रूसूलिही, व कालू समिअ–ना व अ–तअ–ना गुफरा–न–क रब्बना व इलैइकल मसीर० ला युकल्लिफुल्लाहु नफसन इल्ला वुसअहा लहा मा क–स–बत व अलैइहा मक–त–स–बत रब्बना ला तुआखिज्ना इन–न–सीना अव अखतअना,

रब्बना व ला तहिमिल अलईना इस्रन कमा हमलतहू अलल लजीना मिन कब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिलना मा–ला ता क–त–ल–ना बिही व अफू अन्ना वगफिर लना वर हम्ना अन–त मवलाना फनसुरना अलल कवमिल काफिरीन0 (सूरा बकरा, आयत नं. 285–286)

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। रसूल ईमान लाया उस चीज पर जो उसके रब की तरफ से उस पर नाजिल की गई हैं और उसी तरह तमाम मौमिन भी ईमान लाये अल्लाह तआला पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और उसके रसूलों में किसी किस्म की तफरीक नहीं करते हैं और मौमिन पुकार उठे हमने सुन लिया (अपने रब का पैगाम) और हमने फरमां बरदारी की, ऐ हमारे रब तू हमारी मगफिरत फरमां। हम तेरे ही तरफ पलट कर आने वाले हैं। अल्लाह तआला किसी नफस पर भी उसकी ताकत से बढ़कर बोझ नहीं डालता, अगर कोई अमल करता है तो उसका फायदा उसको है। और अगर कोई नहीं करता है तो नुकसान भी उसी को है। ऐ हमारे रब, तू हमारी भूल और गलती पर हमारी गिरफ्त ना कर। ऐ हमारे परवरदीगार जिस तरह तूने हमसे पहले वाली कौमों को आजमाईश में डाला, उस तरह हमको आजमाईश में ना डाल, ऐ हमारे रब हमको ऐसी आजमाईश में ना डाल जिसकी हमारे अन्दर ताकत नहीं है, हमें माफ फरमां, और हमारी मगफिरत फरमां और हमारे ऊपर रहम फरमां, तू हमारा मौला है, पस काफिरों पर हमें फतह व नुसरत अता फरमा।

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। शहिद्ल्लाहु अन्नहू ला इला–ह इल्ला हु–व वल्मला–इकतु व उलुलअिल्मि का–इमम्–बिलकिस्त, ला इला–ह इल्ला हुवल–अजीजुल हकीम0 इन्नद्दी–न अिन्दल्लाहिल्–इस्लामु व मख्–त–ल–फल्लजी–न उतुलकिता–ब इल्ला मिम्बअ–दि मा जा–अ हुमुलअिल्मु बग्यम्बैनहुम व मय्यक्फुर बि आयातिल्लाहि फ इन्नल्ला–ह सरीअुल हिसाब0 (सूरा आले इमरान आयत नं. 18–19)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। अल्लाह तआला इस बात की गवाही देता है के उसके अलावा कोई भी इबादत के काबिल और मआबूद नहीं, फरिश्ते और अहले इल्म इन्साफ

पर कायम हैं। अल्लाह तआला के अलावा कोई भी माबूद नहीं है। वोह गालिब है और हिकमत वाला है। अल्लाह के नजदीक सही और दुरूस्त दीन इस्लाम ही है और अहले किताब ने आपस में दुश्मनी और सरकशी की बिना पर उस वक्त इख्तेलाफ किया जब के उनके पास हकीकी इल्म आ चुका था और जो शख्स भी अल्लाह तआला की आयात का इन्कार करता है तो उससे अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। इन्–न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी ख–ल–कस्समावाति वलअर–ज फी सित्तति अय्यामिन सुम्मस्तवा अ–ललअर्शि, युग्शिलैलन्नहा–र यत्लुबुहू हसीसंव–व वश्शम–स वल्क–म–र वन्नुजू–म मुख्सखखरातिम–बिअम्रिही, अला लहुल्खल्कु वल–अम्रू, तबा–र–कल्लाहु रब्बुल आलमीन0 उदअू रब्बकूम त–जर्रूअंव–व खुफ्य–तन, इन्नहू ला युहिब्बुल–मुअ–तदीन0 व ला तुफसिदू फिलअर्जि बअ–द इस्लाहिहा वदअूहु खौफव–व त–म–अन, इन–न रहमतल्लाहि करीबुम–मिनल्मुहिसनीन0 (सूरा ए आराफ, आयत नं. 54 से 56 तक)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर मुस्तवी हुआ, रात से दिन को औझल (ढ़ांप) कर देता है और वोह रात, दिन को अपने आंचल में छिपा लेती है। वोह जात जिससे सूरज और चांद और सितारों को पैदा किया है, यह सब चीजें उसी के हुक्म के ताबे में हैं, खबरदार हर चीज को पैदा करने वाला वही है और तमाम मामलात उसके हाथ में हैं। अल्लाह तआला बहुत बाबरकत है और तमाम जहानों का रब और पालने वाला है। ऐ लोगों! तुम अपने परवरदीगार को आजज्जी और पस्त आवाज से गिड़गिड़ा कर पुकारो क्योंकि अल्लाह तआला हद से तजावुज करने वालों को पसन्द नहीं करता है। ऐ लोगों तुम जमीन में फसाद (झगड़ा) बरपा करते ना फिरो। (जब के दीन इस्लाम ने) आकर इसकी इस्लाह कर दी है और तुम अल्लाह रब्बुल आ लमीन को खौफ और उम्मीद से पुकारो क्योंकि यकीनन अल्लाह

तआला की रहमत अच्छे काम करने वाले बन्दों के लिए बहुत ही करीब है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अवहईना इला मूसा अन अल्कि असाक, फइजा हि–य तल्कफु मा यअफिकून 0 फ व–क–अल–हक्कु व ब–त–ल मा कानू यअ–मलून 0 फगुलिबू हुनालि–क वन्कलबू सागिरीन 0 व उल्कियस्स–ह–रतु साजिदीन 0 कालू आमन्ना बिरब्बिल आ लमीन0 रब्बि मूसा व हारून 0 (सूरा ए आराफ, पारा 9, आयत नं. 117 से 122 तक)

जो शख्स भी इन आयात की तिलावत बीमारी को दूर करने के लिए करे तो उसको चाहिए के "व उल्कियस्स–ह–रतु साजिदीन" को कम से कम 30 बार पढ़े।)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। और हमने मुसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के आप अपनी लाठी को जमीन पर डाल दें। तो क्या देखते हैं के वोह लाठी जादूगरों के जादू को निगल रही है। पस हक की फतह हुई और जादूगर जो कुछ करते थे वोह नाकाम हुए तो उस मौके पर वोह लोग (यानी जादूगर) शिकस्त खाकर इन्तहाई जिल्लत के साथ मैदान छोड़कर भाग गये और तमाम जादूगर सिज्दे में गिर पड़े और पुकार उठे के हम दोनों जहां के परवरदीगार पर ईमान लाये जो मुसा और हारून का रब है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। फलम्मा अल्कव का–ल मूसा मा जिअतुम बिहिस्सिहरू, इन्नल्ला–ह सयुब्तिलूहू इन्नल्ला–ह ला युस्लिहु अ–म–लल्मुफसिदीन 0 व युहिक्कुल्लाहुल–हक–क बिकलिमातिही व लव करिहल–मुज्रिमून0 (सूरा ए युनूस, आयत नं. 80 व 81)

(इन आयात में से इन्नल्ला–ह सयुब्तिलूह" को बहुत ज्यादा बार पढ़ें)

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मरदूद के शर से। मुसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा जो कुछ भी लोगों ने किया है वोह सिर्फ जादू है और यकीनन अल्लाह तआला उसे खत्म कर देगा और अल्लाह तआला फसाद पैदा करने वालों की इस्लाह नहीं करता। और हक जो है वोह अपनी तमाम तर ताबना के साथ फतहमन्द हुआ अगरचे मुजरिमीन को कितना ही नागंवार गुजरें।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। उन्होंने जो कुछ भी किया वोह सिर्फ जादूगर की चाल के सिवा कुछ नहीं और जादूगर कभी भी कामयाब नहीं हो सकता, चाहे वोह कुछ भी कर ले। (सूरा ताहा, आयत नं. 69, इस आयत की बार बार तिलावत करें)

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। अ–फ–हसिब्तुम अन्नमा ख–लक्ना कुम अ–ब–संव–व अन्नकुम इलईना ला तुर्जअून 0 फ–त–आलल लाहुल मलिकुल हक्कु, ला इला–ह इल्ला हु–व, रब्बुल अर्शिल करीम 0 व मय्यदअु म–अल्लाहि इलाहन आख–र ला बुर्हा–न लहू बिही फइन्नमा हिसाबुहू अिन–द रब्बिही, इन्नहू ला युफ्लिहुल काफिरून 0 व कुर–रब्बिगफिर वरहम व अन–त खईरूर – राहिमीन 0 (सूरा ए मौमिन, पारा 18 आयत नं. 115 से 118 तक)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। क्या तुम्हारा यह ख्याल है के हमने तुम्हें बेफायदा ही पैदा किया और तुम हमारे पास वापिस लौट कर नहीं आओगे? पस बुलन्द व बुजुर्ग है रब्बुल आ लमीन जो हकीकी बादशाह है, उसके अलावा कोई भी मआबूद नहीं है और वोह अर्श करीम का रब है और जो शख्स अल्लाह तआला के अलावा किसी दूसरे मआबूद को पुकारता है हालांकि उसके पास कोई भी (उसे पुकारने पर) दलील नहीं है, बेशक अल्लाह तआला उसका हिसाब लेकर रहेगा और काफिर कभी कामयाब हो नहीं सकते। और आप (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कह दीजिये के ऐ मेरे परवरदीगार मेरी बख्शीश फरमां और रहम फरमां के तू सबसे बहतरीन रहम करने वाला है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम। वस्साफ्फाति सफफन0 फज्जाजिराति जज्रन0 फत्तालियाति जिक्रन् 0 इन–न इलाहकुम ल–वाहिद 0 रब्बुस्समावाति वलअर्जि व मा बईनहुमा व रब्बुल–मशारिक 0 इन्ना जय्यन्नस्समा–अद्दुन्या बिजीनति–निल–कवाकिब 0 व हिफजम–मिन कुल्लि शैतानिम्–मारिद 0 ला यस्सम्मअू–न इलल्–म–ल–इल–अअ–ला व युकजफू–न मिन् कुल्लि जानिब 0 दुहूरंव–व लहुम अजाबु व्वासिब 0 इल्ला मन् खतिफल–खत्फ–त फ–अत्ब–अहू शिहाबुन साकिब 0 (सूरा ए साफफात, आयत नं 1 से 10)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है और कसम है सफ बांधने वाले फरिश्तों की जो सख्त डाटने वाले फरिश्तों की और अल्लाह तआला का जिक्र तिलावत करने वालों की। यकीनन तुम्हारा मआबूद सिर्फ अल्लाह ही है। आसमानों और जमीन का परवरदीगार और आसमानों और जमीन के दरमियान जो कुछ है उसका रब मशारिकों का रब। बेशक हमने आसमान दुनिया को सितारों से खुबसूरत किया है और हर सरकश शैतान से महफूज कर दिया है। वोह आसमानों की बातें नहीं सुन सकते, इसलिए के हर तरफ से उन पर शौले बरसाये जाते हैं। और उन के लिए हमेशा का अजाब है। अगर कोई आसमानों की बात उचक ले जाने की कोशिश करे तो फौरन ही उसका पीछा दहकते हुए शौले करते हैं।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व इज् स–रफना इलै–क न–फ–रम–मिनल–जिन्नि यस्तमिअूनल–कुरआ–न, फ–लम्मा ह–जरूहु कालू, अन्सितू, फ–लम्मा कुजि–य वल्लव इला कौमिहिम् मुन्जिरीन 0 कालू या कवमना इन्ना समिअ–ना किताबन् उन्जि–ल मिम्बअ–दि मूसा मुसद–दि–कल्लिमा बै–न यदैहि यहंदी इलल्हक्कि व इला तरीकिम–मुस्तकीम 0 या कवमना अजीबू दाअि–यल्लाहि व आमिनू बिही यग्फिर–लकुम मिन् जुनूबिकुम व युजिरकुम मिन अजाबिन अलीम 0 व मल्ला युजिब दाअि–यल्लाहि फलई–स बिमुअ–जिजिन फिल्अर्जि व लई–स लहू मिन दूनिही औलियाउ, उलाइ–क फी जलालिम–मुबीन 0 (सूरा ए अहकाफ पारा 26 आयत नं. 29 से 32 तक)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। और याद करें (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब जिन्न की एक जमाअत को हमने आपके पास भेजा ताके वोह कुरआन सुने। जब वोह वहाँ हाजिर हुए और एक दूसरे से कहा के खामोश हो जाओ, और जब कुरआन की तिलावत खत्म हो गई तो वोह वाइज (सुनाने वाले) बन कर अपनी कौम के पास पहुँचे। उन्होंने अपनी कौम से कहा के हमने एक ऐसी किताब को सुना है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद नाजिल की गई है और वोह पहली किताबों की भी तसदीक करती है। सच्चे दीन और

सीधे रास्ते की रहनुमाई करती है। ऐ हमारी कौम तुम अल्लाह के दाई की बातों को कबूल करो और उस पर ईमान ले आओ। अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अजाब से महफूज रखेगा और जो शख्स भी अल्लाह तआला के दाई की बातें नहीं मानेगा वोह जमीन में भाग कर अल्लाह को आजिज नहीं कर सकता और ना ही अल्लाह तआला के अलावा उसका कोई मददगार है, यही लोग खुली गुमराही में है।

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। यामअ–श–रल जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त–तअ्–तुम अन तन्फुजू मिन अक्तारिस्समावाति वल्अर्जि फन्फुजू, ला तन्फुजू–न इल्ला बिसुल्तान 0 फबिअय्यि आला–इ रब्बिकुमा तुकज्जिबान 0 युर्सलु अलैकुमा शुवाजुम–मिन्नारिव–व नुहासुन फला तन्तसिरानि 0 फबिअय्यि आला–इ रब्बि कुमा तुकज्जिबान 0

(सूरा रहमान, आयत नं. 33–36)

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। ऐ जिन्नों और इन्सानों अगर तुम जमीन, आसमान के किनारों से भाग सकते हो तो भाग जाओ, तुम अल्लाह की तौफीक के सिवा कहीं नहीं जा सकते। तुम आखिर अल्लाह तआला की किन किन नैमतों को झूठलाओगे। तुम पर आग के शौले और अंगारे बरसाये जायेंगे और तुम्हारी कोई मदद नहीं करेगा। तो बताओ तुम अपने रब की किन किन नैमतों को झुठलाओगे।

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। लव अन्जल्ना हाजल–कुरआ–न अला ज–ब–लिल –ल र–ऐतहू खाशिअम–मु–त सद्दिअम –मिन खश–यतिल्लाहि, व तिल्कल –अम्सालु नज्रिबुहा लिन्नासि ल–अल्लहुम य–त–फक्करून 0 हु– वल्लाहुल्लजी ला इला–ह इल्ला हु–व, आलिमुलगईबि वश्शहादति, हुवर्रहमानुर्रहीम 0 हुवल्लाहुल्लजी ला इला–ह इल्ला हु–व अल्मलिकुल – कुददूसुस्सलामुल मुअमिनुल – मुहैमिनुल – अजीजुल जब्बारूल–मु–त–कब्बिरू, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून 0 हुवल्लाहुल – खालिकूल–बारिउल – मुसव्विरू लहुल–अस्माउल – हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वलअर्जि, व हुवल अजीजुल – हकीम 0 (सूरा हश्र, आयत नं. 21–24)

तर्जुमा : मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ, शैतान मरदूद के शर से।(ऐ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर नाजिल करते तो आप देखते के वोह भी अल्लाह के डर से जर्रा जर्रा हो जाता और यह मिसालें हैं जिन को हम लोगों के सामने इसलिए बयान करते हैं के वोह गौर व फिक्र और समझ से काम लें। अल्लाह तआला वोह जात है जिसके अलावा कोई दूसरा इबादत के लायक नहीं वोह पौशिदा और जाहिर को एक सा जानता है वोह बहुत ज्यादा रहम करने वाला और निहायत ही मेहरबान है। अल्लाह तआला वोह है जो सिर्फ अकेला ही मआबूद है, जो पाक व मुनज्जा बादशाह है जो सरापा सलामती है, जो पनाह देने वाला है, कुदरत वाला है, गालिब और जबरदस्त है, अजीमतर है, अल्लाह तआला की हम पाकी बयान करते हैं, हर उस चीज से जिसे मुश्रिकीन उसके साथ शरीक बनाते हैं, अल्लाह तआला वोह है जो पैदा करने वाला है, जो बुजुर्ग और कारीगर है। तमाम अच्छे नामों का वही हकदार है। आसमानों और जमीन में जो कुछ है वोह सब उसकी तसबीह बयान करते हैं। और वोह गालिब हिकमत वाला है।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम, कुल उहि–य इलय–य अन्नहुस्त–मअ न फरूम– मिनल–जिन्नि फ–कालू इन्ना समिअना कु -आनन अ–ज–बय,0 यहदी इलर्रूशदि फ–आमन्ना बिर्हि न लन नुश।रे–क बिरब्बिना अ–ह–दा 0 व अन्नहू तआला जददु रब्बिना मत्त–ख–ज साहिब–तव–व ला व–ल–दा 0 व अन्नहू का–न यकूलु स्फीहुना अ–लल्लाहि श–त–ता 0 व अन्ना ज–नन्ना अल्लन तकूलल– इन्सु वलजिन्नु अलल्लाहि कजिबा 0 व अन्नहु का–न रिजालुम–मिनल इनसि य–अूजू–न बिरिजालिम – मिनल जिन्नि फजादू–हुम र–ह–कवं 0 व अन्नहुम जन्नू कमा ज–नन्तुम अल्लय्यब–अ सल्लाहु अ–ह–दा0 व अन्ना ल–मस–नस्समा–अ फ–व जदनाहा मुलि–अत ह–र–सन शदीदव–व शुहुबंव 0 व अन्ना कुन्ना नक–अुदु मिनहा मकाअि- द लिस्समअि, फमय्यस्तमिअिल–आ–न यजिद लहू शिहाबर – र–सा–दं 0 (सूरा जिन्न, आयत नं. 1 से 9)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। शुरू अल्लाह से जो बड़ा महरबान और निहायत रहम करने वाला है।

ऐ (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम कह दो के मुझे वही की है के जिन्नों की एक जमाअत ने कुरआन सुना और कहा के हमने अजीब कुरआन सुना। राहे रास्त समझाता है, हम तो उस पर ईमान ला चुके हैं अब हम हरगिज हरगिज किसी को अपने रब का शरीक ना बनायेंगे। बेशक हमारे रब की शान बेइनतेहा बुलन्द है। ना उसकी कोई बीवी है और ना उसकी कोई औलाद। यकीनन हममें से बेवकूफों ने अल्लाह तआला के जिम्मे झूटी बातें लगा दी हैं और हम तो यही समझते रहे के यह नामुमकिन है के इन्सान और जिन्नात अल्लाह तआला पर झूटी बातें लगाये। बात यह है के चन्द इन्सान बाज जिन्नात से पनाह तलब करते हैं जिसकी वजह से जिन्नात अपनी सरकशी में और बढ़ गये हैं और इन्सानों तुमने भी जिन्नों की तरह यह गुमान कर लिया था के अल्लाह तआला किसी को ना भेजेगा। (या किसी को वोह जिन्दा ना करेगा) हमने आसमान को टटोल कर देखा तो उसे सख्त चौकीदारों, शौलों से घिरा हुआ पाया। उससे पहले हम बाते सुनने के लिए आसमानों में बैठ जाया करते थे। अब जो भी कान लगाता है वह एक शौले को अपनी ताक में पाता।

"अऊजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम। कुल हुवल्लाहु अ–हद0 अल्लाहुस्स–मद 0 लम् यलिद् व लम् यूलद 0 व लम् यकुल्लहु कुफुवन अ–हद 0 (सूरा ए इखलास, पारा 30)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है। कहो वोह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज है। ना उसकी कोई औलाद है और ना वोह किसी की औलाद है। और कोई भी उसकी बराबरी करने वाला नहीं है।

"अऊजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम। कुल अऊजू बिरब्बिल–फ–लकि 0 मिन् शर्रि मा ख–लक 0 व मिन शर्रि ग़ासिकिन इजा व–कब 0 व मिन शर्रिन्नफ्फासाति फिलअुकद 0 व मिन शर्रि हासिदिन इजा ह–सद 0 (सूरा ए फलक, पारा 30)

(आयत नं. 4 को बार बार पढें)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है। कहो मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ। हर उस चीज की बुराई से जो उसने पैदा की है और अंधेरी रात की बुराई से और हसद करने वाले के शर से जब वोह हसद करने लगे।

"अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम। कुल अअूजु बिरब्बिन्नासि 0 मलिकिन्नासि 0 इलाहिन्नासि 0 मिन शर्रिल–वस्वासि–ल खन्नासि 0 अल्लजी युवसविसु फी सुदूरिन्नासि 0 मिनलजिन्नति वन्नास 0 (सूरा नास, पारा 30)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ, शैतान मरदूद के शर से। शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है। कहो मैं पनाह मांगता हूँ, इन्सानों के रब की। इन्सानों के मालिक की। इन्सानों के हकीकी मआबूद की। और वसवसा डालने वाले के शर से जो बार बार पलट कर आता है। जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है। चाहे वोह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से।

मन्दरजा जैल आयात को मरीज. के कान में बुलन्द आवाज और तरतील से पढ़ने के बाद तीन हालतें सामने आ सकती है। अव्वलन तो मरीज बेहोश हो जायेगा और उसकी जबान से जादू पर मुकर्रर जिन्न बात करने लगेगा, उसी सूरत में आप का मआमला जिन्न से ऐसा ही होगा जैसे के जिन्न जदा इन्सान से किया जाता है। उस जिन्न से आप छोटे छोटे चन्द सवालात करेगें।

1. तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा दीन क्या है तो ऐसी सूरत में आप का मआमला उससे उसका दीन देख कर होगा। अगर वोह गैर मुस्लिम है तो आप उस पर इस्लाम पैश करेंगे और अगर मुसलमान है तो उस पर यह बात वाजेह कर देंगे के तुम्हारे लिए यह जाइज नहीं है के तुम जादूगर की खिदमत करो और ना ही मजहब इस्लाम इसकी इजाजत देता है।
2. उससे पूछे के जादू कहां पर है? यानी जादू करके कहाँ पर दबाया गया है। आप उसी वक्त उस बात की तसदीक करायें, इसलिए के

जिन्न हमेशा झूठ बोलते हैं।

3. आप उससे दरयाफ्त (पूछे) करें के वोह अकेला ही उस जादूगर की खिदमत अंजाम दे रहा है या कोई और भी उसके साथ शामिल है। अगर कोई दूसरा भी शामिल है तो उस जिन्न से दूसरे को भी हाजिर करने पर मजबूर करें और फिर उसके साथ बात करें।

4. कभी जिन्न यह कहेगा के फलां इन्सान जादूगर के पास गया और उससे जादू करने की दरख्वास्त की। तो ऐसी सूरत में आप जिन्न की बात पर यकीन ना करें, इसलिए के जिन्न का मकसद दो आदमियों के दरमियान दुश्मनी पैदा करना होता है और शरअत में इसकी शहादत मरदूद है। इसलिए के वोह जादूगर की खिदमत करके फिसक का इरतकाब करता है।

फरमाने इलाही है:

तर्जुमा : ऐ मुसलमानो! जब तुम्हारे पास कोई फासिक आदमी खबर लेकर आये तो उसकी तहकीक कर लिया करो। ऐसा ना हो के तुम किसी कौम या किसी जमाअत पर गलतफहमी की बिना पर जुल्म कर बैठो, फिर तुम्हें अपने किये पर शर्मिन्दा होना पड़े। (सूरां हुजरात, आयत नं. 6)

जिन्न की जानकारी के मुताबिक आपने वोह जादू मालूम कर लिया और जादू की हुई चीज को पा लिया तो पानी पर यह आयात पढ़ें:–

"अऊजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अवहईना इला मूसा अन अल्कि असाक फइजा हिय तल्कफु मा यअफिकून 0 फ व–क–अल–हक्कु व ब–त–ल मा कानू यअ–मलून 0 फगुलिबू हुनालि–क वन्कलबू सागिरीन 0 व उल्कियस्स–ह–रतु साजिदीन 0 कालू आमन्ना बिरब्बिल आलमीन 0 रब्बि मूसा व हारून 0 (सूरा ए आराफ, आयत नं. 117 से 122)

तर्जुमा : और हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपना असा (लाठी) डाल दीजिए। सो असा का डालना था कि उसने उसके सारे बने बनाये खेल को निगलना शुरू किया0 पस हक जाहिर हो गया ओर उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा 0 पस वोह लोग उस मौके पर हार गये। और खुब जलील होकर फिरे0 और वोह जो साहिर (जादूगर) थे सज्दे में गिर

गये 0 कहने लगे कि हम ईमान लाये रब्बुल आ लमिन पर 0 जो मूसा और हारून का रब है 0

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। फ–लम्मा अल्कव का–ल मूसा मा जिअतूम बिहिस्सिहरू, इन्नल्लाह–ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला–ह ला युस्लिहु अ–म–लल्मुफसिदीन 0 व युहिक्कुल्लाहुल–हक–क बिकलिमातिही व लव करिहल– मुज्रिमून 0 (सूरा ए यूनूस, पारा 11, आयत नं. 81 से 82 तक)

तर्जुमा : सो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने फरमाया, कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है, यकीनी बात है कि अल्लाह इसको अभी दरहम–बरहम किये देता है। अल्लाह ऐसे फसादीयों (झगड़ालू) का काम बनने नहीं देता0 और अल्लाह तआला हक को अपने फरमान से साबित कर देता है। चाहे मुजरिम कैसा ही नागवांर रखे।

"अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अल्कि मा फी यमीनि–क तल्कफ मा स–नअ, इन्नमा स–नहू कईदु साहिरिन व ला युफलिहुस्साहिरु हईसु अता 0 (सूरा ताहा, पारा 16, आयत नं. 69)

तर्जुमा : और तेरे सीधे हाथ में जो है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को वोह निगल जाये, इन्होंने जो कुछ बनाया है, यह सिर्फ जादूगरों के करतब हैं, और जादूगर कहीं से भी आयें, कामयाब नहीं होता।

यह तमाम आयात एक बरतन में पानी लेकर उस पर पढ़ें जायें और इस बात का ख्याल रखा जाये के कुरआन पढ़ते वक्त पानी पर दम करते जायें। यानी पानी पर पढ़कर फूंका जाये। फिर जांदू को उस पानी में डूबो दिया जाये, चाहे वोह कागज हो या कोई खुशबू वगैरह जो भी हो। फिर उस पानी को आम रास्ते से कहीं दूर बहा दिया जाये। अगर जिन्न यह कहे के जादू जदा इन्सान को जादू पिलाया गया है तो मरीज से मालूम करें के उसके पेट में दर्द तो नहीं है। अगर है तो जिन्न सच्चा है वरना वोह झूठा है।

अगर जिन्न का सच जाहिर हो जाये तो आप जिन्न से कहें के वोह इस आदमी से निकल जाये। और कभी भी वापिस ना आये। और इंशा

अल्लाह यों जादू को खत्म कर दिया जायेगा। फिर पानी पर मन्दरजा जैल आयात को पढ़ें जो अभी ऊपर लिखी गई हैं। मजीद सूरा बकरा की आयत नम्बर 102 पढ़ें और पानी पर दम करके मरीज को सात दिन या उससे ज्यादा दिन सुबह व शाम पिलाया जाये।

अगर जिन्न यह कहे के मरीज जादू के ऊपर से गुजरा है या उसकी किसी चीज में जादू किया गया है, मसलन बालों या कपड़े वगैरह में तो उस सूरत में इन आयात को पानी पर पढ़ा जाये फिर यह पानी मरीज को दे दिया जाये ताकि वोह इस पानी को पी ले और उसी पानी से गुस्ल भी करे। गुस्ल बाथरूम में ना किया जाये बल्कि कच्ची जगह पर जिसमें पानी सूख जाये या किसी दूसरी जगह उस पानी को जमा कर के आम नालों से हटकर दूर मकाम पर बहा दिया जाये। इस अमल गुस्ल को इतनी मुद्दत तक किया जाये के मरीज का दर्द बाकी ना रहे।

फिर आप जिन्न से कहें के वोह इस इन्सान को छोड़ कर चला जाये और वापिस ना आने का उससे वादा लें। अगर मरीज कुछ महसूस ना करे तो अलहम्दुलिल्लाह जादू खत्म हो चुका है। अगर दोबारा मरीज बेहोश हो जाये तो जिन्न झूटा है और अभी तक नहीं निकला। आप उससे ना निकलने का सबब पूछें और नरमी का बर्ताव करें और अगर फिर भी बाज ना आये तो उसे मारें और कुरआनी आयात पढ़े अगर मरीज बेहोश ना हो और उस पर कपकपी तारी हो जाये और उसका सांस फूलने लगे तो आप मरीज को आयतलकुर्सी का रिकार्डिंग की हुई कैसेट दें ताके वोह हर दिन तीन बार सुने। इस तरह एक माह सुने। जब दोबारा आयेगा तो इंशा अल्लाह शिफायाब हो चुका होगा। अगर शिफायाब ना हुआ हो तो फिर उसको दूसरी कैसेट जिसमें सूरा साफफात (यासीन शरीफ) दुखान और सूरा जिन्न रिकार्ड की हो उसे दें ताके दिन में तीन बार 3 हफ्तों तक सुने। इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला उसको शिफा देगा वरना आप उस मुद्दत को बढ़ाते जायें।

दूसरी हालत

झाड़–फूंक के दौरान मरीज घुटन महसूस करे या कपकपी तारी हो

या सर में दर्द महसूस हो तो उस हालत में आप बार बार तीन मर्तबा मन्दरजा जैल आयात पढ़ कर दम करें। अगर मरीज गुस्लखाना जाये या बेहोश हो जाये तो आप पहले जैसा मआमला करें। और अगर बेहोश ना हो, सर में दर्द भी कम हो तो आप इन्हीं आयात से 3 या 7 या 9 दिन तक दम करें। इंशा अल्लाह जल्दी उसको शिफा होगी अगर शिफा ना हो तो मन्दरजा जैल तरीके अपनायें।

1. सूरा साफफात पूरी एक कैसेट में रिकार्ड करें और आयतलकुर्सी दो बार रिकार्ड करें। फिर उसे रोजाना दिन में तीन बार मरीज को सुनाया जाये।
2. नमाजों की पाबन्दी जमाअत के साथ कराई जाये।
3. मरीज को नमाज फजर के बाद "ला इलाहा इल्लल्लाहु वाह दहू ला शरीका लहु लहुलमुलकु व लहुल हम्दु वहुवा अला कुल्ली शइइन कदीर" एक सौ मर्तबा पढ़ने के लिए कहें एक महिने तक लेकिन यहाँ यह बात याद रहे के पहले 10 या 15 दिनों तक मरीज की तकलीफ बढ़ सकती है। मगर आहिस्ता आहिस्ता खत्म हो जायेगी और माह के आखरी हिस्से में बिल्कुल ही खत्म हो जायेगी और जब आप दोबारा दम करेंगे तो वोह किसी किस्म की नागवारी महसूस नहीं करेगा। इंशा अल्लाह तआला जादू खत्म हो चुका होगा। और इस बात का भी यकीन हो के तकलीफ पूरा एक महिने तक रहे और साथ ही साथ मरीज को तंग दिली का अहसास भी हो। उस हालत में जब मरीज आप के पास आये तो कुरआनी आयात पढ़कर उस पर दम करें जो पहले गुजर चुकी हैं इसके बाद जल्द ही उस पर बेहोशी शुरू हो जायेगी। और फिर आप उसके साथ वही मआमला करें जैसा के हम पहले जिक्र कर चुके हैं।

तीसरी हालत

मरीज झाड़–फूंक के दौरान अगर कोई बदलाव महसूस ना करे तो मन्दरजा आयात को आप उस पर दम करें। अगर इस के बाद भी इन अलामात की ज्यादा निशानियाँ ना पाई जायें तो समझें कि उस पर जादू

नहीं किया गया। ज्यादा तहकीक के लिए आप 3 मर्तबा ज्यादा उस पर इन आयात का दम करें। इसके बावजूद अगर मरीज में कोई तब्दीली ना आये तो जबकि ऐसा बहुत ही कम होता है। मन्दरजा जैल तरीके अपनायें।

1. सूरा यासीन, दुखान और सूरा जिन्न कैसेट में पढ़ें और उस रिकार्ड शुदा कैसेट को हर रोज 3 मर्तबा लगातार मरीज को सुनायें। (2.) कसरत से तौबा व इस्तगफार किया जाये, कम से कम दिन में 100 मर्तबा या ज्यादा। (3.) हर रोज 100 मर्तबा या इससे ज्यादा "ला हव–ल वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाह" पढ़ा जाये। यह तरीका एक माह तक जारी रखा जाये। फिर उस पर दम करें और पहली दो हालतों वाला मआमला करें।

तीसरा मरहला : इलाज के बाद

अगर अल्लाह तआला आप के हाथों पर शिफा दे दे और मरीज आराम करने लगे तो आप अल्लाह का शुक्रिया अदा करें जिसने आप को इसकी कुव्वत (ताकत) अता फरमाई। अल्लाह तआला की तरफ ज्यादा रूजुअ करें। तकब्बुर और सरकशी से बचें। फरमाने इलाही है:–

फरमाने इलाही : तर्जुमा : और जब के आपके परवरदीगार ने फरमां दिया है के अगर तुम शुक्र करोगे तो यकीनन हम तुम्हें ज्यादा देंगे और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक मेरा अजाब बहुत सख्त है। (सूरा इब्राहिम, पारा 13)

और मरीज को उस सूरत में यह खतरा भी दरपैश होता है के कहीं उस पर दौबारा जादू ना कर दिया जाये, इसलिए के अक्सर वोह लोग जो जादू करते हैं जब उनको पता चलता है के मरीज किसी इलाज करने वाले के पास गया है तो वोह लोग फिर जादूगर के पास जाते हैं ताके दौबारा उस पर जादू किया जाये। लिहाजा मरीज की जिम्मेदारी है के वोह अपने इलाज की किसी को खबर ना होने दे। बहरहाल आप बचाव के मन्दरजा जैल तरीके को बतायें:–

1. बाजमाअत नमाज की पाबन्दी,
2. म्यूजिक और गानों से बिलकुल दूर रहें,
3. सोने से पहले बावजूअु होना और आयतलकुर्सी की तिलावत करना

4. हर काम बिस्मिल्लाह पढ़ कर करें,
5. फजर की नजाम के बाद रोजाना "ला इलाहा इल्लल्लाहु वाह दहू ला शरीका लहु, लहुलमुल्कु वलहुल हमदु वहुव अला कुल्ली शईन कदिर" सौ बार पढ़ें।
6. रोजाना कम या ज्यादा कुरआन की तिलावत जरूर करें। अगर अनपढ़ हैं तो कुरआन को किसी दूसरे से सुने या रिकार्डशुदा कैसेट सुने। (और कुरआन करीम की तआलीम हासिल करें, क्योंकि मुसलमानों के लिए यह जरूरी है।)
7. नैक और अच्छे लोगों से अपने तआल्लुक रखे।
8. सुबह व शाम के अजकार का अहतमाम (रोजाना जरूर पढ़ें) करें।

जुदाई डालने वाले जादू का एक अमली नमूना

पहली मिसाल :

"शकवान" जिन्न से मुलाकात : वाक्या यह है के एक औरत अपने शौहर से बेहद नफरत करती थी, जिस पर जादू की अलामत बहुत ज्यादा खुली थी। यहां तक के वोह अपने शौहर और उसके घर से हद दर्जा तंगी महसूस करती थी और उसका शौहर उसको खौफनाक और डरावने मंजर में नजर आता था, जैसे के कोई दरिन्दा जानवर हो। बाद अजान उसका शौहर उसे एक ऐसे आदमी के पास ले गया जो कुरआन के जरीये जादू का इलाज करता था। इलाज के दौरान उसने (यानी जिन्न ने जो के उस औरत में था) कहा के इस औरत पर जादू किया गया है। जिसका मकसद दोनों मियाँ–बीवी के बीच जुदाई डालना था। तो इलाज करने वाले ने उसे बहुत ज्यादा मारा लेकिन कोई भी खातिर ख्वाह नतीजा नहीं निकला और आखिरकार उसके शौहर ने मुझ से जिक्र किया और बताया के वोह उस इलाज करने वाले के पास लगातार जाता रहा है। एक दिन उस इलाज करने वाले से जिन्न ने मुतालबा (फरमाईश) किया अगर यह शख्स अपनी बीवी को तलाक दे दे तो मैं उसको छोड़ दूंगा। अफसोस से कहना पड़ रह

है के शौहर ने उसका यह मुतालबा मान लिया और अपनी बीवी को एक तलाक दे दी। और उसके बाद रूजुअ कर लिया तो नतीजन औरत एक हफ्ते तक बिल्कुल सेहतमन्द हो गई। उसके बाद फिर उस औरत पर पहले वाला असर हो गया। उसके बाद वोह आदमी अपनी बीवी को मेरे पास लेकर आया, मैंने जब उस पर कुरआन पढ़ना शुरू किया तो वोह बेहोश हो गई और मन्दरजा जैल बातें मेरे और जिन्न के दरमियान हुई। जिसे मैं मुख्तसर (थोड़ी) तौर पर बयान कर रहा हूँ। मैंने उस जिन्न से कहा के तुम्हारा नाम क्या है? उसने जवाब दिया के शकवान है। मैंने उससे पूछा के तेरा दीन क्या है तो उसने जबाब दिया के मैं मसीही (ईसाई) हूँ।

मैंने उससे मआलूम किया के इस औरत पर क्यों हमला किया। जवाब मिला के इस औरत को उसके शौहर से अलग कर सकूं। मैंने उससे कहा के मैं तुम्हें एक पैशकश करता हूँ, तुम अगर उसे कबूल करते हो तो अलहम्दुलिल्लाह अच्छा है वरना नतीजे को भुगतने के लिए तैयार हो जाओ। जिन्न ने जवाब दिया के तुम अपने आपको परेशानी में ना डालो। मुझे इस औरत से नहीं निकलना। इससे पहले भी इसका शौहर बहुत से लोगों के पास उसे इलाज के लिए ले जा चुका है। मैंने जिन्न से कहा के तुम से इस औरत से निकलने का मुतालबा नहीं कर रहा हूँ। जिन्न ने कहा के आखिर तुम मुझ से क्या चाहते हो? मैंने जिन्न से कहा मैं चाहता हूँ के मैं तुम को दआवत इस्लाम दूँ। अगर तुम इसको कबूल करते हो तो अलहम्दु लिल्लाह वरना दीन इस्लाम जबरदस्ती का नाम नहीं। फिर मैंने उस पर इस्लाम पैश किया तो एक लम्बी बहस व मुबाहिसे के बाद वोह जिन्न इस्लाम ले आया और अलहम्दु लिल्लाह वोह जिन्न मुसलमान हो गया। मैंने जिन्न से कहा के तुम वाकई मुसलमान हो गये हो या मुझे धोका दे रहे हो। जिन्न ने जवाब दिया के तुम मुझे किसी चीज में मजबूर नहीं कर सकते बल्कि मैं तो दिल से मुसलमान हो चुका हूँ अगर .... मैं ने कहा के बात क्या है? तो जिन्न ने जवाब दिया के इस वक्त ईसाई जिन्नों की एक जमाअत मेरे सामने मौजूद है और मुझे डर है के वोह मुझे कत्ल ना कर दे, वोह मुझे धमकी दे रहे हैं तो मैंने कहा के तुमको उनसे डरने की कोई जरूरत नहीं अगर हमें यकीन हो जाये के तुम दिल से

मुसलमान हो चुके हो तो तुम को एक ऐसा ताकतवर हथियार देंगे के कोई भी जिन्न तुम्हारे करीब नहीं आ सकता। जिन्न ने कहा, तो दीजिये। तो मैंने कहा नहीं। मजलिस बरखवास्त (बात खत्म) होने तक सब्र करो। मैंने कहा के अगर तुम हकीकतन मुसलमान हो चुके हो तो तुम्हारी तौबा उस वक्त कबूल होगी जब तुम इस औरत को छोड़ दोगे और जुल्म से बाज आओगे। जिन्न ने जवाब दिया, हाँ मैं इस्लाम ला चुका हूँ, लेकिन जादूगर से मुझे कैसे निजात (छुटकारा) मिलेगी। तो मैंने कहा आसान है लेकिन तुम पहले हमारी बात मानो। जिन्न ने कहा, ठीक है मैंने कहा के बताओ जादू करके कहाँ दबाया गया है? (यानी जादू की पोटली कहां दबायी गई है)। जिन्न ने जवाब दिया के जिस घर में यह औरत रहती है उस के घर के आंगन में और उस जिन्न ने कहा के मैं पुख्ता यकीन से जादू की जगह बता नहीं सकता। इसलिए के वहाँ पर एक खास जिन्न है जिसे उस जादू की हिफाजत पर लगाया गया है और जब भी उस जादू की जगह का किसी को पता चल जाता है तो वोह जिन्न उसी जादू को दूसरी जगह मुन्तकिल (बदल) कर देता है। मैंने कहा तुम्हारा तआल्लुक उस जादू से कितनी मुद्दत से है, मुझे सही याद नहीं है के उसने क्या जवाब दिया। लेकिन इतना याद है के उसने दस या बीस साल कहा था। और मजीद (ज्यादा) उसने बताया था के मैंने इस से पहले भी 3 औरतों पर हमला किया है और फिर उन तीनों के किस्से बयान किये। जब मुझे उसके सच का यकीन हो गया तो मैंने कहा के लीजिये वोह अपना हथियार जिसका मैंने तुम से वादा किया था। तो जिन्न ने कहा क्या है वोह चीज? तो मैंने जवाब दिया के वोह आयतलकुर्सी है जब भी तुम्हारे करीब कोई जिन्न आने की कोशिश करे तो तुम इस आयत की तिलावत करो तो वोह जिन्न भाग जायेगा। मैंने उस जिन्न से सवाल किया के क्या तुम को आयतलकुर्सी याद है। उसने जवाब दिया के हाँ, चूंकि वोह औरत उसको बार बार पढ़ती थी, इसलिए मुझ को जबानी याद है। उसने कहा के मुझे जादूगर से कैसे निजात मिलेगी। मैंने कहा के इस औरत से निकल जाओ और मक्के चले जाओ, फिर वहाँ मुसलमान जिन्नों के दरमियान रहा करो। जिन्न ने कहा वाकई अल्लाह तआला क्या मेरे यह तमाम गुनाह माफ करेगा? क्योंकि इस

औरत को और इसके अलावा मैंने जिन जिन औरतों पर जुल्म किया है, उन्हें बहुत ज्यादा तकलीफ पहुँचायी है। मैंने जवाब दिया के इंशा अल्लाह तआला जरूर माफ फरमायेगा।

फरमाने इलाही है:–

तर्जुमा : कहो ऐ मेरे वोह बन्दों जिन्होंने (जिन्होंने गुनाह करके) अपने आप पर जुल्म किया है, तुम अल्लाह तआला की रहमत से नाउम्मीद ना हो जाओ क्योंकि अल्लाह तआला तमाम गुनाहों को माफ कर देता है। बेशक वोह बख्शने वाला और रहम करने वाला है। (सूरा ए जुमर, आयत 53)

तो वोह रो पड़ा और कहा मैं इस औरत से निकल जाऊँ तो इस औरत से अपील करें के वोह मुझे माफ कर दे क्योंकि मैंने इसे बहुत तकलीफ दी है। उसने वादा किया और वोह इस औरत से निकल गया। बाद अजान मैंने उस आदमी को कुछ कुरआनी आयात पानी पर दम करके दीं और कहा के इसे अपने सहन (बरामदा) में छिड़क दो फिर कुछ मुद्दत बाद उस आदमी ने मुझे खबर दी के उसकी औरत बिल्कुल ठीक है। (इसमें मेरा कोई दखल नहीं है, जो कुछ हुआ, अल्लाह तआला की तरफ से हुआ है।)

दूसरी मिसाल

जिन्न का जादू की पोटली को तकिये में रखना

एक खातून का शौहर मेरे पास आया और कहा, जब से मैंने इस औरत से शादी की है, हमारे दरमियान इख्तेलाफ की खलीज बढ़ती ही जा रही है। बल्कि वोह मुझे इन्तहाई नापसन्द करती है और मेरा एक लफ्ज भी बर्दाश्त करने की रवादार नहीं है। जिसकी सबसे बड़ी आरजू यही है के वोह मुझ से अलग हो जाये। अजीब बात है के जब तक मैं घर से बाहर रहता हूँ, वोह बड़ी खुश रहती है और जैसे ही मैं घर में दाखिल होता हूँ, मेरी सूरत देखते ही वोह गुस्से में जल–भून जाती है। नतीजन इलाज के तौर पर मैंने कुरआनी आयात की उस औरत के सामने तिलावत की तो उसको गनुदगी (सोने व जागने के बीच की हालत) महसूस होने लगी।

साथ ही उसका दिल तंग होने लगा और सर में दर्द भी होने लगा। लेकिन खिलाफ आदत उस पर बेहोशी तारी नहीं हुई। तो मैंने कुरआन की एक कैसेट रिकार्ड करके उसे दी और कहा के इस सूरा को पैंतालिस दिन तक सुने। फिर मेरे पास आये। पैंतालिस दिन के बाद उस औरत का शौहर मेरे पास आया और कहा के अजीब वाक्या पैश आया है। मैंने कहा के खैर तो है? उस आदमी ने कहा के जब पैंतालिस दिन की मुद्दत पूरी हुई और वोह और उसकी बीवी मेरे पास आना चाहती थी तो उसकी बीवी बेहोश हो गई और उसकी आवाज में जिन्न बोलने लगा। कहने लगा के मैं तुम को सब कुछ बता दूंगा, बशर्ते के तुम मुझ को उस आलिम के पास ना ले जाओ। और वोह कहने लगा के मुझे जादू के जरीये इस औरत में दाखिल किया गया है। अगर तुम मेरी सच्चाई जानना चाहते हो तो कमरे में पड़े हुए एक बिस्तर पर एक तकिये की तरफ इशारा करके कहा के उसको मेरे पास लाओ। मैं वोह तकीया उठा लाया और उसने उस तकीये का कवर लेने के लिए कहा। जब मैंने उस तकीये को खौला तो देखता हूँ के उसमें कागजों के कुछ टुकड़े मिले जिन पर कुछ लिखा था। फिर जिन्न ने मुझ से कहा के इन कागजों को जला दो। और मैं फिर कभी भी वापिस नहीं आऊँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है। उस औरत के खाविन्द ने कहा, क्या? तो जिन्न ने कहा के मैं इस औरत से मुसाफा करना चाहता हूँ। तो उस आदमी ने कहा, कोई हर्ज नहीं। और उसके बाद उसकी औरत बेहोशी से बैदार हो गई और फिर उसने हाथ आगे की तरफ कर दिया जैसे वोह किसी से मुसाफा कर रही हो। मैंने यह तमाम किस्सा सुनने के बाद उस आदमी से कहा के तुमने बहुत बड़ी गलती की है के तुम ने अपनी बीवी को उससे मुसाफा करने की इजाजत दी। इस लिए के यह नाजाइज और हराम है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरत को किसी भी गैर मर्द से मुसाफा करने से मना किया है। तो उसके एक हफ्ते के बाद वोह औरत फिर बीमार हो गई। और वोह शख्स अपनी बीवी को लेकर मेरे पास आ गया। जैसे ही मैंने अअुजु बिल्लाह पढ़ा तो मन्दरजा जैल गुफ्तगु का आगाज हुआ। मैंने कहा ऐ झूटे, तुमने वादा किया था के दौबारा नहीं आओगे फिर तुम दौबारा क्यों लौट आये? जिन्न ने कहा मैं सब कुछ

बताऊँगा। आप मुझे मारे नहीं। मैंने कहा बताओ। तो जिन्न ने कहा के मैंने इन्हें झूट कहा था के मैं चला जाऊँगा। उस तकीये में मैंने ही कागज डाले थे ताकि उन को मेरी सच्चाई का यकीन हो जाये। और मैं इस औरत से ना निकलूँ। मैंने कहा, तुमने तो उनके साथ धोका देही की है। जिन्न ने कहा के मैं क्या कर सकता हूँ? जादू के जरीये मुझ को इस औरत के जिस्म में कैद कर दिया गया है। मैंने सवाल किया के क्या तुम मुसलमान हो? उसने जवाब दिया के "हाँ"। मैंने कहा के मुसलमान के लिए जाइज नहीं के वोह किसी जादूगर के लिए काम करे। इसलिए के यह हराम है और यह बहुत बड़ा गुनाह है। क्या तुम जन्नत चाहते हो? जिन्न ने कहा के हां, मैं जन्नत चाहता हूँ। मैंने कहा के फिर जादूगर को छोड़ दो और मुसलमानों में शामिल हो कर अल्लाह तआला की इबादत करो। इसलिए के जादूगरी का काम दुनिया में बदबख्ती और आखिरत में इसका नतीजा जहन्नम ही है। जिन्न ने कहा यह कैसे हो सकता है के मैं इस को छोड़ दूँ, क्योंकि जादूगर के आगे मैं बेबस हूँ। मैंने कहा के हाँ, यह सब उसका गलबा और तुम्हारी बेबसी का सबब तुम्हारे गुनाह हैं। और अगर तुम सच्चे दिल से तौबा करो तो सब ठीक हो जायेगा। फरमाने इलाही है "और अल्लाह तआला ने काफिरों को मुसलमानों पर कोई इख्तयार नहीं दिया"। तो जिन्न ने कहा के मैं तौबा करता हूँ और इस औरत से निकल जाता हूँ फिर इसके बाद हरगिज वापिस नहीं आऊँगा। फिर वोह वादा कर के निकल गया और वापिस नहीं आया। हर किस्म की तारीफों का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला ही है। और उसके सिवा कोई भी नफा व नुकसान का मालिक नहीं है। फिर इसके बाद उस औरत का शौहर एक अरसे बाद वापिस आया और कहा, अलहम्दुलिल्लाह उसकी बीवी बिलकुल ठीक है।

तीसरी मिसाल

सबसे आखरी वाक्या इस किताब को लिखने से पहले जो मेरे साथ पैश आया। एक औरत का खाविन्द मेरे पास आया और कहा के उसकी औरत उससे नफरत करने लगी है और उसके साथ रहना नहीं चाहती। और यह सब अचानक थोड़े से अरसे से हुआ है। मैंने उस औरत को कुरआन की कुछ आयात सुनाई जिसके बाद वोह औरत बेहोश हो गई। और इसके

साथ ही मन्दरजा जैल गुफ्तगू पैश आई। मैंने उससे कहा तुम मुसलमान हो? जिन्न ने जवाब दिया, हाँ मैं मुसलमान हूँ। तो मैंने कहा के तुम ने इस औरत को क्यों पकड़ा है? जिन्न ने जवाब दिया के मुझे जादू के जरीये इसमें दाखिल किया गया है। और फलां औरत ने इस औरत पर जादू किया है और जादू करने के बाद उस जादू को इत्र की एक शीशी में रख दिया था जो के उस औरत के पास है। मैंने उस औरत का एक अरसे तक पीछा करता रहा, उसी दौरान उनके घर में चोर आ गया और यह घबरा गई तो मैंने उस पर कब्जा कर लिया। यहाँ यह बात मैं वाजेह करता चलूँ के जादूगर जिन्न को उस आदमी के पास भेजता है जिस पर वोह जादू करना चाहता है। जिन्न उस आदमी के पीछे लगा रहता है, यहां तक के जैसे ही उस को मौका मिलता है वोह इन्सान में दाखिल हो जाता है। चार मौकों में जिसमें जिन्न इन्सान में आसानी के साथ दाखिल हो सकता है। 1. सदीद डरावने ख्वाब की हालत में, 2. सख्त गुस्से की हालत में, 3. इन्तहाई गफलत की हालत में, 4. इन्सान जब ख्वाईशात (जो दिल में आये वोह करे) का गुलाम हो जाये।

अगर इन्सान इन चारों हालतों में से किसी भी एक हालत से दो–चार हो तो शैतान उसमें दाखिल हो जाता है। हां मगर यह के वोह हमेशा बावजु रहता हो और अल्लाह तआला का जिक्र करता हो तो कोई भी जिन्न उसमें दाखिल नहीं हो सकता। कहा जाता है के (जैसे के बहुत से जिन्नों ने मुझ को बताया, अगर इनको सच्चा मान लें) अगर इन्सान जिन्न के दाखिल होने के बाद अल्लाह तआला का जिक्र करे तो जिन्न जल जाता है। इसलिए के जिन्न जब इन्सान में दाखिल होता है तो वोह जिन्न का सबसे मुश्किल वक्त होता है। जिन्न ने कहा के यह औरत बेचारी बहुत अच्छी है। मैंने कहा के तुम अल्लाह तआला की फरमां बरदारी करो और इस औरत से निकल जाओ। जिन्न ने कहा, शर्त यह है के उसका शौहर दूसरी बीवी को तलाक दे दे तो मैं निकल जाऊँगा। मैंने कहा के तुम्हारी शर्त काबिले कबूल नहीं। तुम फौरन इस औरत से निकल जाओ वरना मैं तुम्हारी खबर लेता हूँ। जिन्न ने कहा के अनकरीब मैं इससे जल्दी निकल जाऊँगा। तो अलहम्दु लिल्लाह वोह उस औरत से निकल गया। फिर मैं ने उसके शौहर को बताया के तुम्हारी बीवी को किसी ने जादू नहीं किया,

जिन्न बहुत झूटे होते हैं यह बहुत झूट बोलते हैं ताके लोगों के दरमियान दूरियाँ डालें। लिहाजा तुम अल्लाह का खौफ करो और जिन्न की बातों को ना मानो।

चौथी मिसाल

जिन्न का आलिम में दाखिल होने का इरादा करना

मेरे पास एक औरत का शौहर आया और वोह मुझे बताने लगा के उसकी बीवी उसके साथ इन्तहाई नफरत करती है और मेरी गैर मौजूदगी में बहुत खुश रहती है और जैसे ही मैं घर में दाखिल होता हूँ तो उसका मिजाज बिगड़ जाता है। जब मैंने उस औरत से कुछ सवालात किये तो मुझे मालूम हुआ के उस पर जादू किया गया है और जब उसने कुरआनी आयात सुनी तो उस पर मुसल्लत (सवार) जिन्न बोल उठा। और उस जिन्न से मन्दरजा जैल गुफ्तगू हुई जिसे मैंने बड़े इख्तसार से बयान किया है।

सवाल : तुम्हारा नाम क्या है?

जवाब : मैं नहीं बताऊँगा।

सवाल : तुम्हारा दीन क्या है?

जवाब : मुसलमान हूँ।

सवाल : मुसलमान के लिए यह कहां जाइज है के वोह किसी मुसलमान औरत को तकलीफ दे।

जवाब : मुझे इससे मुहब्बत हो गई है, मैं इसे तकलीफ नहीं देता। और मैं चाहता हूँ के इसका शौहर इस औरत से दूर रहे।

सवाल : क्या तुम दोनो मियाँ–बीवी के दरमियान अलैहदगी करना चाहते हो?

जवाब : उसने कहा, हाँ।

सवाल : तुम्हारे लिए यह जाइज नहीं है। अल्लाह तआला का फरमा बरदार बन जा और इस औरत से निकल जा।

जवाब : नहीं नहीं। मैं इससे मुहब्बत करता हूँ।

सवाल : लेकिन यह तो तुम से नफरत करती है।

जवाब : यह भी मुझसे मुहब्बत करती है।

सवाल : तुम झूठे हो। हकीकत तो यह है के यह तुम से नफरत करती है। और यह औरत यहाँ पर महज इसलिए आती है के तुम उसका पीछा छोड़ दो।

जवाब : मैं हरगिज नहीं जाऊँगा।

सवाल : मैं तुमको कुरआन पढ़कर अल्लाह तआला की मदद से जला दूंगा। फिर मैंने इस औरत पर कुरआन की आयात पढ़ना शुरू कीं। तो जिन्न चिल्लाने लगा। मैंने जिन्न से कहा के अब तो निकलता है के नहीं?

जवाब : हाँ लेकिन एक शर्त पर।

सवाल : वोह कौन सी शर्त है?

जवाब : मैं औरत से निकल कर तुम्हारे अन्दर दाखिल हो जाऊँगा।

सवाल : मैंने कहा के कोई हर्ज नहीं, अगर तुम ऐसा कर सकते हो तो करो। वोह थोड़ी देर के लिए रूका और उसके बाद रोने लगा। मैंने कहा क्यों रोते हो? उसने कहा, कोई भी जिन्न आज तुम्हारे अन्दर दाखिल नहीं हो सकता।

सवाल : आखिर क्यों? इसकी वजह क्या है?

जवाब : इसलिए के तुम ने आज सुबह " ला इलाहा इल्लल्लाहु वाहदहु ला शरीका लहु लहुल मुलकु वलहुल हमदु वहु व अला कुल्ली शइईन कदीर" को सौ मर्तबा पढ़ा है।

मैंने सोचा, सच फरमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैह सल्लम ने के जिस शख्स ने किसी दिन सुबह के वक्त " ला इला ल्लाहु वाहदहु ला शरीका लहु लहुल मुलकु वलहुल हमदु वहु व कुल्ली शइईन कदीर" 100 मर्तबा पढ़ा, गौया के उसने 10 दस गर्दनें आजाद कराई और उसके अअमाल नामा में सौ नैकियां लिखी जायेंगी। और सुबह से शाम तक वोह शैतान से महफूज रहेगा। तो मैंने उससे कहा के तुम फौरन इस औरत को छोड़ दो। अलहम्दु लिल्लाह उस ने ऐसा ही किया और निकल गया।

जादू की दूसरी किस्म

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मुहब्बत के लिए जादू करना : नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम फरमाते हैं के जादू, झाड़, फूंक, तावीज गण्डे शिर्क हैं। अल्लामा इब्ने कसीर फरमाते हैं के "(तवलह)" की "त" के तीने जैर और "व" के ऊपर जैर के साथ पढ़ने से उसके मायने होते हैं के वोह चीज जो औरत को उसके शौहर की नजरों में महबूब बना दे और उसका तआल्लुक जादू वगैरह से हो तो नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने उस हरकत को शिर्क करार दिया है। इसलिए के उन लोगों का अकीदाह था के यह चीज अल्लाह की तकदीर के खिलाफ है। मैं यह बात वाजेह करना चाहता हूँ के मजकुरा हदीस में जिस चीज की मुमानियत आई है वोह इस झाड़–फूंक के लिए है जो जिन्न और शैतान से मदद तलब की जाये। लेकिन सही झाड़ फूंक जिसका ताअल्लुक कुरआन और सुन्नत से हो तो वोह बिला इख्तेलाफ जाइज है। सही मुस्लिम में रिवायत है के नबी सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम ने फरमाया है के झाड़ फूंक में कोई हर्ज नहीं बशर्ते के वोह शिर्किया ना हो।

मुहब्बत के जादू की अलामत :

1. जरूरत से ज्यादा बेसब्री करना।
2. हर वक्त मुबाशरत की ख्वाईश करना।
3. मुबाशरत में बेसब्री करना।
4. बीवी को देखने के लिए बेकरार रहना।
5. बीवी की अन्धी फरमां बरदारी करना।

मुहब्बत के लिए जादू के असबाब

ज्यादातर मियां–बीवी के दरमियान इख्तेलाफ भी होते हैं और फौरन खत्म भी हो जाते हैं। फिर जिन्दगी नार्मल गुजरने लगती है। लेकिन बाज औरतें इस पर सब्र नहीं करती। फौरन जादूगरों के पास दौड़ पड़ती हैं ताके उन से जादू करवाकर अपने शौहर की नजरों में महबूब बन जाये। इसका कारण औरत का दीन से अन्जान होना है। जादूगर, औरत से उसके शौहर का कोई कपड़ा, मसलन रूमाल, टोपी, कमीज वगैरह मांगता है, जिसमें उसके शौहर के पसीने की बू आती हो, कपड़ा नया हो, धूला

हुआ ना हो, बल्कि इस्तेमाल शुदा हो। तब जादूगर उस कपड़े से कुछ धागे लेता है और उन धागों पर गिरह लगाकर कुछ दम करता है। फिर उस औरत से कहा जाता है के इन धागों को विरान जगह पर दफन कर दे या जादूगर खाने की किसी चीज पर या पानी पर दम कर देता है। इस जादू की बदतरीन किस्म यह है के नापाक चीज पर जादू किया जाये। इससे भी बदतरीन और शदीदतरीन जादू की वोह किस्म है जो हैज के खून से किया जाये और उस औरत से कहा जाता है के वोह इस चीज को अपने शौहर को खिला दे या पिला दे।

मुहब्बत वाले जादू के उल्टे असरात

1. कभी इस जादू की वजह से शौहर बीमार हो जाता है। मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जो तीन साल तक इस किस्म के जादू की वजह से बीमार रहा।
2. कभी इस जादू की वजह से उल्ट हो जाता है। शौहर अपनी बीवी को मुहब्बत करने के बदले नफरत करने लगता है। यह इसलिए होता है कि कुछ जादूगर जादू के उसूलों से नावाकिफ होते हैं।
3. कभी बीवी अपने शौहर के लिए इस तरह का जादू करवाती है के वोह तमाम औरतों से नफरत करे और सिर्फ अपनी बीवी से मुहब्बत करे जिसके नतीजे में वोह मर्द अपनी माँ और बहिनों से भी नफरत करने लगता है और दूसरी तमाम रिश्तेदार औरतों से भी उसको नफरत हो जाती है।
4. इस तरह के जादू का कभी उल्ट भी हो जाता है और शौहर अपनी बीवी समेत तमाम औरतों से नफरत करने लगता है। इसी किस्म का किस्सा मेरे पास आया था। शौहर अपनी बीवी से नफरत करने लगा और उसको तलाक दे दी और वोह बीवी दौड़ती हुई उस जादूगर के पास पहुँची ताकि जादू के असरात को खत्म करवा दे। मगर जादूगर उसके पहुँचने से पहले ही मर चुका था।

कहावत मशहूर है के जो दूसरों के गड्डा खोदते हैं वोह खुद ही उसमे जा गिरते हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मुहब्बत के लिए जादू क्यों किया जाता है?

1. शौहर और बीवी के दरमियान इख्तलाफ का पैदा होना।
2. औरत को शौहर के माल का लालच खासकर जब के वोह मालदार हो।
3. औरत का इस वहम में यकीन होना के उसका शौहर दूसरी शादी करने वाला है।

हालांकि शरीअन यह जाइज है और इसमें कोई नाफरमानी नहीं। मौजूदा दौर के जदीद तरीन ख्यालात रखने वाली औरतें यह ख्याल करती है के शौहर हमसे मुहब्बत नहीं करता इसलिए दूसरी शादी करना चाहता है। इस तरह का सोचना औरत की बहुत बड़ी गलतफहमी है। क्योंकि दूसरी शादी के कई असबाब होते और बहुत सी वजाहत होती हैं जो के इन्सान को दूसरी, तीसरी और चौथी शादी करने पर मजबूर कर देती है। जबकि वोह अपनी पहली बीवी से भी मुहब्बत रखता है। दूसरी शादी की वजाहत में से चन्द यों भी हो सकती हैं के शौहर बच्चों में ज्यादा दिलचस्पी ले, या वोह हेज और निफास के दौरान बीवी से दूर ना रह सकता हो या किसी खास खानदान से ताअल्लुक बढ़ाना चाहता हो, वगैरह, वगैरह।

जादू की जाइज किस्म

यह एक ऐसी नसीहत है जिसे मैं मुसलमान औरतों तक पहुँचाना अपना फर्ज समझता हूँ। बात यह है के हर औरत अपने शौहर को अपनी तरफ जाइज तौर पर अपने कब्जे में कर सकती है। मसलन बीवी अपने शौहर की खातिर बहतरीन बनाव–श्रृंगार करे। अपने शौहर का इस्तकबाल शरीन मुस्कुराहट, खुशगुफ्तारी और दिलरूबा अन्दाज से करे ताके वोह दायें बायें देखने पर मजबूर ना हो और अपनी बीवी से खुश होता ही चला जाये। इसके अलावा बीवी अपने शौहर के माल की हिफाजत करे, उस की औलाद की हिफाजत करे और उन पर पूरा ध्यान दें, अपने शौहर के हुक्म की फरमां बरदारी करे। इस हुक्म में अल्लाह तआला के हुक्म की नाफरमानी अगर ना हो तो मन व अन, उस की तामिल करें। लेकिन हम आज के माहौल पर नजर डालें तो पता चलता है के यहां की दुनिया ही

उल्टी है। कोई औरत किसी सहेली से मिलने जाती है तो इस कदर बनाव–श्रृंगार करती है और अपने कपड़े ऐसे पसन्द करती है जो कीमती और जुर्क–बुर्क हों और फिर घर से इस तरह निकलती है जैसे जुलुस या उर्स में जा रही हो। वोह घर वापिस आते ही उन तमाम चीजों को उतार फैंकती है और वोह गरीब शौहर जिसने उसके लिए यह तमाम कीमती चीजें खरीदी होती हैं, वोह बेचारा तो अपनी आँखें ठण्डी करने से रहा और जब शौहर के सामने आये तो फटे पुराने कपड़ों में जिनसे बावर्ची खाने की बदबू आती रहती है और प्याज व लहसुन की बू शामिल होती है। हालांकि अगर औरत अकल व समझ से काम ले तो वोह खुद ही जान जायेगी के उसकी जैब व जिनत का हकदार सिर्फ और सिर्फ उसका शौहर ही है ना के दूसरे मर्द। लिहाजा ये मुस्लिम खातून जब तेरा शरीक हयात काम के लिए घर से निकले तो तेरी यह कोशिश हो के जल्द से जल्द घर के काम को निपटाये और जल्द नहा धोकर फिर बनाव–श्रृंगार कर के अपने शौहर का इन्तजार करे ताके जब शौहर काम से घर वापिस आये तो उसके सामने एक खुबसूरत बीवी खाना वगैरह तैयार करके इन्तजार में बैठी हो तो फिर आप खुद देखेंगे के मुहब्बत कैसे रंग लाती है। रब्बे कायनात की कसम यह जादू हलाल और जाइज है। बिल खसूस जब औरत का मकसद उससे अल्लाह तआला की खुशनुदी हासिल करना हो और कोशिश यह करें के शौहर अपनी बीवी में दिलचस्पी ले और नजर हराम से बचा रहे। इसलिए के जो इन्सान पेट भर कर खाना खा चुका हो उसको खाने की चाहत नहीं होती है। लेकिन जब इन्सान को जरूरत भर ना मिलें तो फिर वोह दूसरी तरफ लपकता है। आप इन बातों पंर गौर करें यह बहुत ही कीमती बातें हैं।

मुहब्बत के जादू का इलाज

नम्बर 1. मरीज पर आप वोह आयात पढ़ें जो शिफा इलाज में जिक्र की गई हैं। उनमें से सूरा बकरा की आयत नम्बर 102 को हिफज करके उसकी जगह सूरा ए तगाबुन की आयत नम्बर 14, 15, 16 पढ़कर दम करें।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

"अऊजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। या अय्यु हल्लजी–न आमनू इन–न मिन अज्वाजिकुम व अवलादिकुम अदुव्वल्लकुम फहजरूहुम व इन तअ–फू व तस्फहू व तग्फिरू फ–इन्नल्ला–ह गफूरूर्रहीम 0 इन्नमा अम्वालुकुम व अवलादुकुम फित–नतुन, वल्लाहु अिन्दहु अज्रून अजीम 0 फत्तकुल्ला–ह मस्त–तअ–तुम वस–मअू व अतीअू व अन्फिकू खईरल लिअन्फुसिकुम, व मय्यू–क शुह–ह नफसिही फउलाइ–क हुमुल–मुफलिहू–न0 (सूरा ए तगाबुन की आयत नम्बर 14, 15, 16)

मौमिनों! यकीनन तुम्हारी बीवी और बच्चों ही में से बाज तुम्हारे दुश्मन हैं तो तुम उनसे बच कर रहो। और अगर तुम अफू और दरगुजर से काम लोगे तो यकीनन अल्लाह तआला बख्शने वाला और रहम करने वाला है। यकीनन तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए फितना और आजमाईश हैं। अल्लाह तआला के पास तुम्हारे लिए बेहतरीन अजर व सवाब है। अपनी ताकत भर अल्लाह से डरो और अल्लाह की इताअत करते रहो और अल्लाह के रास्ते में खर्च करते रहो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है और जिसने भी अपनी जात को बुख्ल से बचाया तो वही कामयाब व सुरखरू हुआ।

2. अब मरीज बेहोश नहीं होगा बल्कि उस पर गनुदगी तारी होगी। सरदर्द और घुटन का अहसास होगा। मअदे में शदीद दर्द होगा। बिलखसूस जब उसको जादू पिलाया गया होगा और कभी तो बाज मरीज उल्टी भी करने लगते हैं। आप नोट करें अगर वोह पेट में दर्द महसूस करता है या वोह बार बार उल्टी करता है तो आप मन्दरजा जैल आयात पानी पर पढ़ कर दम करें। और उस पानी को अपने सामने मरीज को पिलायें। अगर उस वक्त मरीज को सराया लाल उल्टी हुई तो इसका मतलब हैं के अलहम्दु लिल्लाह मरीज का जादू खत्म हो चुका है वरना उसे यह पानी तीन हफ्ते या इससे ज्यादा पीने के लिए कहा जाये। यहां तक के जादू खत्म हो जाये।

वोह मन्दरजा जैल आयात यह हैं:–

1. "अऊजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। फ–लम्मा अल्कव का–ल मूसा मा जिअतूम बिहिस्सिहरू, इन्नल्लाह–ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला–ह ला

युस्लिहु अ–म–लल्मुफसिदीन 0 व युहिक्कुल्लाहुल–हक–क बिकलिमातिही व लव करिहल– मुज्रिमून 0 (सूरा ए यूनूस, पारा 11, आयत नं. 81 से 82 तक)

2. "अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अवहईना इला मूसा अन अल्कि असाक फइजा हिय़ तल्कफु मा यअफिकून 0 फ व–क–अल–हक्कु व ब–त–ल मा कानू यअ–मलून 0 फगुलिबू हुनालि–क वन्कलबू सागिरीन 0 व उल्कियस्स–ह–रतु साजिदीन 0 कालू आमन्ना बिरब्बिल आलमीन 0 रब्बि मूसा व हारून 0 (सूरा ए आराफ, आयत नं. 117 से 122)

3. "अउजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अल्कि मा फी यमीनि–क तल्कफ मा स–नअ, इन्नमा स–नहू कईदु साहिरिन व ला युफलिहुस्साहिरू हईसु अता 0 (सूरा ताहा, पारा 16, आयत नं. 69)

इस जादू के इलाज की एक मिसाल

एक ऐसा आदमी जब के श्याह व सफेद की मालिक उसकी बीवी थी।

एक आदमी मेरे पास आया और कहने लगा के पहले मैं अपनी बीवी के साथ बड़ी नार्मल जिन्दगी गुजार रहा था, समझ में नहीं आ रहा के अब मुझे क्या हो गया है। एक मिनट भी अपनी बीवी से दूर नहीं रह सकता हूँ। काम कर रहा होता हूँ तो भी उसी के बारे में सोचता हूँ, उसी के ख्यालों में डूबा हुआ रहता हूँ और जब काम से घर लौटता हूँ तो सोचता हूँ के जल्द से जल्द बीवी तक पहुँचूँ। अगर मेहमानों में बैठा हुआ होता हूँ तो बार बार उनको छोड़कर अपनी बीवी के पास पहुँचता हूँ। उसके बारे में इन्तहाई अहसास मन्द हो गया हूँ। मैं अपनी बीवी के हाथों में खिलौना बनकर रह गया हूँ। हुकूक मियां–बीवी को पहले के मुकाबले में अब मैं ज्यादा अहमियत देता रहता हूँ। जब वोह रसोई में होती है तो मैं उसके पीछे पीछे जब वोह सोने के कमरे में होती है तो उसके पीछे पीछे और अगर वोह घर का कोई काम कर रही होती है तो मैं उसके साथ साथ रहता हूँ। समझ में नहीं आ रहा के मुझे क्या हो गया हैं उसके हर हुक्म पर मैं ताबेदार बना हुआ हूँ।

इन तमाम बातों के सुनने के बाद मैं ने उसको पहली कुरआनी आयात

पानी पर दम करके उसको दिया ताकि वोह उसको पीये और तीन हफ्तों तक पानी से गुस्ल करता रहे। फिर मैंने उसको तीन हफ्तों के बाद वापिस आने की हिदायत की और ताकीद की के अपनी बीवी को इस बात का इल्म ना होने दे। उसने ऐसा ही किया और आकर बताया के वोह सेहतयाब हो रहा है मगर कुछ असरात अभी बाक़ी हैं। मैंने उसके लिए दूसरी बार वही इलाज तजवीज किया। अलहम्दुलिल्लाह यह सब अल्लाह तआला के करम व फजल का नतीजा था वरना मुझमें कोई खुसूसियत नहीं।

जादू की तीसरी किस्म

नजरबन्दी का जादू

सूरा अलआराफ में इरशाद रब्बानी है:–

तर्जुमा : उन जादूगरों ने कहा, ऐ मूसा आप डालें या हम डालें। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम ही डालो पस जब उन्होंने डाला तो लोगों की नजरबन्दी कर दी और उन पर हेबत (डर) गालिब कर दी। यह एक तरह का उन्होंने बड़ा जादू दिखाया। और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया के आप अपना असाअ डाल दीजिये। सो असाअ का डालना था के उनके तमाम जादू के खेल को उसने निगलना शुरू कर दिया। पस हक जाहिर हो गया। और उन्होंने जो खेल बनाया था वोह खत्म हो गया। पस वोह लोग (जादूगर) उस मौके पर हार गये और खूब जलील हुए। और तमाम जादूगर सिज्दे में गिर पड़े, कहने लगे हम इमान लाये रब्बुल आलमीन पर जो मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून का रब है। (सूरा ए आराफ आयत नं. 115 से 122)

और सूरा ताहा में अल्लाह तआला फरमाता है:–

तर्जुमा : उन जादूगरों ने कहा, ऐ मूसा या तो आप पहले अपना करतब दिखायें या फिर हम दिखायें। मूसा ने फरमाया कि पहले तुमही दिखाओ। तो क्या देखते हैं कि उनकी रस्सीयाँ और उनकी लाठियाँ जादू के सबस से दौड़ती हुई नजर आ रही हैं। (सूरा ए ताहा)

नजरबन्दी के जादू की अलामत

1. इन्सान किसी पड़ी और खड़ी हुई चीज को हरकत करते हुए देखता

है और चलती हुई चीजों को रूकी हुई और बेकरार देखता है।

2. छोटा बड़ा और बड़ा छोटा नजर आने लगता है।
3. चीजें अपने बरअक्स (उल्टा) नजर आने लगती है। जैसा कि हजरत मूसा के जमाने में रस्सियों को तमाम लोग बड़े सांप की सूरत में दिखने लगे।

नजरबन्दी का जादू कैसे किया जाता है?

जादूगर किसी मआरूफ और आम सी चीज को मंगवाता है। फिर अपने शिर्किया वजाइफ और कुफ्रिया कलिमात पढकर शैतान से मदद तलब करता है। तो लोगों को वोह चीजें उनकी हकीकत के उल्टे नजर आने लगती है। ऐसा ही एक वाक्या एक शख्स ने मुझे बयान किया कि एक जादूगर लोगों के सामने अण्डे को रखकर उसको जादू के जरीये इन्तहाई तेजी से घूमाता है। एक दूसरा वाक्या इस तरह बयान किया गया है कि जादूगर दो पत्थरों को आपस में ऐसे टकराता है कि जैसे दो मैण्ढे (दुम्बे) आपस में टकरा रहे हों। इसका मकसद सिर्फ यह होता है कि लोगों को हैरत में डालकर मरउब किया जाये और उनकी जेबों को हल्का किया जाये।

कभी जादूगर इस किस्म को जादू की दूसरी किस्मों से मिला देता है। मसलन जुदाई डालने वाला जादू से खुबसूरत बीवी को बदसूरत नजर आने लगती है और मुहब्बत के जादू से बदसूरत बीवी खुबसूरत नजर आने लगती है।

नजरबन्दी के जादू का तोड़

इस जादू को हर उस नैक अमल से तोड़ा जा सकता है जिससे शैतान को भगाया जा सकता है। मसलन 1. अजान, 2. आदमी बावजुअु हो। इसके बावजूद भी अगर जादू ना टूटे तो समझीये कि वोह ढ़ोंग है जादू नहीं।

नजरबन्दी के जादू की काट का एक नमूना

एक जादूगर का कुरआन को घूमानाः

मिस्र के एक गांव में एक जादूगर लोगों के सामने अपनी फनकारी

का दिखावा इस तरह करता था कि लोगों से कुरआन मंगवाकर उस कुरआन को एक धागे के साथ बांध देता । फिर धागे को चाबी के साथ बांध देता और इसके बाद कुरआन को ऊपर उठाकर उल्टा लटका देता फिर तिलस्मी कलिमात पढ़कर कुरआन से कहता के दायें घूमों तो कुरआन तेज रफ्तार से दायीं तरफ घूमने लगता और वोह कहता के बायीं तरफ घूमों तो बायीं तरफ उसी तेज रफ्तारी से घूमता। लोग जादूगर को देखकर हैरान थे कि वोह अपने हाथों को हिलाये बगैर यह सारे काम करता है।

करीब था कि लोग गुमराह हो जाते क्योंकि वोह यह हरकत कुरआन के साथ करता था और लोगों में यह बात आम हो चुकी थी कि शैतान कुरआन को छू नहीं सकते। जैसे ही मुझको इस बात की जानकारी मिली तो मैं अपने साथ एक नौजवान को लेकर वहां पहुँचा (यह उस वक्त का वाक्या है जब मैं हाई स्कूल में पढ़ता था) मैंने लोगों के सामने उसको चैलेन्ज किया कि वोह अपना करतब दिखाये तो लोग यह सुन कर बहुत हैरान हुए। उसने फी अल वाक्या कुरआन मंगवाया, अपना मजकूरा अमल दोहराना चाहा, मैंने अपने साथी को बुलाकर दूसरी तरफ बैठा दिया और अपने साथी से मैंने कहा कि बार बार आयतलकुर्सी को पढ़ता रहे। और वोह बैठकर आयतलकुर्सी पढ़ता रहा और मैं भी उसके अलग जगह में बैठकर आयतलकुर्सी पढ़ता रहा। जब उसने अपने तिलस्मी कलिमात खत्म किये और कुरआन से कहा के दायीं तरफ घूमों तो कुरआन अपनी जगह टिका रहा। दोबारा उसने तिलस्मी अलफाज दोहराये और कुरआन से कहा के घूम, मगर बेसूद, कुरआन ना घूमा और अपनी जगह टिका रहा। और अल्लाह तआला ने उस जादूगर को एक बड़ी जमाअत के सामने जलील किया और यकीनन अल्लाह तबारक व तआला उसकी मदद करता है जो अल्लाह की फरमा बरदारी करता है और उस जादूगर का भांडा उस भरे मजमें में फूट गया। तमाम तारीफ अल्लाह रब्बुल इज्जत के लिए है और वही भरोसे के लायक है।

जादू की चौथी किस्म

सहर जनून : खारजा बिन सलत अपने चचा से नकल करती हैं कि वोह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और

इस्लाम कबूल किया। इस्लाम कबूल करने के बाद वोह वापिस आ रहे थे के उनका गुजर एक गांव से हुआ, वोह क्या देखते हैं कि एक पागल आदमी बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। उसके लवाहकीन ने कहा कि हमें जानकारी मिली है कि तुम्हारा यह आदमी (यानी खारजा बिन सल्लत का चचा) कोई अच्छा पैगाम लेकर आया है। उन्होंने पूछा क्या तुम जिन्नों का इलाज भी कर सकते हो। तो मैंने उस आदमी पर सूरा फातेहा पढ़कर दम किया तो मरीज शिफायाब हो गया। उन्होंने मुझको दो बकरियाँ इनायत की और मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर होकर पूरा वाक्या बयान किया। आपने फरमाया क्या तुमने सूरा फातेहा के अलावा भी कुछ पढ़ा। मैंने कहा नहीं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हारा यह झाड़–फूंक करके मुआवजा लेना बरहक है और एक रिवायत में है कि वोह सहाबी सूरा फातेहा पढ़कर तीन दिन तक सुबह व शाम दम करते रहे। जब भी सूरा फातेहा खत्म करे तो आप थूक को मुंह में जमा करके उस मरीज पर फूंकते। (इसे अबु दाउद ने रिवायत किया, किबात अलतब के बाब 19 में)

सहर जुनून की अलामात

1. हवास वाख्ता, परेशानी और भूलने की बीमारी।
2. बातचीत में अदम तवाजुन।
3. आंखों का पथरा जाना और बेरौनक हो जाना।
4. किसी एक जगह चैन ना आना।
5. किसी भी काम को दिल लगाकर ना करना।
6. अपने वजा–कता की तरफ तवज्जुह ना करना।
7. जिस वक्त इसका हमला होता है इन्सान उस तरफ चल पड़ता है जिसको वोह जानता ही नहीं और कभी कभी विरान जगहों पर सो जाता है।

सहर जुनून कैसे किया जाता है?

जिस जिन्न पर इस किस्म के जादू की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। जादूगर की हिदायत के मुताबिक) वोह जिन्न मरीज के दिगाम पर कब्जा करके उसकी कुव्वत हाफजे और दिमाग पर दबाब पढ़ाता है। नतीजतन

वोह जुनूनी (पागलपन) कैफियत में शामिल हो जाता है।

सहर व जुनून का इलाज

1. आप मरीज पर वही आयात पढ़कर दम करें जिन का जिक्र हम पहले कर चुके हैं।

2. जब मरीज को बेहोशी शुरू हो जाये तो उसके साथ वही अमल करें जैसा हम पहले बता चुके हैं।

3. और अगर बेहोश ना हो तो आप मजकूरा तरीके से तीन बार या तीन से ज्यादा बार झाड़–फूंक करें। और फिर गशीतारी ना हो तो उन सूरतों को आप किसी कैसेट पर रिकार्ड कर के दें ताकि वोह हर रोज दो या तीन बार एक माह तक सुने। यह आयात सफा नम्बर 63 में जिक्र की गई हैं। इनका तआल्लुक सूरा बकरा, हुद, हिज्र साफफात, रहमान, मुल्क, जिन्न, अलआला, जुल जिल, काफिरून, फलक और सूरा नास से है। यह बात याद रहे कि इन आयात को सूनकर मरीज इन्तहाई घूटन महसूस करेगा और इस बात का भी इमकान है कि मरीज क़ैसेट सुनते वक्त बेहोश हो जाये। और फिर जिन्न बात करने लगे और तकलीफ 15 दिन से ज्यादा भी हो सकती है। फिर ब–तदरीज महिने के आखिर में कम होती होती खत्म हो जाती है। ऐसी सूरत में आप मरीज को मजकूरा आयात को दोबारा सुनने के लिए कहें।

4. इलाज के दौरान मरीज को दर्द कम करने वाली गोलियां नहीं लेनी चाहिए इसलिए कि उनका गलत असर होता है।

5. इलाज के दौरान बिजली के झटके दिये जाते हैं क्योंकि जहाँ बिजली के झटके जल्द शिफायाबी के लिए मआव्वुन होते हैं तो वहां जिन्न के लिए भी तकलीफ का सबब होते हैं।

6. इस बात का यकीन है कि आप इस इलाज को एक महिने से कम मुद्दत तक के लिए भी महसूस कर सकते हैं और ज्यादा से ज्यादा तीन माह या उससे भी ज्यादा हो सकते हैं।

7. इलाज के दौरान इस बात का ख्याल करना चाहिए कि मरीज सगीरा या कबीरा (छोटे–बड़े) गुनाहों का इरतकाब ना करे। मसलन गाना सुनना, सिगरेट पीना या नमाज पढ़ने में कौताही करना। अगर मरीज औरत हो तो इन बातों के अलावा बेपर्दगी करना।

8 अगर मरीज के पेट में दर्द हो तो समझ जायें कि मरीज को जादू खिलाया या पिलाया गया है। आप उस वक्त मजकूरा पूरे तौर पर पढ़कर पानी दम करें और मरीज को मर्ज खत्म होने तक पिलायें ताकि मरीज के अन्दर जादू का असर खत्म हो जाये या मरीज उल्टी कर दे।

सहर व जुनून के इलाज की एक मिसाल

पहली मिसाल : कुछ लोग मेरे पास जंजीरों से जकड़े हुए एक शख्स को लेकर आये जिसने मुझे देखते ही उनको ऐसी लात मारी (जो लोग उसको बैड़ियों में कैद किये हुए थे।) वोह दूर जा गिरे। फिर सारे लोग उस पर टूट पड़े और उसको जमीन पर गिरा दिया। फिर मैं कुरआन पढ़कर उस पर दम करने लगा लेकिन जैसे जैसे मैंनें कुरआन पढ़कर उस पर दम करने लगा वेसे ही वोह मेरे चेहरे पर थूकने लगा। बाद में चन्द कैसेट मैंने उन्हें मरीज को 45 दिन तक सुनाने के लिए दिये और 45 दिन बाद वापिस आने के लिए कहा। और जब वोह लोग वापिस आये तो मरीज अपने होश व हवास में था। और जो पहली बार उसने मेरे साथ गुस्ताखी की थी उस पर वह शर्मिन्दा था क्योंकि वोह उस वक्त अपने होश व हवास में नही था। अब जब के उस पर कुरआनी आयात पढ़कर दम करने लगा तो काबिले जिक्र वाक्या पैश नहीं आया। फिर अलहम्दुलिल्लाह वोह पूरा तन्दुरूस्त होकर चला गया। और उसने दरयाफ्त किया के शिफायाब के नतीजे में उसे कोई सदका या रोजा रखना तो फर्ज नहीं है। मैंने जवाब दिया के ऐसा कोई अमल तुम पर वाजिब नहीं, हां अगर तुम अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए कुछ सदका करना चाहो तो कोई हर्ज नहीं बल्कि अच्छी बात है।

दूसरी मिसाल : एक दिन मेरे पास एक ऐसा नौजवान आया जिसके पागल होने में कोई शक व शुबा नहीं था। जैसे ही मैंने कुरआनी आयात

पढ़कर उस पर दम किया तो पता चला कि वोह सहर जुनून में शामिल है। सोने पर सुहागा यह के वोह चन्द दिन बाद शादी करने वाला था। तो मैंने उस पर चन्द और आयात दम की फिर चन्द कैसेट जिनमें कुरआनी आयात भरी हुई थी, मैंने उसे सुनने के लिए दी और फिर एक माह बाद वापिस आने के लिए कहा। तकरीबन बीस दिन गुजरे होंगे के उस मरीज का एक रिश्तेदार आया और यह खुशखबरी दी कि वोह सेहतयाब हो चुका है और फिर अलहम्दुलिल्लाह उसने शादी भी की।

अलहम्दुलिल्लाह यह सब अल्लाह तआला की मेहरबारी और फजल व करम का नतीजा है।

जादू की पांचवी किस्म

तन्हापसन्द या अकेलेपन का जादू

इस जादू की अलामात हसब जैल हैं:—

1. तन्हाई से लगाव।
2. पूरे तौर पर अलग थलग रहना।
3. सबके साथ रहने से नफरत।
4. दिमागी उलझन।
5. एकदम खामोशी
6. लगातार सर में दर्द होना।
7. पुर असरार खामोशी और सकून।

तन्हापसन्दी का जादू कैसे किया जाता है?

जादूगर जिन्न को उस शख्स के पास रवाना करता है जिस शख्स पर जादू करना मकसूद हो। और वोह जिन्न को हुक्म देता है कि वोह उस शख्स के दिमाग पर मुकम्मिल तौर पर कब्जा जमा ले। यहां तक के वोह लोगों से कट जाये। जिन्न अपनी ताकत के मुताबिक मतलूबा काम करने की कोशिश करता है और जादूजदा इन्सान पर जादू का इतना ही असर होता है जितना के जिन्न ताकतवर या कमजोर हो।

इस किस्म के जादू का इलाज

1. इस किस्म के मरीज पर मजकुरा तरीके से झाड़–फूंक करे। और जब मरीज बेहोश हो जाये तो आप जिन्न को मुखातिब कर के अच्छाई का हुक्म दें और बुराई से रोके जिस तरह के हम पहले इस बात को बता चुके हैं।

2. अगर मरीज बेहोश ना हो तो फिर आप मन्दरजा जैल सूरतों को कैसेट में रिकार्ड करके दें। 1. सूरा फातेहा, 2. बकरा, 3. आले इमरान, 4. यासीन, 5. साफ्फात, 6. अलदुखान, 7. जारयात, 8. हशर, 9. मआरिज, 10. गाशिया, 11. जिलजाल, 12. अलकारिआ, 13. फलक, 14. अलनास।

3. इन तमाम सूरतों की मजकूरा आयात को 3 कैसेटों में रिकार्ड करें और मरीज से कहें कि एक कैसेट सुबह और दूसरी दोपहर और तीसरी सोते वक्त सुने। इस अमल को 45 दिन तक करें।

4. यह मुद्दत पूरी होने तक या होते ही अल्लाह तआला ने चाहा तो मरीज शिफा हासिल करेगा।

5. मरीज को नींद और आरामदेह गोलियों से बचना चाहिए।

6. अगर मरीज अपने पेट में दर्द महसूस करे तो उसको मजकूरा आयात पानी पर दम करके पीने को दें उसी मुद्दत के लिए।

7. अगर मरीज लगातार सर दर्द में मुब्तला हो तो आप उसे मजकूरा आयात पढ़कर पानी पर दम करके दें और वोह उस पानी से मजकूरा मुद्दत तक हर तीन दिन के बाद गुस्ल करे, इस शर्त के साथ के उस पानी को आग पर गर्म ना करें और गुस्ल साफ–सुथरी जगह पर करें।

जादू की छठी किस्म

ना मालूम आवाजें सुनना

इस जादू की अलामातः

1. डरावने ख्वाबों का देखना।

2. इन्सान अपने ख्वाब मे देखता है कि जैसे उसे कोई पुकार रहा हो।
3. इन्सान जागते हुए में कुछ सुनता है जबकि पुकारने वाला दिखाई नहीं देता।
4. वसवसा (ख्यालात) का ज्यादा आना।
5. अजीज रिश्तेदारों और दोस्तों के बारे में ज्यादा शक व शुबे का पैदा हो जाना।
6. इन्सान का ख्वाब में ऐसा देखना जैसे वोह बहुत बुलन्द जगह से गिर रहा हो।
7. ख्वाब में देखना के कुछ खौफनाक जानवर उसको पकड़ रहे हों।

यह जादू कैसे किया जाता है?

जादूगर किसी जिन्न को यह काम सौंपता है कि वोह फलां शख्स को नींद और बेदारी में परेशान करें। जिन्न उस शख्स को कभी तो ख्वाब में दरिन्दे जानवर की शक्ल में डराता है और कभी हालत बैदारी में अजीबो-गरीब किस्म की आवाजों से उसको पुकारता है, कभी वोह आवाजे उसे जानी पहचानी लगती हैं। इस जादू के असरात कभी तो इन्सान को पागलपन की हद तक पहुँचा देते हैं और कभी महज वसवसे की हद तक रहते हैं।

इस जादू का इलाज

1. शुरू किताब में जो तरीका इलाज मजकूर है उसके मुताबिक मरीज को झाड़ फूंक करें।
2. अगर मरीज पर बेहोशी तारी हो जाये तो इलाज का पहले बयान करदा तरीका अपनायें।
3. अगर मरीज बेहोश नहीं होता है तो इसके लिए मन्दरजा जैल तरीका तजवीज करें।

1. सोने से पहले वजू करना और आयतलकुर्सी पढ़कर सोना।

2. मरीज को चाहिए कि अपने दोनों हाथों को दुआ मांगने की शक्ल में उठाये और उन पर मओजतेन पढ़कर दम करे और फिर अपने हाथों को पूरे जिस्म पर फैरे। यह अमल तीन बार करे।

3. सूरा साफ्फात सुबह के वक्त पढ़े और सूरा दुखान रात सोते वक्त

पढ़े या कम से कम इन दोनों सूरतों को सुने।

4. हर तीन दिन में एक बार सूरा बकरा पढ़ें या सुने।
5. रोजाना सुबह व शाम 7 बार हसबियल्लाह ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कलतु वहु–व रब्बुल अरशील अजीम पढ़े।
6. रोजाना रात को सोते वक्त सूरा बकरा की आख़री दो आयतें पढ़े। या कम से कम सुने।
7. सोते वक्त मरीज यह दुआ पढे :

(بسم الله وضعت جنبی اللهم
اغفرلی ذنبی و اخسی شیطانی وفک رهانی و اجعلنی فی
الندی الاعلیٰ)

8. मन्दरजा जैल सूरतें एक कैसेट पर रिकार्ड करें और उन कैसेट को मरीज रोजाना 3 बार सुने। सूरा साफफात, सूरा फतह, सूरा जिन्न। इन तमाम तालिमात पर एक महिने तक अमल करें तो इंशा अल्लाह मरीज शिफायाब हो जायेगा।

जादू की सांतवी किस्म

किसी को जादू के जरीये बीमारी में मुब्तला करना

इस जादू की अलामात

1. इन्सान के किसी हिस्से में लगातार दर्द रहना।
2. बेहोशी के दौरे पड़ना।
3. जिस्म के किसी अजू (हिस्सा) का बेजान हो जाना।
4. पूरे जिस्म का बेजान हो जाना।
5. इन्सानी जिस्म की किसी हिस्से का बेजान हो जाना।

यहां पर मैं यह बात वाजेह करना मुनासिब समझता हूँ कि यह अलामात आम जिस्मानी बीमारियों की अलामात से मिलती जुलती हैं अब इन दोनों में तफरीक (फर्क) इस तरह की जा सकती है कि मरीज पर कुरआनी आयात पढ़कर दम किया जाये और अगर मरीज कुरआन सुनते

हुए झटके महसूस करे या उस पर बेहोशी तारी होने लगे या जिस्म में कंपकपी तारी हो या सर में दर्द होने लगे तो आप समझें कि मरीज पर जादू किया गया है वरना यह आम बीमारी है। इसका डाक्टरों से इलाज करवाना चाहिए।

यह जादू कैसे किया जाता है?

यह एक मआरूफ बात है कि इन्सानी जिस्म में दिमाग का बुनियादी किरदार होता है। कोई भी इन्सानी हिस्सा खतरे का इशारा महसूस करते ही दिमाग से अहकामात हासिल करके उससे बचता है। यह सब एक सैकण्ड में बल्कि इससे भी कम वक्त में होता है।

तर्जुमा : यह अल्लाह तआला की कारीगरी है अल्लाह के सिवा जो झूटे मआबूद हैं जरा उनकी कारीगरी तो हमें दिखायें?

जब इन्सान इस जादू में मुब्तला होता है तो जिन्न इन्सान के दिमाग को निशाना बनाता है। जादूगर जैसे उसे हुक्म देता है वोह जिन्न उसके हुक्म की बजाआवरी करता है। लिहाजा या तो वोह जिन्न इन्सान की सुनने की ताकत या देखने की ताकत के मरकज को मुतासिर करता है या फिर उन दिगामी रगों को जिन्न का तआल्लुक हाथ या पांव से हो मुतासिर करता है। इसके लिए 3 सूरते हैं:–

1. या तो इन्सानी जिस्म का कोई अजु बकुदरत अल्लाह तआला बिल्कुल बेकार हो जाता है, मसलन मरीज का बिल्कुल अंधा या बहरा हो जाना या किसी हाथ पांव का बेजान हो जाना।
2. या वक्ती तौर पर ऐसा होता है कि फिर ठीक हो जाता है और उसके बाद फिर मरीज पर मर्ज का हमला होता है और फिर ठीक हो जाता है। मरीज को अकसर ऐसा होता रहता है।
3. मरीज का या तो दिमागी तवाजुन दुरूस्त नहीं रहता है, जिसकी वजह से जिस्म के निजाम कार करदगी में खलल वाक्या हो जाता है।

तर्जुमा : और वोह अल्लाह की मर्जी के बगैर किसी को कोई भी नुकसान नहीं पहुंचा सकते। यहां पर यह बात साबित है कि जादूगर के

जरीये सहर जदा इन्सान को जो भी नुकसान पहुंचता है यह सब अल्लाह तआला के हुक्म से है।

बहुत से डाक्टर इस बात को नहीं मानते थे लेकिन जब उन्होंने देखा तो ना चाहते हुए भी इसको मानना पड़ा। एक डाक्टर मेरे पास आया और कहा कि मुझे एक मसले ने परेशान कर दिया है। मैंने कहा खैर तो है, क्या बात है? डाक्टर ने कहा, एक शख्स अपने एक बच्चे को मेरे पास लेकर आया जो के पोलिया जदा था। यानी उस बच्चे का जिस्म किसी किस्म की कोई हरकत नहीं कर सकता था। जब मैंने उस बच्चे को चैकअप किया तो मालूम हुआ कि उसकी रीड की हड्डी किसी लाइलाज बीमारी का शिकार है। यहां तक के आपरेशन भी बेफायदा था। कुछ दिनों के बाद उस आदमी ने आकर मुझे जानकारी दी कि मेरा बेटा शिफायाब हो चुका है।

मैंने उससे पूछा के तुमने अपने बेटे को कहां से इलाज करवाया है तो उसने बताया के शैख वहीद के पास से।

लिहाजा मैं इस बारे में जानने आया हूं कि आपने उसका कैसे इलाज किया? मैंने उस डाक्टर को बताया कि मैंने कुरआनी आयात पढ़ी और कलूंजी के तेल पर दम करके दिया और उसे मालिश करने के लिए कहा। तो अल्लाह तआला ने उस बच्चे को शिफा दे दी। यह सब कुछ महज अल्लाह का करना है वरना मेरे पास कुछ नहीं है।

बीमारी वाले जादू का इलाज

1. जैसे के हम पहले बयान कर चुके हैं मरीज के सामने मजकूरा कुरआनी आयात की तीन बार तिलावत की जाये और जब मरीज बेहोश हो जाये या उस पर गशी तारी हो जाये तो बयान करदा तरीके से इलाज किया जाये।
2. और अगर मरीज बेहोश ना हो और मामूली सी तब्दीलियाँ ही उस पर रोनुमा हो तो इसके लिए ऐसे मरीज पर मन्दरजा जैल नुस्खे तजवीज करें। कैसेट पर आप सूरा फातेहा, सूरा दुखान और सूरा जिन्न और छोटी सूरतें यानी सूरा बइना से लेकर सूरा नास तक रिकार्ड कर के मरीज को दें और वोह कैसेट को हर रोज तीन बार

ध्यान से सुने।

इसके अलावा मरीज को कलूंजी के तेल पर यह आयात और सूरा दम करके दें और ताकीद करें कि मरीज उस तेल को अपनी पैशानी और दर्द वाली जगह पर मालिश सुबह व शाम करे वोह सूरा आयात यह हैं:

1. सूरा फातेहा (अलहम्दु शरीफ)
2. मओजतेन (कुल अउजु बि रब्बील फलक और कुल अउजु बि रब्बीनन्नास)

آیت۔ وننزل من القران ما ھو شفآء ورحمۃ للمؤمنینO

اس آیت کو سات مرتبہ پڑھیں۔

بسم اللہ ارقیک واللہ یشفک من کل دایؤذیک و من کل نفس اوعین حاسد اللہ یشفیک

اللھم رب الناس اذھب البأس واشف انت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما۔

इन तआलिमात को 40 दिन तक जारी रखें और अगर शिफा हो जाये तो ठीक है वरना यह अमल करते रहें यहां तक के मरीज शिफायाब हो जाये।

बीमारी वाले जादू के इलाज का एक नमूना

एक लड़की जिसकी जबान एक माह से बोलने की ताकत से महरूम हो गई थी वोह अपने भाई और बाप के हमराह मेरे पास आई। उन्होंने बताया कि इस लड़की का मुंह ऐसे बन्द हुआ कि खाने पीने के लिए भी जबरदस्ती इसका मुंह खोलना पड़ता है। उस लड़की पर जब मैंने कुरआनी आयात पढ़कर दम किया तो अलहम्दुलिल्लाह उसका मर्ज जाता रहा और उसकी बोलने की ताकत वापिस आ गई।

दूसरा नमूना : जिन्न का एक औरत के पांव पकड़ना
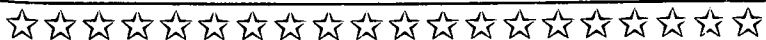
एक औरत मेरे पास आई और मुझे बताया के उसके पांव में बहुत ज्यादा दर्द है। मैं समझा कि हो सकता है के उसके पांव में मौच आ गई होगी क्योंकि वोह बिलकुल ही कदम नहीं उठा सकती थी। फिर भी मैंने उस पर झाड़–फूंक शुरू की और वोह सूरा फातेहा सुनते ही बेहोश हो गयी ओर उसमें जिन्न बोलने लगा। कहने लगा के उसने इस औरत का पांव पकड़ रखा है। तो मैंने उस जिन्न से कहा के अल्लाह तआला की रजा के लिए औरत से फौरन निकल जा। तो अलहम्दुलिल्लाह वोह निकल गया और औरत शिफायाब हो गई।

एक शख्स का वाक्या जिस का चेहरा जिन्न ने एक तरफ घूमा दिया था

एक शख्स मेरे पास आया जिसका चेहरा दायीं तरफ को मुड़ा हुआ था। मैंने उस पर कुरआनी आयात पढ़कर दम की तो उसमें से जिन्न बोल पड़ा और कहा के इस शख्स ने मुझे तकलीफ पहुंचायी है। इसलिए मैंने इसका चेहरा घूमा दिया है। तो मैंने उस जिन्न को वअज व नसीहत की तो अलहम्दुलिल्लाह जिन्न ने उस शख्स को छोड़ दिया और मरीज शिफायाब हो गया।

एक ऐसी लड़की किस्सा जिसके इलाज से डाक्टर बेबस हो गये थे

एक दिन एक शख्स मेरे पास आया और मुझे बताया के उसकी बच्ची पर अचानक बेहोशी का हमला हुआ है और महिनों से उसकी यह हालत है के वोह सुन तो सकती है लेकिन बात नहीं कर सकती है और ना ही कुछ खा पी सकती है और ना ही अपने जिस्म के किसी अंग को हरकत दे सकती है। इस वक्त वोह सउदिया में मिस्र अस्पताल में जेर इलाज है। डाक्टरों का कहना है कि तमाम लैबोरटी टेस्ट ठीक हैं। समझ

में नहीं आ रहा आखिर क्या बात है? इस वक्त उसकी हालत यह है कि सांस लेने के लिए उसके गले में एक सुराख कर दिया गया और नाक से पाईप के जरीये उसके पेट में खाना पहुँचाया जाता है। उसकी जिन्दगी के बाकी बचे दिन इसी तरह गुजर रहे हैं।

मैं ईलाज की गरज से किसी के भी पास नहीं जाता हूँ, चाहे वोह कैसा भी आदमी हो। वोह चूंकि मेरे एक अजीज दोस्त और एक फाजिल दाई शैख सैयद बिन मुस्फर कहतानी (जो के साउदीया के एक मशहूर आलिम हैं) का पैगाम लेकर मेरे पास आये थे तो इसलिए मजबूरन मुझे उनके साथ जाना पड़ा।

अस्पताल में दाखिल होने का एक खसूसी (खास) इजाजत नामा हासिल करने के बाद मैं लड़की के इलाज के लिए उसके कमरे में पहुंचा। देखा के वोह लड़की इन्तहाई नागुफ्ता बेहालत में बिस्तर आलात पर पड़ी हुई है। सिर्फ वोह सुन और देख सकती है और सर को मामूली हरकत दे सकती है। जब मैंने उसकी तशखीस की तो उसने इशारे से नफे में जवाब दिया तो मैं किसी भी नतीजे पर नहीं पहुंचा। उसके बाद मगरीब की नमाज पढ़ाने हम लोग मस्जिद में गये, वहां जाकर मैंने दुआ की और वापिस आकर उसके सर पर हाथ रखा और सूरा फलक की तिलावत की और दुआ पढ़ी तो बफजल अल्लाह तआला लड़की बोलने लगी। उसका बाप और भाई खुशी से रो पड़े। उसके बाप ने मेरे सर का चुम्मा लेना चाहा तो मैंने उससे कहा कि इसमें मेरा कोई भी दखल नहीं है। यह सब अल्लाह तआला की मेहरबानी है। इसके बाद लड़की ने कहा कि मैं अस्पताल से घर जाना चाहती हूं। फिर उसको वोह लोंग घर ले गये।

जिन्न का मकाम जादू की रहनुमाई करना

एक नौजवान मरीज मेरे पास आया और जब मैंने उस के सामने कुरआनी आयात की तिलावत की तो उस के अन्दर से जिन्न बोल उठा। वोह कहने लगा कि उसको फलां शख्स ने जादू किया है और जादू को दरवाजे के पाट में रखा हुआ है। फिर मैंने उस जिन्न से निकलने के लिए कहा तो अलहम्दु लिल्लाह वोह निकल गया और मरीज के घर वाले

मजकुरा जगह गये तो जादू को कुछ फटे हुए कागजों की सूरत में वहां पाया। उन लोगों ने उन कागजों को पानी में बहा कर जादू का खात्मा किया और अलहम्दुलिल्लाह मरीज शिफायाब हो गया।

जादू की आंठवी किस्म

इस्तेहाजा (यानी सिलान रहम) का जादू

यह जादू कैसे किया जाता है?

जादू की इस किस्म का शिकार मरीज औरतें ही होती हैं। जिस औरत पर जादू करना मकसूद होता है जादूगर उस औरत पर जिन्न मुसल्लत (हावी) करके खून बहाने पर मामूर कर देता है। जिन्न औरत के जिस्म में दाखिल होकर खून के साथ रगों में गर्दिश करना शुरू कर देता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि शैतान इब्ने आदम के अन्दर खून की तरह गर्दिश (दौडना) करता है। (बुखारी व मुस्लिम)

जिन्न जब औरत के रहम में एक खास रग तक रिसाई हासिल कर लेता है तो वोह ऐसे कुछ मारता है जिसके नतीजे में उस रग से खून बहना शुरू हो जाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमना बिनत हजश को इस्तेहाजा के मुताअल्लिक उनके सवाल का जवाब देते हुए फरमाया था यह तो शैतान ही का काम है। (इसको तिरमजी ने रिवायत किया है) दूसरी रिवायत में हैं कि यह तो एक रग का खून है ना कि हेज।

दोनो रिवायतों को जानकर यह नतीजा निकालना मुश्किल नहीं है के इस्तहाजा उस वक्त होता है कि जब शैतान औरत के रहम में मौजूद रगों से शरारत करता है।

इस जादू की हकीकत

फीकहा इसे इस्तहाजा का नाम देते हैं। और डाक्टरों की जुबान में इसे सिलान रहम कहा जाता है। अल्लामा इब्ने कसीर फरमाते हैं,

इस्तहाजा उस खून को कहते हैं जो अय्याम हेज के बाद भी औरत के रहम से जारी रहे। खून की मिकदार कम या ज्यादा हो सकती है लेकिन कई महिनों तक यह खून जारी रहता है।

इस जादू का इलाज

अगर फिर भी खून बन्द ना हो तो आयत "लकुल नबा मुसतकर" इस आयत को साफ सुथरे रोशनाई से लिखकर पानी में हल करके मरीज को दो या तीन हफ्ते तक पिलाते रहें। इंशा अल्लाह तआला शिफा होगी।

इस जादू के इलाज का एक अमली नमूना।

इस मर्ज की शिकार एक औरत मेरे पास आयी तो मैंने उस पर कुरआनी आयात पढकर दम किया फिर उसको कुरआन की रिकार्ड शुदा कैसेट सुनने के लिए दी। तो अल्हम्दुलिल्लाह चन्द दिनों में शिफायाब हो गई।

जहां तक कुरआनी आयात को लिखकर पानी में मिलाकर पीने का तआल्लुक है तो इसके जवाज का फतवा शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तेमिया रहमतुल्लाह अलैहि ने दिया है। आप फरमाते हैं कि मरीज के लिए कुरआनी आयात लिखकर उस पानी में मिलाकर पिलाया जाये और उसे गुस्ल कराया जाये। ऐसा करना जाइज है।

जैसे कि इमाम अहमद वगैरह ने इस पर दलाईल दर्ज किये हैं। फतवा इब्ने तेमिया (64 / 19)

जादू की नवीं किस्म

शादी में रूकावट डालने का जादू

यह जादू कैसे किया जाता है?

बदनियत (बुरी नियत रखने वाला) इन्सान खबीस जादूगर के पास जाता है और उसके सामने जाकर यह मुतालबा पेश करता है कि फलां

की बेटी पर ऐसा चक्कर चला दो के वोह शादी से इनकार कर दे या फलां के बेटे पर ऐसा चक्कर चला दो के वोह शादी से इनकार कर दे। जादूगर कहता है कि यह कोई मुश्किल काम नहीं है। आप सिर्फ उस लड़की या उस लड़के की कोई चीज लाकर दें, जिस पर जादू करना मकसूद है और उसका और उसकी मां का नाम बता दें तो यह काम हो जायेगा। जादूगर उस काम के लिए जिन्न को मामूर करता है तो वोह जिन्न उस लड़की का तआकुब करता है और मन्दरजा जैल में से किसी एक हालत में मौका पाकर लड़की में दाखिल हो जाता है:-

1. खतरनाक किस्म के डर और खौफ की हालत।
2. गफलत की हालत में।
3. इन्तहाई गुस्से की हालत में।
4. लज्जत और शहवत की हालत में।

जिन्न ऐसी सूरतों में दो काम करता है:-

1. या तो औरत में दाखिल होकर हर उस शख्स के लिए उसके दिल में नफरत बिठा देता है जो भी उसकी शादी का पैगाम लेकर आये।
2. या औरत में दाखिल ना हो सके तो मर्द के दिल में ख्याल डालता है कि औरत बुरी और बदसूरत है और यही कुछ औरत के साथ भी करता है। इसका नतीजा यह होता है कि जो आदमी भी निकाह का पैगाम लेकर आता है औरत उसे कबूल नहीं करती है और अगर वोह इब्तदाई तौर पर मुवाफिक्त कर भी ले तो कुछ दिनों के बाद शैतानी वसवसे की वजह से इनकार कर देती है (या कर देता है) और जब जादू बहुत ज्यादा ताकतवर होता है तो मर्द को अपनी मंगेतर के घर दाखिल होते ही इस कदर तंगी का अहसास होता है कि वोह उस तरफ का रूख नहीं करता।

इस जादू की अलामात

1. अलग अलग वक्त में सर का दर्द होना, जिसका दवाओं से कोई इलाज ना हो।
2. इन्तहाई तंगदिली शाम के वक्त से लेकर आधी रात तक।

3. मंगेतर का इन्तहाई बुरे मंजर में नजर आना।
4. हर वक्त दिमागी परेशानी में मुब्तला रहना।
5. नींद में बैचेन रहना।
6. पेट में लगातार तकलीफ महसूस करना।
7. रीढ़ की हड्डी के नीचले हिस्से में दर्द महसूस होना।

इस जादू का इलाज

आप मरीज पर शुरू किताब में दर्ज शुदा कुरआनी आयात पढ़कर दम करें और अगर मरीज बेहोश हो जाये और जिन्न बात करने लगे तो उस के साथ वैसे ही पैश आयें जैसे बताया गया है। और अगर मरीज बेहोश ना हो और जिस्म में दूसरी तब्दीलियां महसूस करे तो उसे मन्दरजा जैल तआलीम दें:—

1. तमाम नमाजों की सही टाईम पर पाबन्दी।
2. गाने और म्यूजिक से दूर रहना।
3. सोने से पहले बावजुअु होकर आयतलकुर्सी पढ़कर सोये।
4. सोने से पहले मओजतेन यानी सूरा फलक और सूरा नास पढ़कर अपने दोनों हाथों पर फूंकें और फिर अपने पूरे जिस्म पर अपने हाथों को मलें। (यह अमल तीन बार करें।)
5. आयतलकुर्सी को एक घंटे की कैसेट पर रिकार्ड करके मरीज रोजाना एक बार जरूर सुने।
6. एक दूसरी कैसेट पर जो के एक घंटे की हो उस पर लगातार सूरा इख्लास, सूरा फलक और सूरा नास रिकार्ड कर के मरीजा रोजाना उसको कम से कम एक बार जरूर सूने।
7. शुरू के पन्नों पर मजकूरा कुरआनी आयात को पानी पर दम करके मरीजा को पिलायें और उस पानी से उसे गुस्ल करायें। यह अमल भी तीन दिन तक करें। (नोट गुस्ल किसी पाक व साफ जगह पर करायें)
8. मरीज को चाहिए कि फजर की नमाज के बाद रोजाना ''ला इलाहा इल्लल्लाहु वाह दहु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहु व अला कुल्ली शइईन कदीर'' सौ बार पढ़े।

यह तालीम एक महिने तक जारी रखें। एक महिने के बाद दो बातों में से कोई एक सामने आयेगी। इंशा अल्लाह या तो पूरी तरह ठीक हो जायेगी या फिर तकलीफ में इजाफा हो जायेगा और जब आप कुरआन पढ़कर मरीज पर दम करेंगे तो मरीज पर गशीतारी हो जायेगी। इसके बाद आप वही तरीका अपनायें जो हम पहले बयान कर चुके हैं।

शादी में रूकावट डालने के जादू के इलाज का एक नमूना

एक ऐसी औरत का किस्सा जो रात को शादी के लिए रजामन्द हो जाती और सुबह इनकार कर देती थी।

एक दिन एक नौजवान मेरे पास आया और कहने लगा कि हमारी एक बेटी का अजीबोगरीब किस्सा है। जब उसके रिश्ते के लिए कोई पैगाम लेकर आता है तो वोह बड़ी खुशी से उस पर राजी हो जाती है और सुबह होते ही बगैर कोई वजह बताये वोह शादी से इनकार कर देती है। बार बार ऐसा होता है जिसकी वजह से हम लोग बहुत परेशान हैं। इस सिलसिले में आप क्या फरमाते हैं? मैंने कहा के आप उस लड़की को मेरे पास लेकर आयें, चुनाचे वोह उस लड़की को मेरे पास लेकर आया और जब मैंने कुरआनी आयात पढ़कर उस लड़की पर दम किया तो फौरन वोह लड़की बेहोश हो गई और उसमें परी (जिन्न की मोन्नस) बोल पड़ी।

मैंने कहा, तुम कौन हो?

उसने कहा मैं फलां परी हूँ।

मैंने कहा तुम इस लड़की को क्यों परेशान कर रही हो?

उसने जवाब दिया मुझे इस लड़की से मुहब्बत हो गई है।

मैंने कहा के यह तो तुम से मुहब्बत नहीं करती, आखिर तुम इससे क्या चाहती हो?

वोह कहने लगी, यह लड़की शादी ना करे।

मैंने कहा, "तुम इसके साथ क्या फरेब करती हो कि यह शादी से इनकार कर देती है?"

उसने जवाब दिया कि जब भी कोई शादी का पैगाम लेकर आता है तो यह रजामन्द हो जाती है लेकिन रात को मैं इसके ख्वाब में आकर इसको डराती हूँ और धमकी देती हूं कि अगर तुमने ऐसा किया तो बहुत बुरा होगा।

मैंने कहा कि तुम किस दीन को मानने वाली हो?

उसने जवाब दिया कि मैं मुसलमान हूँ।

मैंने कहा कि यह शरअन नाजाइज है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि ना खुद नुकसान उठाओ और ना किसी को नुकसान पहुँचाओ और यह जो तुम कर रही हो एक मुसलमान को नुकसान पहुँचाना यह शरअन नाजाइज है और आखिर में वोह परी राजी हो गई और उस लड़की से निकल गई। हर किस्म की तारीफ के काबिल सिर्फ अल्लाह तआला की जात है और हर किसी का इख्तेयार और कुव्वत अल्लाह तआला ही के हाथ में है।

जादू के मुताअल्लिक अहम मालूमात

1. मुमकिन है कि जादू की अलामात तसर्ररूफ का मायना यह है कि किसी आदमी पर जिन्न का काबिज होना) के अलामात से मिलते जुलते हों।

2. पेट में लगातार दर्द और तकलीफ का होना इस बात की निशानी है कि जादू करके खिलाया या पिलाया गया है।

3. कुरआनी इलाज के लिए दो शर्तों का होना बहुत जरूरी है।

   पहला : इलाज करने वाला अल्लाह तआला के अहकामात का पाबन्द हो यानी उस पर मजबूत जमा रहे।

   दूसरा : मरीज का कुरआनी इलाज पर पूरा भरोसा और यकीन हो।

4. अक्सर जादू की अलामतें दर्ज जैल हालत में यकसा होती है। यानी दिल में घूटन महसूस करना बिल खुसूस रात के वक्त।

5. जादू की जगह को दो तरह से तलाश किया जा सकता है।

पहला : जादू पर मामूर जिन्न इस बात की खबर दे कि जादू फलां जगह पर है। आप बिना तहकीक के इस बात की तसदीक ना करें इसलिए के जिन्नों में झूठ बोलने की आदत होती है यानी जिन्नात में झूठ बहुत पाया जाता है।

दूसरा : मरीज या मुआलिज को बहुत ही इख्लास और खुशुअ व खुजुअ से रात के आखरी पहर में दो रकआत नमाज अदा करनी चाहिए और अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि उस जादू की जगह को वाजेह कर दे। नसीहतन जादू की जगह ख्वाब या अहसास या गुमान से मआलूम हो जाती है। लिहाजा उसके नतीजे में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए।

6. आप ऐसा भी कर सकते हैं कि कलूंजी के तेल पर कुरआनी आयात पढ़कर दम करें और सुबह व शाम दर्द की जगह पर मालिश करना तजवीज करें, सही बुखारी शरीफ की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मौत के अलावा कलूंजी हर बीमारी से शिफा का जरीया है।

एक ऐसी मरीजा का वाक्या जिसको अल्लाह तआला ने जादू की जगह के बारे में मुतलाअ फरमाया (बताया)

यह लड़की मेरे पास आई। जब मैंने कुरआनी आयात पढ़कर झाड़–फूंक किया तो पता चला कि उस पर जबरदस्त जादू किया है। मैंने उसके घर वालों को इलाज के बारे में बताया (जो के पीछे गुजर चुका है) और कहा कि इंशा अल्लाह जादू खुद ब खुद जहां हैं वहीं खत्म हो जायेगा। उन्होंने कहा कि कोई ऐसा तरीका बतायें कि हम लोग जादू की जगह को मालूम कर सकें?

मैंने कहा हां, रात के आखिरी हिस्से में अल्लाह तआला से गिड़गिड़ा कर यानी आजजी से दुआ करें। ठीक उन्होंने ऐसा ही किया और मरीजा ने ख्वाब में देखा कि उसको कोई हाथ पकड़कर घर में उस जगह ले जा

रहा है जहां पर जादू दफन किया गया था।

सुबह हुई तो मरीजा ने अपना ख्वाब घर वालों को सुनाया और उसके घर वालों ने उसकी बताई हुई जगह को खोदना शुरू कर दिया। थोडी ही देर खोदने के बाद उनको वहाँ जादू की पोटली मिल गई जिसे उन्होंने जला दिया और अलहम्दुलिल्लाह जादू खत्म हो गया और मरीजा शिफायाब हो गई।

सांतवा बाब

नामर्दी का इलाज

नामर्दी क्या है?

जो काबिल अलखलकत इन्सान बिना किसी बीमारी या पैदाईशी नुक्स के अपनी बीवी से हमबिस्तरी ना कर सके तो उसको नामर्द कहते हैं?

मर्द में जिन्सी कुव्वत का असल मनबुआ

हर शख्स यह बात जानता है कि मर्द का आला तनासुल रबड़ की तरह लचकदार गोश्त का एक टुकड़ा होता है। जब खून का दबाव उसमें बढ़ता है तो उसमें तनाव आ जाता है और जब उसमें खून का दबाव कम हो जाता है तो उसमें ढ़िलापन आ जाता है यानी उसका तनाव खत्म हो जाता है।

तनाव की कैफियत तीन रास्तों से होकर गुजरती है।

1. जब मर्द के अन्दर जिन्सी शहवत पैदा होती है तो मर्द के खसियों से एक खास किस्म के हार्मोन्स पैदा होती है जिसकी आमेजिश से खून सर की जिल्द तक पहुंच जाता है और जिस्म के अन्दर एक बिजली सी दौड़ने लगती है।

2. चूंकि जिन्सी शहवत का कंट्रोल दिमाग में होता है। लिहाजा यह

मरकज इन्तहाई तेज बरकी रूओं को रीढ की हड्डी में जो कि तनासुल आजा का मरकज होता है, उस तक पहुंचा देते हैं।

3. इसके बाद रीढ़ की हड्डी के जो "वाल" बन्द होते हैं वोह खुल जाते हैं और उछलता कूदता खून मखसूस आजा में पहुँच जाता है, जिसके नतीजे में मर्द के आला तनासुल में तनाव पैदा हो जाता है।

नामर्दी का जादू कैसे किया जाता है?

जादू पर मामूर शैतान मर्द के दिमाग में घुस जाता है। बिलखसूस मरकज शहवत में और बाकी अजाये मखसूसा नार्मल हालत में काम करते रहते हैं। लेकिन जब मर्द अपनी बीवी से मुबाशरत करना चाहता है तो शैतान उस मर्द के दिमाग में मौजूद जिन्सी मरकज को फैल कर देता है जिसके नतीजे में खून को चलाने वाली मशीनें ठप्प हो जाती है और अजु तनासुल (शर्म गाह) से खून वापिस खींच जाता है और एक दम से ढ़िला पढ़ जाता है और सिकुड़ जाता है।

इसलिए आप देखेंगे कि मर्द जब अपनी बीवी के साथ बोसा (पप्पी) व किनार करता है तो उस व़क्त बिलकुल सही हालत में होता है। यानी उसका आला तनासुल कुव्वत मर्दानगी से भरपूर होता है और दुखूल के वक्त सिकुड़ जाता है और जिन्सी अमल नाकाम हो जाता है। कभी आप देखेंगे कि एक ही आदमी की दो बीवीयां होती है। उसमें से एक के साथ तो वोह मुबाशरत करने में आजिज रहता है जबकि दूसरी बीबी के साथ हक जवजियत आसानी के साथ अदा क़र लेता है।

यह सब इसलिए के जादू उसी एक से दूर रखने के लिए किया जाता है।

औरत का मुबाशरत से लाचार होना

जिस तरह से मर्द को अपनी बीवी के साथ मुबाशरत के वक्त लाचारी का सामना करना पड़ता है, उस वक्त उसी तरह औरत को भी ऐसी ही आजमाईश से दो चार होना पड़ता है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

औरत के रब्त की पांच किस्में हैं

1. रब्तमनाः

रब्तमना यह है कि औरत अपने शौहर को अपने करीब आने से रोके। मसलन वबक्त मुबाशरत अपनी दोनों रानों को आपस में चिपका ले। जिससे मर्द के लिए मुबाशरत करना मुमकिन ना रहे। ऐसा करना औरत की चाहत, इरादे से खारिज और उसकी ताकत से बाहर होता है।

एक नौजवान की बीवी इसी किस्म के जादू में मुब्तला थी। वोह उस बेचारी पर बहुत गुस्सा करता था तो वोह अपने शौहर को कहती कि यह मेरे बस से बाहर है, इसमें मेरे इरादे का कोई दखल नहीं, बल्कि उस बेचारी ने तो यह तक कहा कि हमबिस्तरी करने से पहले आप मेरी टांगें बांध दें ताकि वोह आपस में एक दूसरे के साथ ना मिले। फी अल वाक्या उसके शौहर ने ऐसा ही किया लेकिन उसे कामयाबी ना हुई। इसके बाद बीवी ने अपने शौहर को मशवरा दिया कि वोह उसे मुबाशरत से पहले नशे वाला इंजेक्शन लगाये और कोशिश करे। खाविन्द ने इंजेक्शन लगाया और कामयाब रहा, लेकिन यह कार्यवाही एक तरफा रही, यानी बीवी इस मुबाशरत से "ला तआल्लुक बे इल्म" रही।

2. दिमागी हस का रब्त-

औरत के दिमाग में मरकज शअुर पर जिन्न कंट्रोल कर लेता है, लिहाजा जब शौहर अपनी बीवी के साथ मुबाशरत करना चाहता है तो जिन्न उसकी बीवी के अहसास को खत्म कर देता है। जिसकी वजह से औरत को फितरी जरूरत की तकमील का अहसास नहीं होता और ना ही वोह अपने शौहर के सामने हम बिस्तरी की ताकत पैदा कर सकती है बल्कि उस वक्त उस बेचारी की ताकत बेजान जिस्म की सी होती है। शौहर चाहे जो कुछ भी करता रहे, औरत उस ताकत से बेनयाज होती है। लिहाजा इसके नतीजे में औरत की अनदाम नहानी (शर्मगाह) बिलकुल खुश्क (सूखी) रहती है। जिसमें

किसी किस्म की फितरती तरी पैदा नहीं होती है। लिहाजा जिन्सी ताल्लुकात कामयाबी के साथ पाया तकमील तक नहीं पहुंच पाते।

3. रब्त नजीफ (यानी सैलान रहम) का जादू:

इससे पहले भी हम सैलान रहम का जिक्र जादू की आंठवी किस्म में कर चुके हैं लेकिन यहां पर कैफियत थोड़ी अलग है।
यहाँ खून का जरीयान बवक्त मुबाशरत होता है जबकि पहली किस्म में खून लगातार बहता रहता है। यहां यह होता है कि इधर बीवी ने मर्द से मुजामअत का इरादा किया और उधर औरत का खून बहना शुरू हो गया जिसके नतीजे में मर्द जिन्सी अमल नहीं सकता। इसी सिलसिले में एक आदमी ने मुझ से एक वाक्या बयान किया कि एक फौजी जब भी अपनी छुट्टी गुजारने के लिए घर आता तो घर पहुँचते ही उसकी बीवी को खून जारी हो जाता और लगातार छुट्टी की पूरी मुद्दत में औरत की यह हालत रहती और जब वोह छुट्टी खत्म करके वापिस चला जाता और जैसे ही घर से बाहर निकलता तो औरत फौरन ही सेहतमन्द हो जाती, उस शौहर के साथ हमेशा ही ऐसा होता रहा।

4. रब्त इनसराद:

इसमें जब भी मर्द अपनी बीवी से हम बिस्तरी करना चाहता है तो उसे बहुत ज्यादा रूकावट का सामना करना होता है। अनदाम नहानी (शर्मगाह) के अजालात एक मजबूत दीवार की सी शक्ल इख्तेयार कर लेते हैं जिसकी वजह से जिन्सी मिलाप बुरी तरह नाकाम हो जाता है।

5. रब्त तगवीर :

मर्द किसी कुंवारी लड़की से शादी करता है और पहली ही रात में उसे अहसास होता है कि वोह लड़की कुंवारी नहीं है, लेकिन जादू के बाद परदा फिर अपनी हालत पर आ जाता है।

रूकावट के जादू का इलाज : अलग अलग तरीके

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

पहला तरीका :

आप छठे बाब के शुरू में मजकुरा कुरआनी आयात पढ़कर मरीज पर दम करें और जब मरीज बेहोश हो जाये और उसमें से जिन्न बात करने लगे तो आप उससे जादू की जगह मालूम करें। जब मालूम हो जाये तो जादू को वहां से निकालकर जला दें या चलते हुए पानी में बहा दें और जिन्न से कहें कि वोह मरीज के जिस्म से निकल जाये। अगर जिन्न आसानी से निकल जाये तो अलहम्दुलिल्लाह समझें कि जादू के असरात खत्म हो गये और अगर जिन्न मरीज से बात नहीं करता है तो फिर आप इलाज का दूसरा तरीका अपनायें।

दूसरा तरीका : मन्दरजा जैल कुरआनी आयात को 7 बार पढ़कर पानी पर 7 बार दम करके मरीज को पिलायें और मरीज उस पानी से 7 दिन तक गुस्ल करे तो इंशा अल्लाह जादू खत्म हो जायेगा, आयात यह हैं :–

1. ''अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। फ–लम्मा अल्कव का–ल मूसा मा जिअतूम बिहिस्सिहरू, इन्नल्लाह–ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला–ह ला युस्लिहु अ–म–लल्मुफसिदीन 0 व युहिक्कुल्लाहुल–हक–क बिकलिमातिही व लव करिहल– मुज्रिमून 0 (सूरा ए यूनूस, पारा 11, आयत नं. 81 से 82 तक)

2. ''अअुजु बिल्लाहि मिनश–शैतानिर्रजीम। व अवहईना इला मूसा अन अल्कि असाक फइजा हिय तल्कफु मा यअफिकून 0 फ व–क–अल–हक्कु व ब–त–ल मा कानू यअ–मलून 0 फगुलिबू हुनालि–क वन्कलबू सागिरीन 0 व उल्कियस्स–ह–रतु साजिदीन 0 कालू आमन्ना बिरब्बिल आलमीन 0 रब्बि मूसा व हारून 0 (सूरा ए आराफ, आयत नं. 117 से 122)

तीसरा तरीका :

सब्ज (हरी) बेरी के सात पत्ते लेकर उनको पत्थर की सिल और बट्टे से कुट लिया जाये। फिर उन्हें किसी पानी के बरतन में डालकर बरतन को अपने मुंह के करीब करके पत्तों को पानी में उलटते पलटते रहें

और उस पर यह आयात पढ़कर दम करें। आयतलकुर्सी सात बार और मओजतेन सात बार पढ़कर पानी पर दम करें और उस पानी को मरीज को सात दिन तक पिलायें और सात ही दिन तक उसको गुस्ल करायें तो इंशा अल्लाह मरीज सेहतमन्द हो जायेगा और जादू खत्म हो जायेगा। मगर शर्त यह है कि दम शुदा पानी को आग पर गर्म नहीं करना। और अगर सर्दी हो तो धूप में पानी गरम कर सकते हैं और ख्याल रहे कि वोह पानी गुस्ल करते वक्त नापाक जगह पर ना गिरे।

चौथा तरीका :

मजकुरा आयात की तिलावत मरीज के कान में करें और साथ ही इस आयात को भी मरीज के कान में पढ़ें।

तर्जुमा : और जिसने जो अमल किया उसे हम पहले से ही जानते हैं लिहाजा हमने उसे रेजा रेजा कर दिया (सूरा फुरकान, पारा 19, आयत नं. 23)

पांचवा तरीका :

हाफिज इब्ने हजर रह. ने इस किस्म के झाड़ फूंक पर इमाम शाफई रह. से दलील नकल की है। (तफसील के लिए देखें फतहुलबारी, जिल्द 10, सफा, 233) कि आदमी जंगल में चला जाये जहां पर कांटेदार झाड़ियां हो वहां अपने दायें बायें से उन झाड़ियों के पत्ते जमा करे और उनको घर लाकर अच्छी तरह कूट कर बारीक कर लें और फिर उन पर कुरआनी आयात पढ़कर दम करें। फिर उसको पानी में मिलाकर गुस्ल करें। (मैं मुनासिब समझता हूँ कि इस पर मओजतेन और आयतलकुर्सी पढ़ें)

छठा तरीका :

हाफिज इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैही फरमाते हैं कि मैंने किताब अलतब (तालीफ जाफर मुस्तगफिरी) में झाड़ फूंक का तरीका देखा, मुस्तगफिरी लिखते हैं कि मैंने नसुहा बिन वासिल के हाथ से (कतिबा बिन अहमद बुखारी की तफसीर के एक जुज्में) लिखा हुआ पाया कि कतादा ने सईद बिन मुसैब से मालूम किया कि कोई मर्द अपनी बीवी के अदम

मुबाशरत की बीमारी में मुब्तला हो तो क्या उसके लिए झाड़ फूंक करना जाइज है। आपने फरमाया कि इसका मकसद सिर्फ इस्लाह है, इसलिए कोई हर्ज नहीं, शरअत में लोगों को नफाबख्श चीजों से मना नहीं किया।

नसुहा फरमाते हैं कि हमाद बिन शाकिर ने मुझ से इसकी वजाहत तलब की तो मैं ना बता सका। फिर उन्होंने खुद ही कहा कि जब आदमी अपनी बीवी से मुबाशरत के अलावा सब काम कर सके तो ऐसा मरीज आदमी लकड़ियों का एक गटठा ले और एक दोधारी कुल्हाड़ी को उस गटठे के बीच में रखे और फिर उस गटठे को आग लगा दे। जब कुल्हाड़ी गर्म हो जाये तो उसे आग से निकालकर उसके ऊपर पैशाब कर दे तो इंशा अल्लाह उसे शिफा हो जायेगी। (मुलाहिजा हो, फतहुलबारी, जिल्द 10, सफा 223)

यहां यह बात दीमाग रहे कि मरीज किसी किस्म का अकीदा कुल्हाड़ी पर ना रखे। बल्कि यह जान ले कि फक्त यह सब सबब और जरीया है और गर्म कुल्हाड़ी से जो भाप उठकर मर्द की शर्मगाह पर पड़ती है तो वोह जिन्न पर असर अन्दाज होती है और वोह निकल भागता है। लिहाजा अलहम्दुलिल्लाह जादू खत्म हो जाता है और मरीज सेहतयाब हो जाता है।

सांतवा तरीका :

एक बरतन में पानी लेकर उस पानी पर मअुजतेन और मन्दरजा जैल दुआयें पढ़कर पानी पर दम करें। दुआयें यह हैं :–

١- اللهم رب الناس اذهب الباس واشف انت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما۔

بسم الله ارقیک والله یشفیک من کل داء یوذیک ومن کل نفس او عین حاسد الله یشفیک○

اعوذ بکلمات الله التامات من شر ما خلق۔

بسم الله الذی لا یضر مع اسمه شیئی فی الارض ولا فی السماء وهو السمیع العلیم○

اللهم ابطل هذا السحر بقوتک یا جبار السماوات والارض○

इन दुआओं पर मअुजतेन को सात बार पानी पर दम करके मरीज को पिलायें और गुस्ल करायें। लगातार तीन दिन तक यह अमल जारी रखें तो इंशा अल्लाह तआला जादू खत्म हो जायेगा और नामर्दी खत्म हो जायेगी। निज मरीज नापाक जगह पर गुस्ल ना करे।

आठवां तरीका :

मरीज के कान में आप मन्दरजा जैल आयात पढ़ें:

1. सूरा फातेहा को 70 से ज्यादा बार पढ़ें।
2. आयतलकुर्सी को 70 से ज्यादा बार पढ़ें।
3. मअुज्जतेन 70 से ज्यादा बार पढ़ें।

यह आयात 3 से 7 दिन तक लगातार पढें तो इंशा अल्लाह तआल जादू टूट जायेगा और मरीज शिफायाब हो जायेगा।

नवां तरीका :

कोई साफ बरतन लेकर किसी पाक व साफ रोशनाई से मन्दरजा जैल कुरआनी आयात लिखें :–

موسٰى ما جئتم به السحر ان الله سيبطله ان الله لا يصلح
عمل المفسدين○ و يحق الله الحق بكلمته ولوكره المجرمون○

(सूरा युनूस, पारा 11, आयत नं. 81–82)

यह आयात लिखने के बाद बरतन में कलूंजी के तेल को मिलाया जाये। फिर मरीज उस तेल को 3 दिन तक पीता रहे और पैशानी और सीने पर मालिश करता रहे तो इंशा अल्लाह तआला जादू टूट जायेगा और मरीज शिफायाब हो जायेगा।

शैखुलइस्लाम इब्ने तमिया रहमतुल्लाह अलैही ने इस बात का फतवा दिया है कि कुरआन और अजकार को लिखना और पानी में हिला करके बिलगर्ज शिफा मरीज को पिलाना जाइज है। (मुलाहेजा हो मजमुअ अलफतवा, जिल्द 19, सफा 64)

रब्त, जिन्सी कमजोरी और नामर्दी का फर्क

पहला : रब्त

मरबुत मर्द चाक व चौबन्द और चुस्त होता है और बीवी के साथ मुबाशरत करने पर वोह कादिर भी होता है। बल्कि जब वोह बीवी से दूर रहता है तो उसके शर्मगाह में तनाव भी पैदा होता रहता है और जब वोह अपनी बीवी के करीब जाता है और उससे हमबिस्तरी करना चाहता है तो बिलकुल ठण्डा हो जाता है।

दूसरा : नामर्दी

मर्द अपनी बीवी से करीब होता या दूर, वोह जिन्सी अमल करने से परेशान रहता है बल्कि उसका अजु तनासुल सिरे से खड़ा ही नहीं होता।

तीसरा : जिन्सी कमजोरी

शौहर अपनी बीवी से मुबाशरत ना कर सके मगर ऐसी सूरत में जब वोह काफी लम्बे अरसे के बाद बीवी से मुबाशरत करे और यह अमल चन्द सैकण्ड में खत्म हो जाये और जिन्सी अमल में ज्यादा ठहराव ना हो और साथ ही आला तनासुल जल्द ही ढ़िला पड़ जाये।

इसका इलाज :

जहां तक रब्त का तआल्लुक है तो इसके इलाज के दस तरीके हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं और जहां तक हो सके नामर्दी का इलाज किसी डाकटर या हकीम से करवाना चाहिए। लेकिन जिन्सी कमजोरी का इलाज हसब जैल है :-

साफ किस्म का और असली शहद एक किलो लें और साथ ही दो सौ ग्राम गिजा मिलकात लें और इन दोनों को मिला लें। इस पर सूरा फातेहा और सूरा अलम नशराह और मअुज्जतेन सात बार पढ़कर दम करें।

इस्तेमाल का तरीका :

1. मरीज रोजाना नहार मुंह (बिना कुछ खाये) तीन चम्मच सुबह एक

चम्मच दोपहर और एक चम्मच रात को खाना खाने से पहले खाये।

2. यह इलाज एक से दो माह तक हस्ब जरूरत जारी रखें। इंशा अल्लाह तआला मरीज को पूरी शिफा होगी।

बांझपन की कुछ किस्मों का इलाज

मर्द का बांझपन

मर्द के बांझपन की दो किस्में हैं। पहली किस्म जिसका ताअल्लुक मर्दाना आजा से है, इसका इलाज डाक्टरों से करवाना चाहिए।

दूसरी किस्म का बांझपन जिसका ताअल्लुक इन्सानी जिस्म के अन्दर जिन्न और शैतान की शरारत से होता है, इसका इलाज कुरआनी आयात व अजकार और डाक्टरी दवाओं से करना, कराना चाहिए। यह एक माअरूफ बात है कि इस्तकार हमल या बच्चे के पैदाईश उस वक्त अमल में आती है जब मर्द के नुत्फे में हैवानात मनविया की तआदाद एक मुरब्बा सेन्टीमीटर में बीस मिलियम से ज्यादा हो।

कभी शैतान इन्सानी बेजियों (जो के मनी के जरासिमों (किटाणु) को पैदा करते हैं) पर असर अंदाज करता है, लिहाजा उनकी पैदाईश जरूरत से कम हो जाती है जिसके नतीजें में औलाद की पैदाईश की उम्मीद भी कम हो जाती है।

जब जरासीम मादा मनवीया में मुन्तकील होते हैं तो यह जरासीम एक लआबी मादे के मोहताज होते हैं, जिसकी पैदाईश एक खास किस्म के गदूद से होती है। जिसको हकीमों की जबान में गदूद कोबर कहते हैं। यह लआबी मादा मनी में चले जाने के बाद जरासीमों की गिजा बनता है। शैतान दोबारा एक और शैतानी हरकत करता है जिसके नतीजे में लआबी साइल (लिक्वीड मादा) जरासीमों की गिजा नहीं बन पाता जिसके नतीजें में जरासीम मर जाते हैं और साथ ही औलाद की पैदाईश के इमकानात खत्म हो जाते हैं।

हकीकी बांझपन और जादू के जरीये बांझपन में फर्क

जादू के जरीये बांझपन पैदा किया जाता है, उसकी मन्दरजा जैल अलामते हैं :

1. मरीज तंग दिल हो जाता है, बिल खसूस असर से लेकर मगरिब रात तक।
2. दिमागी उलझन और परेशानी में मुब्तला रहता है।
3. रीढ़ की हड्डी के नीचले हिस्से में दर्द रहता है।
4. नींद में बैचेनी महसूस करता है।
5. डरावने ख्वाब देखता है।

औरत का बांझपन

औरतों के बांझपन की दो किस्में हैं।

पहली : पैदाईशी बांझपन
दूसरी : इस जादू के सबब बांझपन।

जादू की वजह से जो जिन्न औरत के रहम में दाखिल होने के बाद औरत के सुराखों को खराब करता है तो इससे औरत का पैदाईशी अमल मुतासिर हो जाता है। हालांकि हमल तो ठहरता है लेकिन चन्द महिनों के बाद शैतान की हरकत के सबब रहम से खून निकलने लगता है जिसके नतीजे में हमल बर्बाद हो जाता है। उस वक्त के कई किस्सों का मैंने इलाज किया है। बुखारी व मुस्लिम में हदीस है कि शैतान इब्ने आदम के अन्दर खून की तरह गर्दिश (दौड़ना) करता है।

बांझपन का इलाज

1. किताब के शुरू में जो आयात दर्ज की गई है उनको आप एक कैसेट पर रिकार्ड करके मरीज को दें और हिदायत करें कि मरीज उस कैसेट को रोजाना तीन बार सुने।

2. मरीज सूरा साफ्फात सुबह को पढ़े या सुने।

3. सूरा मुआरिज रात को सोते वक्त पढ़कर सोये या किसी से सुनकर सोये।

4. कलूंजी के तेल पर मन्दरजा जैल सूरतें पढ़कर मरीज को दें। सूरा फातेहा, आयतलकुर्सी, सूरा बकरा का आखरी रूकुअ, सूरा आले

इमरान का आखरी रूकुअ और मअुजतेन। यह तमाम आयात सात बार तेल पर दम करके मरीज को दें और मरीज इस तेल से अपने सीने, पैशानी और रीढ की हड्डी पर सोने से पहले मालिश करे।

5. फिर इन्हीं आयात को असली शहद पर पढ़कर दम कर के मरीज को दें और ताकिद करें कि वोह हर रोज इस शहद से एक चम्मच भूखे वक्त खाये।

यह तमाम इलाज लगातार तीन महिने तक जारी रखें, साथ ही अल्लाह तआला के अहकाम का खुद को पाबन्द बनायें। इसलिए कि कुरआनी आयात से शिफा के हकदार सिर्फ मौमिन ही होते हैं। जैसे के अल्लाह तआला ने कुरआन अजीम में फरमाया :

तर्जुमा : हमने कुरआन को मौमिनों के लिए बाअस शिफा बनाकर नाजिल किया है।

यहां पर अल्लाह तआला ने शिफा के जिमन में मौमिनों का तजकिरा खास किया है। इस किस्म के कई किस्सों का इलाज हम अल्लाह तआला के फजल से कर चुके हैं।

शरअत अंजाल का इलाज

बसा औकात मर्द को शरअत अंजाल की शिकायत ताबे होती है तो इसका इलाज डाक्टर हजरात मन्दरजा जैल तरीके से करते हैं:—

1. कुछ इस किस्म के मरहमों का इस्तेमाल जो अहसास को नार्मल कर देते हैं।

2. मुबाशरत के दौरान मुख्तलिफ चीजों पर गौर व फिक्र यानी अपने ख्यालात को किसी दूसरी तरफ लगाना।

3. मुबाशरत के दौरान कुछ मुश्किल किस्म के रियाजी मसाईल में अपने दिगाम को लगाना।

4. कभी कभी शरअत अंजाल का सबब शैतानी शरारत भी होती है।

जिसका इलाज मन्दरजा जैल तरीके से किया जा सकता है।

1. फजर की नमाज के बाद "ला इलाहा इल्लल्लाहु वाह हदु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहु–व अला कुल्ली शइईन कदीर" पढ़ें।

2. सोने से पहले सूरा मुल्क रोजाना पढ़ें या किसी से सुनें।

3. आयतलकुर्सी रोजाना 70 बार से ज्यादा पढ़ें या किसी से सुने।

4. मन्दरजा जैल दुआयें रोजाना पढ़ें या किसी से सुने।

   1. "*अऊजु बि कलिमा तिल्लाहित्-ताम्माति मिन शर्रि-मा ख-ल-क*"0 (अहमद)

   तर्जुमा : मैं अल्लाह के मुकम्मल (पूरे) कलिमात की पनाह में आता हूँ, उसकी मख्लूक के शर से। (तीन मर्तबा)

   2. "*बिस्मिल्लाह हिल्लजी ला यदुर्रु-म-इस मिही, शई-ऊन फिल-अरदि व ला फिस-समाई वहु वस समीउल अलीम*" 0 (तिरमजी)

   तर्जुमा : उस अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के होते हुए कोई चीज नुकसान नहीं पहुंचा सकती, जमीन की हो या आसमानों की। वोह खूब सुनने वाला खुब जानने वाला है। (तीन मर्तबा)

   3. "*उ-इ-जुकुमा बि-कलिमा तिल्लाहित ताम्मति मिन कुल्ली शैतानीवं व हाम्मतिवं व मिन कुल्ली अयनिल आम्माति*"0 (बुखारी)

   तर्जुमा : मैं तुम दोनों को अल्लाह तआला की मुकम्मल कलिमात की पनाह में देता हूँ, हर शैतान और जहरीले जानवरों से और हर तरह की नजरे-बद से। (तीन मर्तबा)

यह इलाज तीन माह तक जारी रखें तो इंशा अल्लाह तआला शिफा होगी।

नये शादीशुदा जोड़े के लिए मिलाप से पहले शैतान से हिफाजती तरीके

यह बात वाजेह हो चुकी है कि अमूमन नौजवान ही रब्त (यानी रूकावट) का शिकार होते हैं। बिलखसूस शादी के वक्त जब वोह ऐसी सोसायटी या समाज में जिन्दगी गुजार रहे हों जहां जादू टोना आम हो। अब यहां सवाल पैदा होता है कि क्या कोई ऐसा जरीया या कोई ऐसा बचाव का तरीका है कि जिसे नये शादीशुदा जोड़ा दिमागी हथियार के तौर पर इस्तेमाल करे?

जवाब : जी हाँ! यह सब चीजें इंशा अल्लाह मैं बतदरीज कलमबन्द करता हूँ लेकिन इससे पहले एक वाक्या पढ़ लें।

एक इन्तहाई मुत्तकी और परहेजगार इन्सान! अपने गांव और आसपास में दावत व तबलीग का फरीजा अंजाम देता था। ज्यादा उसके खुतबों का टोपिक तोहीद और खालिस सही अकीदा रहता था। साथ ही वोह लोगों को जादूगरों के पास जाने से रोकता था और उन्हें बताता था कि जादू कुफ्र है और जादूगर का असर एक ऐसे खबीस शख्स पर होता है जो कि अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी मौल लेता है। इसी गांव में एक जादूगर भी रहता था। जब भी कोई मर्द शादी का इरादा करता था तो पहले उस जादूगर के पास जाकर कहता था कि मैं फलां तारीख को शादी करने वाला हूँ, इस मौके पर मैं तुम्हारी क्या खिदमत करूं, तो जादूगर उससे ख्वाह पैसे मांगता या नजर व नयाज का मुतालबा करता था। तो हर नौजवान जो जादूगर कहता वोह सब करता, वरना उसको कुव्वत मर्दानगी से महरूम का शिकार होना पड़ता। लिहाजा न चाहते हुए भी वोह जादूगर का दरवाजा खटखटाने के लिए हाजिर होता और फिर जादूगर उसको इस मुसीबत से छुटकारा दिलाने के लिए मुंह मांगा मुआवजा तलब करता। यह मुत्तकी और परहेजगार नौजवान जादूगर के कामों में रूकावट डालता, उसके किये हुए कामों को मिनटों में मिट्टी में मिला देता और उसकी उम्मीदों पर पानी फैर देता। खुतबे की जगह हो या खास व आम, हर जगह जादूगर का कच्चा चिठठा खोल देता और लोगों को उसके पास जाने से मना करता। चूंकि अभी तक इस अल्लाह के बन्दे की शादी नहीं हुई थी और लोग इन्तहाई इस बात के मुन्तजिर थे के अब जादूगर कौनसी इन्तकामी कार्यवाही करेगा? क्या यह रासिख

अलअकीदा दीनदार नौजवान अपने आपको इस जादूगर के असरात से बचा पायेगा?

आखिरकार उस नौजवान ने शादी की और सुहागरात से पहले मेरे पास आया और पूरा वाक्या ज्यों का त्यों बयान किया और कहा कि जादूगर ने मुझे धमकी दी है और अब जीत किसकी होगी इसका गांव वाले इंतजार कर रहे हैं। आपकी क्या राय है? क्या आप जादू से बचने के लिए कोई हिफाजती तरीका बता सकते हैं? जादूगर अपनी भरपूर कोशिश जरूर करेगा और जिस कदर हुआ, वोह मुझ पर खतरनाक जादू करेगा। इसलिए कि मैंने खुल्लम खुल्ला उसकी बहुत बेइज्जती की है। मैंने कहा, हां, इंशा अल्लाह मैं आपकी मदद जरूर करूंगा बशर्ते कि आप जादूगर को जानकारी दें दें कि मैं फलां तारीख को शादी करने वाला हूँ और मैं तुम्हें चैलेंज करता हूँ कि तुम जो करना चाहो करो, चाहे तो तमाम जादूगरों को अपने साथ मिला लो और यह ऐलान आम सब लोगों के सामने कर दो। (चूंकि मिस्र व सूडान में अमूमन शादी और रूख्सती के दरमियान काफी फर्क रखा जाता है लिहाजा यहां शादी और शब जफाफ को अलग जिक्र किया गया है।) नौजवान थोड़ा सा झिझका और कहा जो कुछ आप कह रहे हैं, वाकई आप इससे मुतमईन हैं। मैंने कहा, हाँ! यकीनन इसलिए कि फतह और कामरानी मौमिनों की ही होती है और जिल्लत और रूसवाई मुजरीमीन का हिस्सा है।

हकीकत में ऐसा ही हुआ और उस सख्त तरीन दिन का लोग शिद्दत से इन्तजार करने लगे। मैंने नौजवान की इन्हीं हिफाजती कलिमात में से कुछ बताये जो मैं अभी जिक्र करने वाला हूँ। तो उसका नतीजा यह हुआ कि नौजवान ने शादी की सुहागरात मनाई और अलहम्दुलिल्लाह सुहागरात का मरहला कामयाबी से तय किया और जादूगर बुरी तरह नाकाम हो गया। लोग इन्तहाई तौर पर हैरान और अचम्भे में थे, बजाहिर यह मामूली सा वाक्या था।

उस नौजवान की मकबुलियत को चार चांद लगे और साथ ही लोगों की निगाहों से जादूगर गिर गया और उसका रौब और डर लोगों के दिलों से उठ गया। अल्लाहु अकबर, हकीकी मदद अल्लाह तआला ही करता है।

जादू से बचाव की दुआयें और तरीके

1. खाली पेट सात अजवा खजूरें खायें, मुमकिन हो सके तो मदिना मुनव्वरा की अजवा खजूर हासिल करें, बसूरत दीगर कोई भी खजूर इस्तेमाल की जा सकती है। हदीस रसूल सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, " जो शख्स सुबह के वक्त सात अजवा खजूरें खाये उस दिन उसे किसी किस्म का जहर और जादू नुकसान नहीं पहुंचा सकता।" (इसे बुखारी ने रिवायत किया, 247/10)

2. बावजू इन्सान पर जादू का असर नहीं होता क्योंकि बावजू इन्सान की हिफाजत के लिए अल्लाह तआला की तरफ से फरिश्ते तैनात होते हैं। इब्ने अब्बास रजियल्लाहु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

तर्जुमा : जिस्मों को पाक व साफ रखो, अल्लाह तआला तुम को पाक करेगा। क्योंकि जो शख्स भी पाक व साफ रहकर रात गुजारता है, कपड़ों की तरह उसके जिस्म के साथ एक मुहाफिज फरिश्ता तैनात कर दिया जाता है जो रात की हर घड़ी में उसके लिए यह दुआ करता है कि ऐ अल्लाह अपने इस बन्दे की बख्शीश फरमा के यह बावजू सोया है। (इमाम तिबरानी और इमाम मनजरी ने इसे रिवायत किया, 13/2)

3. बा-जमाअत नमाज की पाबन्दी :

नमाज बा–जमाअत की पाबन्दी मुसलमान को शैतान से महफूज रखती है और इसके अन्दर (फर्ज नमाजों में) लापरवाही की वजह से शैतान इन्सान पर हावी हो जाता है और जब शैतान इन्सान पर हावी हो जाये तो जादू और जिन्न वगैरह का आसानी के साथ शिकार बन सकता है।

हजरत अबु दरदा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जब किसी गांव या कस्बे में कम से कम तीन आदमी मौजूद हों और फिर वोह नमाज बाजमाअत का ऐहतमाम ना

करें तो उन पर शैतान हावी हो जाता है लिहाजा तुम जमाअत का ऐहतमाम करो क्योंकि भेड़िये का शिकार भी वही बकरी होती है जो अपने रेवड़ से अलग हो। (इसे अबु दाउद ने रिवायत किया, 150/1)

4. कयामुललैल यानी नमाज तोहजद :

जो शख्स भी जादू से बचना चाहता हो उसको चाहिए कि रात को कुछ हिस्सा कय्याम करे यानी नमाज तोहजद कायम करे और इसमें गफ्लत से काम ना ले, इसलिए कि कय्यामुलैल में अगर गफ्लत बरती जाये तो शैतान इन्सान पर हावी हो जाता है और जब शैतान आप पर हावी हो जाये तो आप जादूगरों के लिए तर निवाला साबित होंगे।

हजरत इब्ने मसअुद रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी का जिक्र किया कि वोह सुबह लगातार सोया रहा और यहां तक के नमाज फज्र भी अदा ना कर सका, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान ने उसके कान में पैशाब किया है। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया है, 335/6, फतह और मुस्लिम ने रिवायत किया, 63/6 नूदी)

5. बैतुलखला (गटर) में दाखिल होने से पहले शैतान से पनाह की दुआ मांगना। (शैतान के शर से दुआयें पढ़कर बचाव करना।)

बैतुलखला जैसी नापाक जगह पर मुसलमान को पाकर शैतान बहुत खुश होता है। बैतुलखला और उस जैसे दूसरी नापाक जगहें शैतानों का मरकज होती है। लिहाजा उस जगह शैतान इन्सान पर आसानी के साथ हावी हो सकता है। किताब लिखने वाले फरमाते हैं कि एक शैतान ने मुझे बताया कि मैं एक आदमी पर इसलिए काबिज हो गया था कि वोह बैतुलखला में जाने से पहले अअुजुबिल्लाह नहीं पढ़ता था। अल्लाह

तआला ने मेरी इस शैतान के खिलाफ मदद की और मैंने उसे कहा कि उस आदमी को छोड़ दे और अलहम्दुलिल्लाह उसने उसे छोड़ दिया।

एक जिन्न ने मुझे खबर दी कि ऐ मुसलमानों! अल्लाह तआला ने ताकतवर हथियार अता किये हैं। तुम उनके जरीये से हमें हरा सकते हो लेकिन तुम उन्हें इस्तेमाल नहीं करते। मैंने उससे पूछा वोह क्या हैं? तो उसने जवाब दिया, अजकार (दुआयें) नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम।

मासूर दुआयें

नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम से साबित है कि जब भी आप बैतुलखला में दाखिल होते तो आप यह दुआ पढ़ते थेः–
तर्जुमा : शुरू अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ, खबीस जिन्न और जिन्नीयों के शर से। (इसे इमाम बुखारी ने (1/343 फतह) और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया (4/70 नोवी)

6. नमाज में तअ्ज का पढ़ना :

हजरत जुबैर बिन मतअम रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि आप नमाज में यह कलिमात पढ़ रहे थे "

"अल्लाहु अकबर कबीरा, वलहम्दु लिल्लाहि कसीरा व सुब्हा नल्लाहि बुकरतवं व असीला। अऊजु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम मिन नफ्खीही व नफसिही व हम्जिही" (अबु दाउद, 1/203)
तर्जुमा : अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत ज्यादा तारीफों का मुस्तहिक है और हम अल्लाह तआला की सुबह व शाम पाकी बयान करते हैं। हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं, शैतान मरदूद के शर से, उसकी फूंक, उसके थूक और उसके चोके से।

7. निकाह के बाद औरत की शैतान से हिफाजत कैसे की जाये?

मर्द जब अपनी बीवी के पास पहली रात को जाये तो उसकी पैशानी पर अपना दायां हाथ रखकर यह दुआ पढ़े :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस औरत की खैर और भलाई का तालिब हूँ और जो हमल ठहरे उसकी भलाई का तालिब हूँ और मैं तेरी पनाह में आया हूँ, उसके शर से और उसके हमल के शर से। ऐ अल्लाह तू इसमें मेरे लिए बरकत का सामान मुहैया कर और इसे हर हसद के शर से बचा जब वोह हसद करने लगे और हर जादूगर के जादू से जब वोह जादू करे और हर मकर करने वाले के मकर से जब वोह मकर करने लगे। (अबु दाउद)

8. अपनी शादी की शुरूआती जिन्दगी का आगाज नमाज से :

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसअुद रजि. से रिवायत है कि जब तुम्हारे पास तुम्हारी बीवी आये (यानी शब रफाफ में) तो तुम उसे अपनी इक्तदा में दो रकआत नमाज पढ़ाओं और नमाज के बाद यह दुआ पढ़ोः

اللهم بارک لی فی اهلی و بارک لی لهم فی اللهم اجمع بيننا ما جمعت بخير و فرق بيننا اذا فرقت الى خير۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मेरे बीवी बच्चों को मेरे लिए बाबरकत बना और मुझे मेरी बीवी के लिए बाबरकत बना। ऐ अल्लाह जब हम एक दूसरे के साथ रहें, खैर और भलाई हमारे साथ रहे और जब हमारे दरमियान जुदाई हो तो वोह भी खैर पर कायम हो। (इसे इमाम तिरबानी ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे सही करार दिया)

9. जमाअ (हमबिस्तरी) के वक्त शैतान से बचावः

हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, तुममें से जब कोई भी अपनी बीवी के पास जमाअ (हमबिस्तरी) के लिए जाये तो यह दुआ पढ़े :

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम-म जननिब-नश शईता-न व जन्नी बिश्शयता-न मा रजक- तना" (बुखारी)

तर्जुमा : शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से! ऐ अल्लाह तू हम दोनों को शैतान से बचा और हमारी औलाद को भी शैतान से बचा। (इसे

इमाम बुखारी ने रिवायत किया, 1/242 फतह, और इमाम मुस्लिम ने भी) इस मिलाप से जो भी औलाद पैदा होती है उसको शैतान हरगिज नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा। एक जिन्न ने मुसलमान होने के बाद मुझे बताया कि वोह जब आदमी के साथ चिपटा होता था तो वोह आदमी जब भी अपनी बीवी से हमबिस्तरी करता था तो मैं भी उसमें शरीक रहता था। इसलिए कि वोह यह दुआ नहीं पढ़ता था। सुब्हान अल्लाह हमारे पास कितने सुन्नत के कीमती खजाने हैं जिनकी हम कदर नहीं करते।

10. सोने से पहले बावजू होना :

आप सोने से पहले वजू करके सोयें और आयतलकुर्सी पढ़ें और नींद आने तक अल्लाह तआला का जिक्र करें, यहां तक के आपको नींद आ जाये।

सही सनद से साबित है कि शैतान ने हजरत अबु हुरैरा रजियल्लाहु से कहा कि जो शख्स भी सोने से पहले आयतलकुर्सी पढता है तो उस रात उसकी हिफाजत के लिए अल्लाह तआला एक फरिश्ते को मुकर्रर कर देता है और शैतान उस रात उस शख्स के पास नहीं जा सकता और नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने इसका तजकिरा यों फरमाया है, ऐ अबु हुरैरा शैतान ने तुझ से सच कहा, हालांकि वोह झूठा है।

11. मगरीब की नमाज के बाद आप हर रोज यह वजीफा पढ़ें :

1. सूरा बकरा आयत नम्बर एक से पांच
2. आयतलकुर्सी और इसके बाद की दो आयत।
3. सूरा बकरा की आखरी तीन आयात

इस वजीफे की बदौलत आप चौबिस घण्टे तक शैतान से और हर किस्म के जादू से महफूज रहेंगे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

12. फजर की नमाज के बाद आप यह वजीफा पढ़ें :

"ला इलाहा इल्ललाहु वाह दहु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहु व अला कुल्ली शइईन कदीर" इसे फजर की नमाज के बाद एक सौ बार पढ़ें। नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया कि जिसने भी ऐसा किया तो उसे दस गुलाम आजाद करने का सवाब मिलेगा और सौ नैकियां उसके नामे आमाल में लिखी जायेगी और सौ गुनाह उसके मआफ कर दिये जायेंगे और उस दिन शाम तक वोह शैतान के शर से महफूज रहेगा और इससे बढ़कर अफजल अमल कोई भी नहीं हो सकता। मगर सिर्फ उस शख्स का जिसने इससे ज्यादा यह वजीफा पढ़ा हो। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया, 6/338 और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया, 17/17 नोवी)

13. मस्जिद में दाखिल होते हुए यह पढ़ें :

"अ ऊजु बिल्ला हिल अजीमी व बिवज हि हिल करीम व सुलतानि हिल कदीमी मिनश शयतानिर रजीम O (अबु दाउद)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला की पनाह में आया हूँ जो अजीम तर है और इसके बाइज्जत चहरे के वास्ते और उसकी दायमी सल्तनत और कुदरत के जरीये शैतान मरदूद से।

सही सनद से अबु दाउद ने रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स ने भी इसे पढ़ा, शैतान कहता है कि यह आदमी अब पूरा दिन मेरे साथ नहीं लगेगा।

14. सुबह व शाम तीन बार यह दुआ पढ़ें :

2. *"बिस्मिल्लाह हिल्लजी ला यदुर्रू-म-इस मिही, शई-ऊन फिल-अरदि व ला फिस-समाई वहु वस समीउल अलीम" O* (तिरमजी)

तर्जुमा : शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जिसके नाम से आसमानों और जमीन में कोई भी चीज नुकसान नहीं पहुँचा सकती और वोह सुनने वाला और जानने वाला है। (तिरमजी 5/133)

15. घर से निकलते वक्त यह दुआ पढ़े :

''बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अल्ललाहि व ला हव ला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि '' (अबु दाउद)

तर्जुमा : शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से और अल्लाह पर ही मैंने तवक्कुल और भरोसा किया। अल्लाह तआला के सिवा कोई भी साहब कुदरत और दस्त तसर्रुफ नहीं है। (अबु दाउद 4/325, तिरमजी 5/154 और तिरमजी ने हसन सही कहा है।)

जब आप यह दुआ पढ़कर घर से निकलते हैं तो आपको यह खुशखबरी दी जाती है कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए काफी है तुम बच गये या तुम हर शर से महफूज हो गये और हिदायतयाब हो गये और शैतान तुम से दूर हो गया और एक शैतान अपने दूसरे साथी शैतान से कहता है कि तुम इस आदमी को कैसे नुकसान पहुंचा सकते हो जो हिदायतयाब हो गया और बचा लिया गया।

16. फजर और मगरिफ की नमाज के बाद यह दुआ पढ़ें

''अऊजु बि कलिमा तिल्लाहित ताम्मा तिल-लति ला युजा वि जुहुन्ना बररूवं व ला फाजिरून्म मिन शर्री मा ख-ल-क व ब-र अ-व ज-र-अ व मिन शर्रि मा यन्जिलु मिनस-समाई व मिन शर्रि मा याअ रूजु फिहा व मिन शर्रि मा ज-र-अ फिल अरदि व मिन शर्रि मा यख्रूजु मिनहा व मिन शर्रि फि-त-निल्लइलि वन्नहारि व शर्रि कुल्ली तारिकिन इल्ला तारिकई यत रूकु बिखइरिन या रहमानु'' (अहमद)

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला के पाक कलिमात की पनाह में आता हूँ जो के मुकम्मलतरीन है। जिनकी हद से कोई भी नेक व बद बाहर नहीं जा सकता। मखलूकात के शर से और हर उस आफत के शर से जो आसमान से नाजिल हो और हर उस चीज के शर से जो आसमान की तरफ चढ़े और हर उस चीज के शर से जो जमीन में दाखिल हो और हर उस चीज के शर से जो जमीन से बाहर निकले और रात और दिन के फितनों के शर से और हर रात और दिन के आने वाली शय के शर से सिवा उस चीज के जो पैगाम आफियत लेकर

आये, ऐ रहम करने वाले अल्लाह।

17. सुबह व शाम यह दुआ पढ़ें :

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला के पाक कलिमात की पनाह में आता हूँ, उसके गजब से, उसके बन्दों के शर से और शैतान के वसवसे से और शैतान की मौजूदगी से।

18. सुबह व शाम यह दुआ भी पढ़ें :

اللهم انی اعوذ بوجهک الکریم و کلماتک التامات من
شرما انت اخذ بنا صیته اللهم انت تکشف المأثم و
المغرم اللهم انه لا یهزم جندک ولا یخلف وعدک سبحانک
و بحمدک

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तेरे सरापाकरम और बुजुर्गी वाले चहरे के जरीये और तेरे मुकम्मल तरीन कलिमात के जरीये हर उस शय के शर से पनाह मांगता हूँ जो तेरे कब्जे में है, ऐ अल्लाह तू ही गुनाहों और कर्ज को दूर करने वाला है, ऐ अल्लाह ना तो तेरे लश्कर को शिकसत दी जा सकती है और ना तेरे वादे की खिलाफवर्जी की जाती है। हम तेरी ही हम्द व सना बयान करते हैं।

19. सुबह व शाम यह दुआ भी पढ़ें :

اعوذ بوجه الله العظیم الذی لا شیٔ اعظم منه و بکلمات
الله التامات التی لا یجاوزهن برولا فاجر و باسمآء الله
الحسنی کلها ما علمت منها وما لم أعلم من شرما خلق و
ذرا و برا ومن شر کل ذی شر لا اطیق شره ومن شر کل ذی
شر انت اخذ بنا صیته ان ربی علٰی صراط مستقیم

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला के अजीम चहरे की पनाह में आता हूँ जिससे

बढ़कर कोई चीज नहीं है और अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमात के जरीये जिनसे कोई भी नेक व बद तजावुज नहीं कर सकता और अल्लाह तआला के तमाम असमां हुस्ना के जरीये जिन्हें मैं जानता हूँ और जिन्हें मैं नहीं जानता। मखलूकात के हर किस्म के शर से और शरीर के शर से जिसका शर मेरी ताकत से बढ़कर है और हर उस शर के शर से जो तेरे कब्जे के अन्दर है। यकीनन मेरा रब बरहक है।

20. सुबह व शाम यह दुआ पढ़ें :

تحصنت بالله الذی لا اله الا هو الٰہی واله کل شئی و اعتصمت بربی و رب کل شئی و توکلت علی الحی الذی لا یموت و سندفعت الشر بلا حول ولا قوة الا بالله حسبی الله و نعم الوکیل حسبی الرب من العباد' حسبی الخالق من المخلوق حسبی الرازق من المرزوق حسبی الذی بیده ملکوت کل شئی وهو یجیر ولا یجار علیه حسبی الله لا اله الا هو علیه توکلت وهو رب العرش العظیم○

तर्जुमा : मैं उस जात को अपना मुहाफिज बनाता हूँ जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है, वही मेरा और हर शय का माबूद है, जो हर चीज का रब है, वही मेरा आसरा है, मेरा तवक्कल और भरोसा उसी जात पर है जो हमेशा से जिन्दा है और जिसके लिए कभी मौत नहीं आयेगी और उसी की तौफीक से मैं शर का मुकाबला करता हूँ वोह मेरे लिए काफी है और बेहतरीन कारसाज है, मेरा रब बन्दों के शर से मेरे लिए काफी है, मेरा पैदा करने वाला तमाम मखलूकात के शर से मुझे बचाने वाला है, और मेरा रोजी रिसा मोहताजों के शर से मुझे बेनयाज करने वाला है, वोह जात मेरे लिए काफी है। जिसके हाथ में हर शय की हुकुमत है। वही पनाह देने वाला है, उसके खिलाफ कोई पनाह नहीं दे सकता। अल्लाह तआला मेरे लिए काफी है। सिर्फ वही एक इबादत के लायक है और उसी पर मेरा भरोसा

है और वही हर शय का मालिक है।

रब्त (रूकावट) का तोड़- एक अमली मिसाल

इस सिलसिले की बेशुमार मिसालें हैं। लेकिन इख्तसार को मद्दे नजर रख़ते हुए सिर्फ एक मिसाल पर इक्तेफा करता हूँ।

एक नौजवान मेरे पास अपने नये शादीशुदा भाई को लेकर आया जो कि अपनी बीवी से अजरूआजी फरमाईश (मियां बीवी के हक) के सिलसिले में नाकाम हो चुका था और बहुत से काहिनों और दज्जालों का चक्कर लगाया, लेकिन बेसूद। जब मुझे जानकारी मिली के वोह ऐसे लोगों के पास होकर आया है तो मैंने उससे सच्चे दिल से तौबा करवाई और यह कि वोह उन दज्जालों को झूटलाये ताकि उसका अकीदा दुरूस्त हो जाये और इलाज का कुछ फायदा हो। उसने बताया कि उन लोगों के पास जाने के बाद उनकी कमजोरी, बेबसी और झूट और धोकेबाजी पर मुझे पक्का यकीन हो गया है। मैंने उस से सब्ज बेरी के सात पत्ते मंगवाये तो वोह ना मिल सके। इसके बाद काफूर के साथ पत्ते हासिल किये गये। जिन्हें पत्थर की सिल और वटे से पीस कर पानी में हल किया और उस पर आयतलकुर्सी और मअुजतेन पढ़कर दम किया और उसको कहा कि वोह इस पानी को पीये और गुस्ल करे।

अलहम्दुलिल्लाह इस इलाज के फौरन बाद ही उस पर जादू के असरात खत्म हो गये।

जादू से पागलपन तक

एक इन्तहाई होशियार नौजवान, जब उसकी शादी हुई और बीवी के साथ सुहागरात मनाई तो उसे मर्दाना कमजोरी की शिकायत होने लगी और धीरे धीरे कुछ दिनों बाद वोह पागल हो गया। जिहालत की वजह से बाज जादूगर उल्टा सीधा अमल करते हैं लिहाजा उसके नतीजे भी मतलब के बर अक्स उल्टे होते हैं, उस औरत की तरह जो जादूगर के पास सिर्फ इसलिए गई कि उसका खाविन्द सिवाये उसके हर औरत से नफरत करे तो जादूगर ने ऐसा ही किया और उस औरत ने वोह जादू अपने खाविन्द को खाने में रखकर खिला दिया। नतीजा यह हुआ कि उसका शौहर हर

तमाम औरतों से नफरत करने लगा, यहां तक कि अपनी बीवी से भी नफरत करने लगा। बीवी जादूगर के पास गई ताकि वोह इसका तोड़ कर सके लेकिन उसकी बदनसीबी यह कि उसके वहां जाने तक वोह जादूगर जहन्नम रसीद हो चुका था यानी वोह मर चुका था और बाद में उस आदमी ने उस औरत को तलाक भी दे दी। मुख्तसर यह के मजकूरा नौजवान गांव में चीखता और शौर मचाता रहा। लेकिन जब बेरी के पत्तों पर मैंने दम कर के दिया तो अलहम्दुलिल्लाह वोह सेहतमन्द हो गया।

आठवां बाब

बुरी नजर का इलाज

नजर की तासीर पर कुरआनी दलाईल

(सूरा युसूफ आयत नंम्बर 67–68 में) अल्लाह तआला का फरमान है :–

तर्जुमा : और फरमाया (याकुब अलैहिस्सलाम ने) ऐ मेरे बच्चों तुम शहर में किसी एक दरवाजे से दाखिल मत होना। बल्कि अलग–अलग दरवाजों से जाना। मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ से आने वाली किसी चीज से भी नहीं बचा सकता। क्योंकि हकीकी कुदरत अल्लाह तआला ही के हाथ में है, उसी पर मेरा भरोसा है और उस पर हर भरोसा करने वाले को भरोसा करना चाहिए। जब वोह लोग अपने बाप के कहने के मुताबिक शहर में दाखिल हुए। हालांकि अल्लाह तआला के फैसले से उनको कोई चीज नहीं बचा सकती थी, यह तो याकूब (अलैहिस्सलाम) की ख्वाईश थी कि जिसको उन्होंने पूरा किया और यकीनन वोह इस इल्म (नबूवत) के हामिल थे जो हमने उन्हें अता किया। हालांकि अकसर लोग इसे नहीं समझते।

हाफिज इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैही मजकूरा दोनों आयतों की तफसीर करते हुए फरमाते हैं कि अल्लाह तआला याकुब अलैहिस्सलाम के वाक्ये की तरफ इशारा करते हुए फरमाते हैं कि जब उन्होंने अपने बच्चों को हुक्म दिया कि तुम सब इकट्ठे एक दरवाजे से दाखिल ना होना बल्कि सब अलग अलग दरवाजों से जाना। यह उस वक्त का वाक्या है जब

याकुब अलैहिस्सलाम ने बिन्यामिन को उसके भाईयों के साथ मिस्र भेजा था। उसकी तफसीर में जैसा कि हजरत इब्ने अब्बास रजि. मुहम्मद बिन कअुफ और मुहाजिद रह. जिहाक और कतादा रह. और सदी रह. वगैरह कहते हैं कि ऐसा उन्होंने बुरी नजर के डर से कहा था कि उनके बच्चे इन्तहाई ख़ुबसूरत और आला डिलडौल के मालिक थे। तो हजरत याकुब अलैहिस्सलाम को नजर का डर था क्योंकि बुरी नजर हक है जो शाह सवार को उसकी सवारी से उतार देती है।

यह अहतियात अल्लाह तआला की तकदीर को बदल नहीं सकती।

मुफसरीन कहते हैं कि यह ख्वाईश बुरी नजर से बचाव की है, अल्लाह तआला का फरमान है:

तर्जुमा : और करीब है कि काफिर अपनी तेज निगाहों से आपको फिसला दे जब कभी कुरआन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो जरूर दीवाना है" (सूरा कलम, पारा 29, आयत नं. 51)

हाफिज इब्ने कसीर रहमतुल्लाह इब्ने अब्बास और मुजाहिद से नकल करते हुए फरमाते हैं कि यानी वोह आपको हसद की निगाहों से देखते हैं अल्लाह तआला आपको उनसे बचाता है।

यह आयत इस बात पर दलील है कि नजर लगती है और बाकायदा उसका असर होता है, जैसा कि उस पर बहुत सी अहादिस दलालत करती है। (तफसीर इब्ने कसीर, 6 सफा 410)

बुरी नजर पर अहादीस से दलाईल

1. हजरत अबु हुरैरा रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

   "अलअईना हक बुरी नजर का असर होता है। (इसे इमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया, 10/203)

2. हजरत आईशा रजियल्लाहु अनहा रिवायत करती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

   "तुम अल्लाह की पनाह मांगो बुरी नजर से के बुरी नजर असर

करती है।" (इसे इमाम इब्ने माजा ने रिवायत किया 3508)

इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहु रिवायत करतें है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया।

3. तर्जुमा : बुरी नजर असर करती है अगर कोई चीज पहले से मुकर्रर हो चुकी हो, बुरी नजर उस पर सबकत ले जाती है, लिहाजा जब तुमसे गुस्ल का मुतालिबा किया जाये तो तुम गुस्ल करो। (इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, बाब अलतब में) यानी जब तुममें से किसी से मुतालिबा किया जाये के वोह अपने मुसलमान भाई के लिए गुस्ल करे, इसलिए कि उसे उसकी नजर लगी है, लिहाजा नजर वाले को उसका मुतालिबा मानकर उसकी बात मान लेनी चाहिए।

4. हजरत अस्मा बिन्ते अमीस रजियल्लाहु अनहा से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम से अर्ज किया कि जाफर के बच्चों के नजर लगती है। क्या मैं उनके लिए दम कराऊँ? आप सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

तर्जुमा : हाँ! अगर कोई चीज फिजा व कदर पर सबकत ले जाती तो वोह नजर होती। (इसे इमाम तिरमजी ने रिवायत किया, 2059 और इमाम अहमद ने रिवायत किया, 38/6)

5. हजरत अबुजर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

इस हदीस का खुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, "किसी आदमी को जब नजर लगती है तो इस कदर असर करती है गोया कि वोह किसी बुलन्द मकाम पर चढ़ा हुआ हो और फिर किसी बुरी नजर के असर से धड़ाम से नीचे गिर पड़ा।"

6. हजरत इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

तर्जुमा : "नजर (बद) आदमी को बुलन्द पहाड़ से नीचे गिरा देती है।" (इसे इमाम अहमद और तिरबानी ने रिवायत किया)

7. हजरत जाबीर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

तर्जुमा : नजर आदमी को कबर में पहुंचा देती है और ऊँट को हांडी में। (तफसील के लिए मुलाहेजा हो, अबु नईम की हलया और शैख अलबानी की सही अलजामआ, 4023)

मुतालबा यह है कि जब किसी इन्सान को नजर लगती है तो वोह उससे इस कदर मुतास्सीर होता है कि वोह लुकमा शा अजल बनकर कबर में पहुंच जाता है और जब किसी ऊँट को नजर लग जाती है तो वोह भी हलाकत के दहाने पर पहुँच जाता है, लिहाजा उसे जिब्ह करके हंडीया में पका लिया जाता है।

8. हजरत जाबीर रजि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया :

तर्जुमा : मेरी उम्मत में फिजां कदर से मरने वालों के बाद सबसे ज्यादा मरने वालों की तादाद नजर से मरने वालों की होती है। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया)

9. हजरत आईशा रजियल्लाहु अनहा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम मुझे बुरी नजर से बचाव के लिए झाड़ फूंक कराने का हुक्म देते थे। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया, 170/10 और इमाम मुस्लिम ने भी रिवायत किया, 2195)

10. हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने इजाजत दी है, झाड़ फूंक करने की बुरी नजर के लिए और जहरीले जानवर के काटने से और नमला से। (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया, 2194), नमला का मतलब है जो इन्सान के पहलु में जख्म दिखाई देते हैं।

11. हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अनहा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने उनके घर में एक लड़की को देखकर (जिसके चहरे पर स्याह या सुर्ख दाग थे) फरमाया, उस पर बुरी नजर का असर है, उसे झाड़ फूंक कराओ। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया, 171/1 और इमाम मुस्लिम ने भी, 97)

12. हजरत जाबीर रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने आले हजम को सांप के काटे हुए के लिए झाड़ फूंक की इजाजत दी है और हजरत असमा बिनत उमेस रजियल्लाहु से कहा, क्या वजह से कि मैं अपने भाई के बच्चों को कमजोर देख रहा हूँ? क्या उन्हें कुछ हो गया है तो हजरत असमा रजियल्लाहु ने कहा, नहीं उनको बुरी नजर जल्दी लग जाती है। आप सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया कि उन्हें झाड़ फूंक करो। (इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, 2198)

बुरी नजर के बारे में औलमा ए किराम की राय

इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैही फरमाते हैं कि बुरी नजर की तासीर अल्लाह तआला के हुक्म से होती है और ऐसे ही नजर लगती भी है। (तफसीर इब्ने कसीर, 410/4)

हाफिज इब्ने हजर रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि नजर की हक़ीकत यह है कि किसी चीज को अच्छा समझकर कोई खबीस अलतबाअ हसद से देखे और नतीजन देखी जाने वाली चीज कोई तकलीफ शुरूअ हो। (फतहुलबारी, 200/10)

इब्ने कसीर रहमतुल्लाह फरमाते हैं, कहा जाता है कि "असाबित फला नाअईन" यानी फलां को नजर लग गई। यह उस वक्त कहा जाता है जब किसी की तरफ कोई दुश्मन या हासिद देखे और उसकी वजह से वोह बीमार हो जाये। हाफिज इब्ने कय्यीम रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि एक गिरोह ने अपनी कम अकली की वजह से बुरी नजर का सिरे से ही इनकार किया है और कहते हैं कि यह वहम है और इसकी कोई हकीकत नहीं।

इन लोगों की कम अकली और जिहालत पर हमें अफसोस होता है। हालांकि किसी भी मजहब और कौम से ताअल्लुक रखने वाले अहले दानिश नजर का इनकार नहीं करते अगरचे उसके असबाब और वजह तासीर के बारे में उनकी राय मुख्तलिफ है। मजीद आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इन्सानी जिस्म व रूह में मुख्तलिफ किस्म की कुव्वतों और तबीयतों को पैदा किया है और उनमें से बहुत सों के अन्दर असर अंदाज ताकतें और खासियतें रखी है और कोई भी अकलमन्द जिस्म में रूह की तासीर का इनकार नहीं कर सकता क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जिसका हर रोज जिन्दगी में अहसास होता है और अन्दर ही अन्दर उसे महसूस भी करते हैं।

आप महसूस कर सकते हैं कि इन्सान का चेहरा उस वक्त इन्तहाई सुर्ख और हैरतअंगेज हो जाता है जब उसकी नजर किसी बारोब और बाहया आदमी पर पड़ती है और इसी तरह खौफ के वक्त चेहरे का रंग इन्तहाई जर्द हो जाता है और लोगों ने इसको महसूस किया है कि नजर की वजह से इन्सान बीमार हो जाता है और यह सब रूह की तासीर के नतीजे में होता है। चूंकि रूह का ताअल्लुक आंख के साथ बहुत गहरा होता है। लिहाजा उसको नजर से ताबीर किया जाता है जिसकी आंख का अपना जाति कोई अच्छा या बुरा असर नहीं होता बल्कि तासीर रूह की होती है और अरवाह की ताकत और तबीयत, कुव्वत व कैफियत और ख्वास मुख्तलिफ होती है। लिहाजा हासिद की रूह से महसूद (जिस पर हसद किया जाये) को इजा और तकलीफ पहुंचती है। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि वोहं हासिद के शर से मेरी पनाह मांगे और हासिद की तासीर का इनकार नहीं किया जा सकता। सिर्फ वही इनकार कर सकते हैं जो इन्सान ना हो।

चूंकि महसूद को जो तकलीफ पहुंचती है वही दर हकीकत बुरी नजर है, इसलिए कि हासिद की खबीस रूह खबीस कैफियत में तब्दील होकर मुकाबला करती है और उसी खासियत से उसी के अन्दर असर अंदाज होती है और मुसीबत में उसी से सबसे ज्यादा करीब तरीन तासीर सांप के जहर की होती है।

क्योंकि इसमें पाया जाने वाला जहर इन्तहाई ताकतवर होता है।

इसलिए जब वोह दुश्मन को सामने देखता है तो उसके अन्दर एक गजबनाक कुव्वत पैदा हो जाती है और इन्तहाई खबीस और तकलीफ देह कैफियत में तब्दील होकर मुखालिफ को मुतासिर करती है। चूंकि बाज की तासीर से आंखों की बिनाई भी चली जाती है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने दो नुकतों वाले धारीदार सांप के बारे में फरमाया है कि यह सांप आंखों को नाबिना कर देता है ताकि उसके अन्दर असर अंदाज और कभी उसका तआल्लुक बददुआओं और झाड़ फूंक से होता है और कभी वहम और ख्यालात से होता है।

बुरी नजर का ताअल्लुक सिर्फ देखने और मुशाहिदे से ही नहीं होता, बल्कि कभी अंधे आदमी की भी नजर लगती है, वोह ऐसे के उसके सामने किसी के अवसाफ बयान किये जायें और उसकी रूह उसके अन्दर असर करे, अगरचे के उसने उसको देखा नहीं होता है।

और बहुत से बुरी नजर वाले बगैर देखे ही अपना काम कर गुजरते हैं और इसका ताअल्लुक ओसाफ से होता है यह एक किस्म के जहरीले तीर होते हैं जो नजर वाले के रूह से निकलकर मरीज तक पहुँचते हैं। कभी निशाना दुरूस्त होता है और कभी गलत भी हो जाता है। इसकी मिसाल ऐसी ही है, जैसे किं कोई हमलावर जराबन्द दुश्मन हमला करे तो उसका हमला मौसर नहीं होगा और अगर किसी निहत्थे इन्सान पर हमला करे तो उसका हमला कामयाब होगा।

और कभी ऐसा भी होता है कि तीर चलाने वाले पर उल्ट कर लग जाता है और कभी ऐसा भी होता है कि आदमी को उसकी अपनी ही नजर लग जाती है और कभी बिला इरादा भी नजर असर कर जाती है।

नजर और हसद में फर्क

1. हासिद और बुरी नजर वाला बाहम आम व खास में लिहाजा हर बुरी नजर वाला हासिद हुआ ना कि उसके बरअक्स। इसलिए सूरा फलक में हासिद के शर से इस्तेगासा का जिक्र आया है। जब मुसलमान हासिद के शर से अल्लाह तआला की पनाह मांगता है तो अअजाज और बलागत का मुंह बोलता सबूत है।

2. हसद की इच्छा बाज और दूसरे से नैमत के छिन जाने की आरज़ू करना होता है। जबकि नजर का सबब पसन्द और किसी चीज को अजीम और बेहतर समझना होता है।

3. हसद और नजर का नतीजा एक ही होता है। इसलिए कि दोनों मुकाबिल के लिए जद और नुकसान का सबब बनती है। जबकि दोनों का काम मुख्तलिफ है। हसद का काम दिल का जलाना और महसूद की नीयत को ज्यादा समझना और उससे छिन जाने की तमन्ना और आरज़ू करना होता है।

4. ऐन (नजर) का असर आंखों की कुव्वत पर बुरा असर डालता है। इसलिए नजर से भी ऐसी चीजें मुतासीर होती है जिनसे हसद नहीं किया जाता है। यानी जमादात हैवानात नबातात और जराअत और माल होता है और कभी आदमी को इसकी अपनी नजर भी लग जाती है।

5. कोई भी आदमी जब किसी चीज को ताअज्जुब से और गहराई से देखे और साथ ही उसकी रूह और नफस एक मौसिर कैफियत से दो चार हो तो मुकाबिल पर उसका सलबी असर होता है। नजर का असर बिलफअल मौजूदा चीजों पर होता है।

6. कोई इन्सान अपने आप, अपनी जात, और अपने माल को हसद से नहीं देखता लेकिन वोह इन्हें नजर लगा देता है।

7. हसद का वकुअ सिर्फ किना परवर और नफस खबीस से होता है जबकि नजर कभी सालेह आदमी की भी लग जाती है जब वोह किसी चीज को पसन्दगी से देखे हालांकि वोह उसका दिल नहीं चाहता।

इसकी मिसाल हजरत आमिर बिन रबिया का वोह किस्सा है जब हजरत सहल बिन हनीफ को उनकी नजर लग गई थी। बावजूद जो इस के कि हजरत आमिर रजियल्लाहु तआला अनहु का तआल्लुक अवलीन मुसलमानों में अहले बदर से है और जिन लोगों ने नजर और हसद में फर्क

बताया है उसमें इब्ने जोजी, इब्ने कईम, इब्ने हजर और नोवी वगैरह हैं। अल्लाह तआला इन सब पर अपनी रहमत और करम फरमायें।

मुसलमानों के लिए मुस्तहब है कि जब भी वोह किसी चीज को देखे और वोह उसे पसन्द आ जाये तो उसके लिए उसको बरकत की दुआ करनी चाहिए, चाहे वोह चीज उसी अपनी हो या किसी दूसरे की। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने हजरत सहल बिन हनीफ की हदीस में फरमाया था, "ला तबर्रुक अलैही" यानी तुमने इसके लिए बरकत की दुआ क्यों नहीं की? इसलिए के यह दुआ नजर से बचाव के लिए ढ़ाल है।

जिन्नों की नजर इन्सानों को लग सकती है।

1. हजरत अबु सईद खुदरी रजियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम जिन्नों की नजर से पनाह मांगते थे फिर इन्सानों से पनाह मांगते थे। लेकिन जब मऊजतेन नाजिल हुई तो आपने उनको इख्तेयार कर के बाकी दूसरी चीजों को छोड़ दिया था। (इसे इमाम तिरमजी ने बाब तब में रिवायत किया, 2059 और इमाम माजा ने रिवायत किया, 3511 और अलबानी ने इसे सही करार दिया।)

2. हजरत उम्मे सलमा रजियल्लाहु अनहा से रिवायत है कि उनके घर में नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने एक लड़की को देखा जिसके चहरे पर काले धब्बे थे, उसको देखकर आप सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, इसको झाड़ फूंक करवाओ, इसको नजर लगी हुई है। (इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया, 17/10 और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया, 2197)

3. इमाम फरा रह. फरमाते हैं कि सफा से मुराद जिन्नों की नजर है। इन दिनों अहादिस से मालूमात हो कि जिन्नों की नजर भी वैसे ही लगती है जैसे इन्सानों की। लिहाजा हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वोह हर वक्त अल्लाह तआला का जिक्र करे चाहे कपड़े उतारे

हो या शीशा देखते हुए, वगैरह वगैरह ताकि जिन्नों की इजा और नजर से महफूज रहे।

बुरी नजर का इलाज

बुरी नजर के इलाज के मुख्तलिफ तरीके हैं।

पहला तरीका : नजर लगाने वाले का गुस्ल

अगर नजर लगाने वाले का सुराग मिल जाये (यानी जिसने नजर लगाई हो उसका पता चल जाये) तो उससे गुस्ल कराया जाये, जब वोह गुस्ल कर चुके तो उसका गुस्लशुदा पानी लेकर मरीज की पीठ पर बहाया जाये तो अल्लाह तआला के हुक्म से मरीज शिफायाब हो जाये।

हजरत अबु इमामा बिन हनीफ रजि. से रिवायत है कि अबु सहल बिन हनीफ ने खरार में गुस्ल किया (खरार मदिना मुनव्वरा में एक जगह का नाम है) जब उन्होंने नहाने के लिए अपना जुब्बा उतारा तो उनके जिस्म पर हजरत आमिर बिन रबिया की नजर पड़ी जो उस वक्त वहां मौजूद थे। चूंकि हजरत सहल बिन हनीफ आमिर उनके जिस्म को देखते ही चीख पड़े। उन जैसा मैंने कभी नहीं देखा और ना उन जैसी पौशिदा कंवारी जिल्द। उनका यह कहना था कि हजरत सहल उसी वक्त वहीं बेहोश होकर गिर पड़े और उन्हें तेज बुखार हो गया। इसके बाद उनकी इस कैफियत की जानकारी नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम को दी गई और कहा गया कि वोह सर भी नहीं उठा रहा। नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया, "क्या तुमको किसी की नजर का शक है।" तो लोगों ने कहा, "हाँ! आमिर बिन रबिया की।" यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने उनको तलब किया और उन पर सख्त गुस्सा किया और कहा कि क्या तुममें से कोई अपने भाई को कत्ल करता है? तुमने उनके लिए बरकत की दुआ क्यों नहीं की? अब इसके लिए गुस्ल करो। तो हजरत आमिर ने अपने हाथ अपना चेहरा, अपनी कुहनियाँ और अपने दोनो घूटनों और अपने पांव और इजार का दाखिली हिस्सा एक टप में धोया और फिर उस पानी को सहल बिन हनीफ की पीठ पर डाला गया तो वोह उसी वक्त शिफायाब हो गये। (इसे इमाम अहमद और इब्ने माजा

ने रिवायत किया)

अहले इल्म का इजार के अन्दरूनी हिस्से के बारे में इख्तेलाफ है। कहते हैं कि इससे मुराद जिस्म का हिस्सा है और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद पौशिदा हिस्सा है और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद कमर है।

काजी इब्ने अरबी फरमाते हैं कि इससे मुराद जिस्म का वोह हिस्सा है जो इजार से मिला हुआ हो।

बुरी नजर के गुस्ल का तरीका

इब्ने शहाब जहरी रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि गुस्ल का तरीका जो हमने अपने उस्ताद से सीखा है, वोह यह है कि जिस आदमी की नजर लगी हो, उसके सामने एक टब लगाया जाये। बाद में वोह आदमी पानी लेकर कुल्ली करे और टब में थूके, फिर टब में अपने मुंह को धोये, फिर बायें हाथ से पानी लेकर दायें हाथ पर डाले, फिर दायें हाथ से पानी लेकर बायें हाथ पर डाले, फिर बायें हाथ से पानी लेकर दायें कुहनी पर डाले फिर दायें हाथ से पानी लेकर बायीं कुहनी पर डाले, फिर इसके बाद बायें हाथ से बायें घुटने पर पानी डाले और यह सब पानी टब में इकटठा करे, फिर इजार के अन्दरूनी हिस्से को टब में धोये और टब जमीन पर ना रखा जाये फिर यह तमाम पानी जिस इन्सान को बुरी नजर लगी हो इसको पीछे की तरफ से उसके सर पर डाला जाये तमाम पानी एक बार डाल दिया जाये। तफसील के लिए इमाम बहकी की किताब अलसुन्ना अल कुबरा देखें, जिल्द 9 सफा, 252)

इस गुस्ल की दलील

1. नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया के नजर असर करती है और कोई चीज तकदीर पर मुकद्दम हो सकती है तो वोह बुरी नजर है और जब तुम में से किसी को गुस्ल करने के लिए कहा जाये तो वोह फौरन गुस्ल के लिए मान जाये। (इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया, 32/5)

2. हजरत आइशा रजियल्लाहु अनहा फरमाती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के दौर में नजर लगाने वाले को वजू करने का हुक्म दिया जाता और फिर इस वजू शुदा पानी से नजर जदा आदमी को गुस्ल कराया जाता। (इसे इमाम अबु दाउद ने रिवायत किया, 3770)

3. इन दोनों अहादीस से साबित होता है कि नजर लगाने वाले को नजरजदा के लिए वजू या गुस्ल करना चाहिए।

दूसरा तरीका :

नजरजदा इन्सान के सर पर आप हाथ रखकर मन्दरजा जैल दुआ पढ़ें :

"अल्लाह तआला के नाम से मैं तुम्हारे ऊपर दम करता हूँ। अल्लाह तआला ही तुम्हें हर तकलीफ देह बीमारी से शिफा देगा और हर हासिद और हर बुरी नजर से अल्लाह तआला तुम्हें शिफा दे। अल्लाह तआला के नाम से मैं तुम्हें दम करता हूँ।" (इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया, 2174)

तीसरा तरीका :

नजरजदा इन्सान के सर पर हाथ रखकर इस दुआ से उसे दम करें:

بسم اللہ یبریک من کل داء یشفیک ومن شر حاسد اذا حسد
ومن کل شر کل ذی عین○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से, अल्लाह तआला तुम्हें अपने नाम की बरकत से बढ़त बख्शे और हर बीमारी से वोह तुम्हें शिफा बख्शे और हसद करने वाले के शर से जब वोह हसद करने और हर बुरी नजर के शर से।" (इसे मुस्लिम ने रिवायत किया, 2174)

चौथा तरीका :

नजरजदा मरीज के सर पर हाथ रखकर मन्दरजा जैल दुआ पढ़ें :

اللهم رب الناس اذهب الباس واشف انت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما۔

तर्जुमा : " ऐ अल्लाह! लोगों के पालने वाले इसके दर्द और तकलीफ को दूर कर दे, ऐ अल्लाह तू इसे शिफा दे सिर्फ तू ही शिफा देने वाला है। तेरी शिफा के अलावा कोई शिफा नहीं। ऐसी शिफा दे जो हर बिमारी को दूर कर दे (इसे इमाम बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया)

पांचवा तरीका :

नजरजदा इन्सान को अगर कहीं दर्द हो तो दर्द की जगह पर हाथ रखकर मन्दरजा जैल सूरतें पढ़कर दम करें सूरा इख्लास, सूरा फलक और सूरा अलनास। (इसे इमाम बुखारी ने किताब फजायल कुरआन में रिवायत किया।)

छटा तरीका :

एक बर्तन में पानी लेकर उस पानी पर मअुजतेन पढ़ें और उसके साथ यह दुआ पढ़ें :

اللهم رب الناس اذهب الباس واشف انت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما۔

इस दुआ को तीन बार पढें और साथ ही यह दुआ भी तीन बार पढ़ें:

بسم الله ارقیک والله یشفیک من کل داء یؤذیک ومن کل نفس اوعین حاسد الله یشفیک

यह तमाम दम करने के बाद दमशुदा पानी को मरीज के सर पर पुश्त की तरफ से तमाम पानी एक ही बार इस तरह बहायें कि मरीज का सारा जिस्म भीग जाये तो इंशा अल्लाह तआला मरीज को कामिल शिफा होगी।

बुरी नजर के इलाज की कुछ मिसालें

पहला नमूना : बच्चे ने दूध पीना छोड़ दिया

मैं एक जगह अपने रिश्तेदारों से मिलने गया तो उन्होंने एक बच्चे का जिक्र किया जो कि अपनी मां का दूध पीना छोड़ चुका था। हालांकि कुछ दिन पहले वोह बच्चा हसब मआमुल अपनी मां का दूध पी रहा था। मैंने उनसे कहा, उस बच्चे को लाओ। जब वोह उस बच्चे को मेरे सामने लाये तो मैंने उस बच्चे पर कुछ दुआयें और मअुजतेन पढ़कर दम किया और कहा, इस बच्चे को उसकी मां के पास ले जाओ। और जब वोह इस बच्चे को उसकी मां के पास ले गये और जब वापस आये तो मुझे खुशखबरी सुनाई कि बच्चा अपनी मां का दूध पीने लगा है। अलहम्दुलिल्लाह यह महज अल्लाह तआला के फजल का नतीजा है।

दूसरा नमूना : बुरी नजर की वजह से बच्चे ने बात करना छोड़ दी

मिडिल स्कूल का एक इन्तहाई जहीन और होनहार फसीह और बालिग बच्चा जिसका नाम इन्तहाई शौहरतयाब था और तमाम अहम तकरीबात में तकरीर किया करता था।

एक दिन उसकी बस्ती में किसी की वफात हो गई। यह बच्चा अपने घर वालों के साथ वहां ताजियत के लिए गया। तो हम्द व शना के बाद उसने इन्तहाई असर अंगेज तकरीर की। इसके बाद जब वोह घर आया तो गुंगा हो गया, यानी बातचीत करना छोड़ दी। उस बच्चे के बाप फौरन उसे इन्तहाई घबराहट की हालत में अस्पताल लेकर गया। मैंने जब उसे देखा तो पहचान गया। इसलिए कि मैं उसे मदरसे में दीनी निशात व हरकात की वजह से जानता था। मैंने उसके वालिद से तफसील जानना चाहा तो उसने तमाम किस्सा ज्यों का त्यों बयान किया और खामोश खड़ा रहा। मैं पहचान गया कि बच्चे को बुरी नजर लगी हुई है। मैंने मअुजतेन पढ़कर दम करके दिया और उसके बाप से कहा कि उस पानी को सात दिन तक इसी बच्चे को पिलाये और गुस्ल कराये और उसके बाद मेरे पास आये और जब सात दिनों के बाद वोह बच्चा मेरे पास आया तो अलहम्दुलिल्लाह वोह शिफायाब हो चुका था और हसब साबिक वोह

बातचीत कर रहा था। उसके बाद मैंने उस बच्चे को बुरी नजर से बचने के लिए सुबह व शाम की दुआयें सिखाई।

तीसरा नमूना : एक अजीब वाक्या

जहां तक इस वाक्ये का ताअल्लुक है तो यह हमारे अपने घरों का है। मुख्तसर किस्सा यों है कि एक आदमी बूढ़ी औरत हमारे यहां तशरीफ लाई। औरत मेरी बीवी के पास जाकर बैठ गई और मर्द मेरे पास आकर बैठ गया और अपने वाल्दा का किस्सा बयान करने लगा। इसके बाद मैंने उसकी वालदा को अपने पास बुलाया और उस पर कुछ दुआयें दम की और वापिस चले गये। इसके बाद मैं क्या देखता हूं कि छोटे छोटे सफेद रंग के कीड़े घर में हर जगह फैले हुए हैं। मैंने सोचा कि यह कीड़े कहां से आये हैं। मैं बड़ा हैरान था, मेरी बीवी ने झाड़ू से सफाई भी की लेकिन थोड़ी देर बाद फिर सारा घर कीड़ों से भर गया। मैंने अपनी बीवी से कहा कि सोचे आखिर यह सब क्या है? कीड़े सफाई करने के बाद फिर आखिर कहां से चले आ रहे हैं?

मैंने अपनी बीवी से कहा कि वोह बुढ़िया तुम से क्या कह रही थी तो उसने बताया कि वोह बुढ़िया हमारे घर का बड़ी बारीकीपन से जायजा ले रही थी। उसने कोई भी मुझ से बातचीत नहीं की। मैं समझ गया कि यह सब बुरी नजर की वजह से है। हालांकि हमारा घर निहायत ही सादा किस्म का है, शायद वोह बुढ़ी और किसी गांव की रहने वाली थी जिसने शहर कभी नहीं देखा होगा।

मुख्तसर यह कि मैंने एक बर्तन में पानी मंगवाया और उस पानी पर बुरी नजर के इजाले के लिए दुआयें पढ़कर दम किया और पानी अपने घर में झिड़क दिया। देखते ही देखते तमाम कीड़े गायब हो गये और तमाम घर अपनी असली हालत में आ गया।

तम्मत बिल खैर

जादू की हकीकत

(कुरआन व सुन्नत की रोशनी में)

और

इसका इलाज

हिन्दी तर्जुमा :

ऐजाज खान, सीकर

तालीफ :

वहीद बिन अब्दुल सलाम बाली (मिस्र)